राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

गौरवशाली भारत

दिल्ली से प्रकाशित

R.N.I. NO. DELHIN/2011/38334 वर्ष- 10, अंक- 306 पृष्ठ - 08, नई दिल्ली, बुधवार ,12 मई 2021, मूल्य रु. 1.50

केंद्र सरकार ने नियमों में छूट देना शुरू किया

नई दिल्ली, (एजेंसी)। देश में कोरोना की दूसरी लहर के बीच देश के 18 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में नए केस कम हो रहे हैं। इस वजह से केंद्र सरकार ने नियमों में छूट देना शुरू कर दिया है। सरकार ने मंगलवार को टेस्टिंग से जुड़े नियमों में कुछ बदलाव किए। इसके मुताबिक, अब एक से दूसरे राज्य में जाने से पहले आरटी पीसीआर टेस्ट कराना जरूरी नहीं होगा। मामले बढ़ने के साथ ही कई राज्यों में अपने यहां आने के लिए कोरोना टेस्ट की निगेटिव रिपोर्ट जरूरी कर दी थी। इसके अलावा नई गाइडलाइन के मुताबिक, अगर मरीज को 5 दिन से बुखार नहीं है तो उसे हॉस्पिटल से डिस्चार्ज करने से पहले भी आरटी पीसीआर टेस्ट करने की जरूरत नहीं होगी।

स्वास्थ्य मंत्रालय ने देश में कोरोना की स्थिति की भी जानकारी दी। इसके मुताबिक, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ़, बिहार, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, झारखंड, तेलंगाना, चंडीगढ़, लद्दाख, दमन और दीव, लक्षद्वीप और अंडमान-निकोबार में रोज मिल रहे नए मामलों में लगातार कमी आ रही है। हालांकि, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, पंजाब, असम, जम्मू-कश्मीर, गोवा, हिमाचल प्रदेश, पुडुचेरी, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, नगालैंड, और अरुणाचल प्रदेश में केस में बढ़ोतरी का ट्रेंड दिखाई दे रहा है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, देश में 13 राज्यों में एक लाख से ज्यादा एक्टिव केस हैं। 6 राज्यों में 50 हजार से एक लाख के बीच और 17 राज्यों में 50 हजार से कम एक्टिव केस है। देश में इस समय पॉजिटिविटी रेट 21 प्रतिशत है। 26 राज्यों में पॉजिटिविटी रेट 15 प्रतिशत से ज्यादा है। गोवा में यह सबसे ज्यादा 49.6 प्रतिशत है। पुडुचेरी, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, कर्नाटक और राजस्थान में पॉजिटिविटी 30 प्रतिशत से ज्यादा है। 6 राज्यों में यह रेट 5 से 15 प्रतिशत है। सिर्फ 4 राज्यों में 5 प्रतिशत से कम लोग संक्रमित मिल रहे हैं। आईसीएमआर के डीजी डॉ. बलराम भार्गव ने बताया कि 30 अप्रैल को देश में 19.45 लाख टेस्ट किए गए। ये पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा संख्या है। उन्होंने कहा कि सभी सरकारी और प्राइवेट हॉस्पिटल में रैपिड एंटीजन टेस्ट करने की इजाजत है। इसके लिए किसी से मान्यता लेने की जरूरत नहीं है। घर में टेस्ट के उपायों का पता लगाया जा रहा है।

सोमवार को 3 लाख 29 हजार 379 नए संक्रमितों की पहचान हुई, लेकिन 3.55 लाख संक्रमित ठीक हो गए। 62 दिन बाद ऐसा हुआ जब नए मरीजों से ज्यादा मरीजों ने महामारी को मात दी। इससे पहले 9 मार्च को 17,873 कोरोना पॉजिटिव मरीजों की पहचान हुई थी और 20,643 लोग ठीक हुए थे। यह भी राहत की खबर है कि सोमवार को मिले नए संक्रमितों की संख्या पिछले 15 दिन में सबसे कम है। इससे पहले 26 अप्रैल को 3.19 लाख केस सामने आए थे। पिछले 24 घंटे में 3,877 लोगों ने इस महामारी से जान गंवाई। इसके साथ ही एक्टिव केस में 30,412 की कमी हुई। इससे पहले 9 मार्च को एक्टिव केस में 2909 की कमी हुई थी।

भारत में कोरोना से मौत का आंकड़ा 2.5 लाख पार कर चुका है। देश में कोरोना से 12 मार्च 2020 को पहली मौत दर्ज हुई थी। उसके बाद 50 हजार का आंकड़ा पार करने में 156 दिन लगे थे। लेकिन आखिरी 50 हजार लोगों की मौत में महज 13 दिन में हो गई है। भारत में कोरोना से हुई मौतों में करीब 30.82 प्रतिशत मामले महाराष्ट्र के हैं। दिल्ली की हिस्सेदारी 7.86 प्रतिशत, कर्नाटक की 7.63 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश की 6.28 प्रतिशत और तमिलनाडु की 6.36 प्रतिशत है। बाकी 41.05त्न में अन्य सभी राज्य और केंद्रशासित प्रदेश शामिल हैं।

देश के 17 राज्यों में पूर्ण लॉकडाउन जैसी पाबंदियां हैं। इनमें हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, मिजोरम, गोवा और पुडुचेरी शामिल हैं। यहां पिछले लॉकडाउन जैसे ही कड़े प्रतिबंध लगाए गए हैं।

देश के 15 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में आंशिक लॉकडाउन है। यानी यहां पाबंदियां तो हैं, लेकिन छूट भी है। इनमें पंजाब, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, मेघालय, नगालैंड, असम, मणिपुर, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और गुजरात शामिल हैं।

संकट की घड़ी में कांग्रेस नेताओं के व्यवहार से दुखी हूं : नड्डा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कोरोना के दौरान वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं के व्यवहार को लेकर कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को पत्र लिखा है। चार पन्ने की चिट्ठी में नड्डा ने कहा कि महामारी और संकट की घड़ी में कांग्रेस नेताओं के व्यवहार से दुखी हूं, लेकिन हैरान नहीं हूं। नड्डा ने पत्र में लिखा कि आपकी पार्टी के कुछ नेता लोगों की मदद करने में सराहनीय काम कर रहे हैं। वहीं कुछ नेताओं के सराहनीय कार्यों पर पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की तरफ से फैलाई जा रही नेगेटिविटी से ग्रहण लग रहा है। जब भारत कोरोना महामारी के खिलाफ अत्यधिक साहस के साथ लड़ रहा है,उस समय में हर कोई चाहेगा कि कांग्रेस के नेता लोगों को गुमराह करना बंद करें। उन्होंने कहा कि लोगों में झूठा पैनिक पैदा करने का काम किया जा रहा है। इसके अलावा कांग्रेस नेता राजनीतिक विरोध के आधार पर अपना पक्ष रख रहे हैं।

नड्डा ने लिखा कि बीजेपी और एनडीए की सरकारों ने पहले ही यह घोषणा की है कि गरीब और वंचित लोगों को मुफ्त में वैक्सीन लगेगी। उन्होंने कहा कि मुझे पूरा यकीन है कि कांग्रेस सरकारें भी गरीबों के लिए भी ऐसा ही महसूस करेंगी। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या राज्यों की कांग्रेस सरकारें फ्री में वैक्सीन की इसी तरह की घोषणा करेंगी

नड्डा ने लिखा है, मुझे मीडिया के जरिए पता चला है कि आपने 1 नवंबर 2020 को मुझे एक चिट्ठी लिखी, हालांकि अभी तक मुझे ऐसी कोई चिट्ठी नहीं मिली है। मुझे लगता है कि आपने यह चिट्ठी सिर्फ मीडिया के लिए तैयार की होगी। इस मकसद सिर्फ यही नजर आता है कि यह पूरी तरह राजनीति के लिए था, न की चिट्ठी में उठाए गए मुद्दों के समाधान के लिए। बावजूद इसके मीडिया के जरिए पहुंची इस चिट्ठी का मैं आपको जवाब दे रहा हूं ताकि आप लोगों को गुमराह करने की आपकी कोशिश सफल न हो सके।

देवप्रयाग में बादल फटने से भारी क्षति

टिहरी गढ़वाल, 11 मई। टिहरी गढ़वाल तहसील देवप्रयाग क्षेत्रांतर्गत समय सांय लगभग 4.45 पर देवप्रयाग बाजार के ऊपर पहाड़ पर बादल फटने से देवप्रयाग बाजार के बीच शांता गदेरे में भारी मलबा एवं पानी आने से भारी क्षति हुई है। प्राथमिक दृष्टि से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस आपदा में नगर पालिका भवन में निर्मित आईटीआई देवप्रयाग, सीएससी सेंटर, इलेक्ट्रॉनिक/फर्नीचर आदि की दुकानें पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो गईं। देवप्रयाग बाजार को जोड़ने वाली पैदल पुलिया भी क्षतिग्रस्त हो गई। इस आपदा में श्री दुर्गा शर्मा के भवन पर निर्मित 05 दुकानें क्षतिग्रस्त हुई हैं। वहीं पुलिस प्रशासन थाना प्रभारी महिपाल सिंह रावत ने बताया कि जान माल का कोई नुकसान नहीं हुआ है।

कोरोना की तीसरी लहर की चपेट में बच्चे भी आ सकते हैं : गुलेरिया

नई दिल्ली, (एजेंसी)। देश इस वक्त कोरोना का प्रकोप झेल रहा है। अगर इस वक्त थोड़ी सी भी लापरवाही की गई तो देश को कोरोना की तीसरी लहर का सामना करना पड़ सकता है। दिल्ली एम्स निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया ने कहा कि देश में तीसरी लहर का परिणाम काफी गंभीर आ सकता है। इस बार बच्चे भी इस वायरस की चपेट में आ सकते हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए भारत में इस्तेमाल हो रहे दोनों टीकों का ट्रायल हो रहा है। कोवैक्सीन को 12 साल से अधिक उम्र के बच्चों को दिया जा सकता। हालांकि अगले कुछ दिनों के बाद इन सभी ट्रायल के डाटा हमारे सामने आ जाएंगे। रणदीप गुलेरिया ने बताया कि जल्द से जल्द अगर कोरोना की इस चेन को नहीं तोड़ा गया तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। जिस तरह से पहली लहर में बुजुर्ग और दूसरी में नौजवान अधिक प्रभावित हुए, ऐसे में हो सकता है कि तीसरी लहर में बच्चे इससे अधिक प्रभावित हों। फिलहाल जितना जल्दी हो सके हमें बच्चों पर हो रहे टीके के ट्रायल को जल्द खत्म कर उन्हें भी वैक्सीनेट कर देना चाहिए, ताकि वो कम से कम संख्या में संक्रमित होने से बच सकें। गुलेरिया के कहा कि इस समय हमारे सामने जो आंकड़े आ रहे हैं उसके मुताबिक इस बात की संभावना है कि कोरोना की दूसरी लहर से अगले 4 से 6 सप्ताह में देश को राहत मिल सकती है। 15 या 20 मई से दिल्ली और इसके आसपास के इलाकों में तेजी से मामले कम होंगे। बंगाल सहित पूर्वी राज्यों में अभी कुछ समय तक संक्रमण अधिक रहेगा। इन राज्यों के लोगों को कोरोना के नियमों का सख्ती से पालन करना होगा। लोग जितनी सावधानी बरतेंगे उतनी ही तेजी से इन राज्यों में कोरोना के मामले कम होंगे। ऐसे में लोग घर पर रहें और जरूरत पड़ने पर घर से बाहर निकलें वो भी मास्क पहनकर।

तिरुपति में ऑक्सीजन सप्लाई रुकने के कारण 11 लोगों की मौत

हैदराबाद, (एजेंसी)। आंध्र के तिरुपति में ऑक्सीजन सप्लाई रुकने के कारण 11 लोगों की मौत हो गई। कहा जा रहा है कि एसवीआरसआर शासकीय अस्पताल में आईसीयू में इलाज करा रहे कम से कम 13 मरीजों की हालत गंभीर बनी हुई है। घटना के कई दर्दनाक वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुए हैं। हालांकि, राज्य में ऑक्सीजन की कमी होने के चलते हुई मौतों का यह पहला मामला नहीं है। फिलहाल घटना पर सियासत गर्म है, अधिकारी सफाई देने में जुटे हैं। राज्य सरकार ने दावा किया है कि ऑक्सीजन सप्लाई केवल 5 से 10 मिनट के लिए प्रभावित हुई थी। चित्तूर जिलाधिकारी एम हरिनारायणन का कहना है कि ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर्स की सतर्कता से बड़ी त्रासदी टल गई। उन्होंने घटना पर दुख जताया है। 11 मरीजों की मौत पर हैरानी जाहिर करते हुए मुख्यमंत्री जगन रेड्डी ने हाई लेवल जांच के आदेश दिए हैं। साथ ही अधिकारियों से अलग-अलग अस्पतालों में ऑक्सीजन स्टॉक की जांच के लिए कहा है।

भारत के गठजोड़ वाले क्वॉड से चिढ़े चीन की बांग्लादेश को धमकी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान के गठजोड़ वाले क्वॉड से चीन की चिढ़ किसी से छिपी नहीं है। अब चीन ने बांग्लादेश को खुल्लम-खुल्ला यह धमकी दे दी है कि अगर ढाका ने इस गठजोड़ में शामिल होने का सोचा तो बीजिंग के साथ उसके संबंध खराब हो जाएंगे। बांग्लादेश में चीन के राजदूत ली जिमिंग ने ढाका में मीडिया से बातचीत के दौरान कहा कि अगर बांग्लादेश चार देशों के इस गठजोड़ में शामिल होगा तो इससे चीन के साथ उसके संबंधों को काफी नुकसान पहुंचेगा। ली ने कहा कि क्वॉड एक छोटे उद्देश्य के साथ बनाया गया भूराजनीतिक गुट है, जो चीन के खिलाफ काम कर रहे हैं।

सूत्रों के मुताबिक, ली ने यह कहा कि भले ही यह कहा गया है कि क्वॉड आर्थिक और सुरक्षा के मकसद से बनाया गया है लेकिन यह सच नहीं। असल में चीन के खिलाफ काम करने के लिए क्वॉड बनाया गया है। उन्होंने आगे कहा, जापान और अमेरिका ने साफ कहा है कि वे क्वॉड का हिस्सा सिर्फ चीन की वजह से बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसका हिस्सा बनने पर बांग्लादेश को कोई फायदा नहीं होगा। क्वॉड्रीलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग यानी क्वॉड जापान, ऑस्ट्रेलिया, भारत और अमेरिका के बीच एक बहुपक्षीय समझौता है। मूल तौर पर यह संगठन हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने को लेकर तैयार हुआ, ताकि समुद्री रास्तों से व्यापार आसान हो सके लेकिन अब ये व्यापार के साथ-साथ सैनिक बेस को मजबूती देने पर ज्यादा ध्यान दे रहा है ताकि शक्ति संतुलन बनाए रखा जा सके। चीन इस गुट से खासा परेशान रहता है। चीन को लगता है कि भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान मिलकर उसके खिलाफ रणनीतिक साजिश रच रहे हैं। इसकी वजह यह है कि संगठन दूसरे मुद्दों के साथ समुद्र में चीन की बढ़ती दादागिरी पर भी लगाम कसने की तैयारी में है। चीन इसे एशियाई नाटो के रूप में देख रहा है। चीन को लगता है कि क्वॉड देश चीन के आसपास के समुद्र में अपना वर्चस्व बढ़ाना चाहता है। इस गुट को चीन हमेशा से अमेरिका की साजिश मानता है। इससे भी ऊपर क्वॉड को चीन के बेल्ड ऐंड रोड इनिशिएटिव के विरोध के रूप में भी देखा जाता है।

गाजीपुर से बक्सर तक गंगा नदी से अब तक निकाले गए 200 से ज्यादा शव, केंद्र ने राज्य सरकार को दिए जांच के आदेश

लखनऊ/पटना, (एजेंसी)। बिहार के बक्सर में गंगा से शव मिलने के एक दिन बाद यूपी के बलिया और गाजीपुर से भी शव मिले हैं. जानकारी के अनुसार बक्सर, गाजीपुर और बलिया में गंगा से लगभग 200 शव निकाले गए हैं. अधिकारियों ने गंगा किनारे सभी शवों को गड्ढा कर दफनाया है. गाजीपुर से 17 और बलिया से 63 शव निकालकर उन्हें दफनाया गया है. वहीं केंद्र ने राज्य सरकार को मामले में जांच के आदेश दिए हैं.

उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले में यमुना नदी के बाद अब बलिया और गाजीपुर जिलों में गंगा नदी के किनारे पर कई शव मिलने से सनसनी फैल गई और दहशतजदा लोगों द्वारा संदेह भी जताया जा रहा है कि यह कोविड-19 से जान गंवाने वालों की लाशें हैं. बलिया की जिलाधिकारी अदिति सिंह ने एक बयान जारी कर कहा है कि नरही थाना क्षेत्र के बलिया-बक्सर पुल के नीचे गंगा नदी में सोमवार को कुछ पुराने अज्ञात क्षत-विक्षत शव देखे गए. उन्होंने कहा कि उपजिलाधिकारी (सदर) और क्षेत्राधिकारी (सदर) द्वारा इसकी जांच की गई और सभी शवों का उचित तरीके से गंगा नदी के तट पर पुलिस और प्रशासन की उपस्थिति में अंतिम संस्कार कर दिया गया है.

कहां से आ रहे हैं शव ?

जिलाधिकारी के मुताबिक शव कहां से आए हैं इस संबंध में जांच की जा रही है. प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार बिहार की सीमा पर स्थित नरही थाना क्षेत्र के गंगा नदी के तट पर सोमवार शाम से शव मिलने शुरू हुए. प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार उजियार घाट, कुल्हड़िया घाट और भरौली घाट पर कुल 45 शव मिले हैं, हालांकि प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी संख्या की पुष्टि नहीं कर रहे हैं.

शवों की संख्या को लेकर नहीं दी जा रही जानकारी- सूचना विभाग द्वारा जारी बयान में जिलाधिकारी अदिति सिंह ने शवों की संख्या की जानकारी नहीं दी है. पुलिस अधीक्षक डॉ विपिन ताडा ने बताया कि उन्हें नही मालूम कि कुल कितने शव मिले हैं. उन्होंने बताया कि पुराने शव हैं और बिहार में शव को प्रवाहित करने की परंपरा है. घटनास्थल पर पहुंचे एक अधिकारी के अनुसार नदी तट पर हवा का रुख देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि ये शव बिहार की तरफ से बहकर आए हैं. जिला प्रशासन के एक अधिकारी ने बताया कि बिहार में गरीब लोग ऑक्सीजन लेवल कम होने और कोरोना से मौत हो जाने के बाद आर्थिक तंगी के कारण शवों को नदी में प्रवाहित कर देते हैं. प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार शव मिलने का सिलसिला अभी भी जारी है.

हरकत में आया प्रशासन

गाजीपुर से मिली खबर के मुताबिक जिले के गहमर, बारा और बिहार के बक्सर जिला के चौसा में गंगा नदी में भारी संख्या में शव देखे गए हैं. गाजीपुर जिले से होती हुई गंगा नदी बिहार में जहां जाकर मिलती है, वहां उत्तर प्रदेश के गहमर, बारा गांव हैं जबकि बिहार प्रदेश के चौसा प्रखंड के गांव में गंगा प्रवेश करती है. प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक चौसा घाट पर तीन दर्जन से अधिक शव गंगा में किनारे लग जाने के बाद बदबू फैलने लगे तो बक्सर के जिलाधिकारी के आदेश पर चौसा प्रखंड पदाधिकारी अपने दल बल सहित गाजीपुर के सेवराई तहसील मुख्यालय पर आ पहुंचे और इसके बाद गाजीपुर का प्रशासन भी हरकत में आ गया. उत्तर प्रदेश और बिहार के अधिकारियों ने संयुक्त रूप से गंगा किनारे मौका मुआयना किया.

कार्टून

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल नई दिल्ली में COVID-19 टीकाकरण अभियानों पर मीडिया को संबोधित करते हैं।

मैक्सको सिटी में मार्च के दौरान लापता हुए लोगों को याद करते हुए एक बैनर में मुआवजे की मांग करते हुए लोग।

डब्लूएचओ ने भारत के स्ट्रेन को वैरिएंट ऑफ कंसर्न घोषित किया

लंदन, (एजेंसी)। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना की दूसरी लहर में भारत में फैल रहे स्ट्रेन को वैश्विक स्तर पर चिंताजनक (वैरिएंट ऑफ कंसर्न) बताया है। उसका कहना है कि भारत में सबसे पहले अक्टूबर में पाया गया यह वैरिएंट बी-1617 ज्यादा संक्रामक लग रहा है और यह आसानी से फैल सकता है। कोरोना पर डब्लूएचओ की प्रमुख मारिया वैन केरखोव के मुताबिक एक छोटे सैंपल साइज पर की गई लैब स्टडी में सामने आया है कि इस वैरिएंट (बी-1617) पर एंटीबॉडीज का कम असर हो रहा है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि इस वैरिएंट में वैक्सीन के प्रति ज्यादा प्रतिरोधक क्षमता है। केरखोव ने बयान में कहा कि मौजूदा डेटा से पता चलता है कि कोरोना की सभी वैक्सीन बीमारी को रोकने और बी-1617 वैरिएंट से संक्रमित लोगों की जान बचाने में असरदार हैं। साथ ही कहा कि इस वैरिएंट के बारे में ज्यादा जानकारी मंगलवार को दी जाएगी। चीफ साइंटिस्ट सौम्या स्वामीनाथन ने भी कहा है कि मौजूदा वैरिएंट के खिलाफ वैक्सीन और जांच कारगर है। साथ ही कहा कि इलाज भी पहले वाला ही दिया जा रहा है। इसलिए लोगों को इसमें बदलाव की जरूरत नहीं है, बल्कि उन्हें आगे आकर वैक्सीन लगवानी चाहिए। ब्रिटेन, ब्राजील और साउथ अफ्रीका के बाद भारत चौथा देश है जहां फैल रहे कोरोना वैरिएंट को डब्लूएचओ ने कंसर्न कैटेगरी में शामिल किया है। केरखोव का कहना है कि आने वाले समय में दुनिया भर में वैरिएंट ऑफ कंसर्न देखने को मिलेगा। इसलिए हमें संक्रमण रोकने की ज्यादा से ज्यादा कोशिश करनी चाहिए।

आंकड़ों पर भी सवाल उठाए

चीफ साइंटिस्ट सौम्या स्वामीनाथन ने सोमवार को कहा कि भारत में संक्रमण की दर और मौतें चिंताजनक हैं। स्वामीनाथन ने कहा कि इस वक्त भारत और साउथ-ईस्ट के दूसरे देशों में कोरोना के रोज आ रहे केसों और मौतों को लेकर स्थिति चिंताजनक है। यहां डेटा भी कमतर आंके गए हैं। हकीकत में दुनिया के सभी देशों ने कोरोना संक्रमितों और इससे होने वाली मौतों के आंकड़े कम बताए हैं। सरकारों को वास्तविक आंकड़े बताने की कोशिशें बढ़ानी चाहिए।

कोरोना वायरस को जैविक हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने वाला था चीन

बीजिंग, (एजेंसी)। कोरोना के जैविक हथियार के तौर पर इस्तेमाल करके के खुलासे से बौखलाया चीन ने सफाई पेश की है।

बीजिंग ने दावों को झूठा बताकर कहा है, कि उसकी छवि खराब करने की कोशिश की जा रही है और इसके पीछे मुख्य रूप से अमेरिका का हाथ है। बता दें कि ऑस्ट्रेलियाई मीडिया ने रिपोर्ट में दावा किया था कि चीन 2015 से ही कोरोना वायरस पर शोध कर रहा था। चीन में मंशा जैविक हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने की थी।

इस पर चीन की विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता हुआ चनयिंग ने खुलासे पर प्रतिक्रिया देकर कहा कि मैंने रिपोर्ट देखी है। कुछ लोग चीन को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन स्पष्ट है कि तथ्यों का गलत तरीके से प्रयोग किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि चीन अपनी प्रयोगशाला में सुरक्षा का पूरा ध्यान रखता है। यह केवल हमारी छवि खराब करने की कोशिश है।

रिपोर्ट में साफ तौर पर कहा गया है कि चीन पांच साल पहले यानी 2015 से ही कोरोना वायरस पर रिसर्च कर रहा था। वहीं, अमेरिकी विदेश मंत्रालय को चीन के सैन्य विज्ञानियों और चिकित्सा अधिकारियों का लिखा दस्तावेज मिलने की बात भी कही जा रही है, जिसमें वायरस को जैविक हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की बात कही गई है।

यह खुलासा चीन के रिसर्च पेपर के आधार पर किया है। रिसर्च पेपर में कहा गया है कि चीन 2015 से सार्स वायरस की मदद से जैविक हथियार बनाने की कोशिश कर रहा था।

न्यूयॉर्क में ट्रकों में स्टोर हैं कोरोना मरीजों के 750 शव

न्यूयॉर्क, (एजेंसी)। दुनिया में कोरोना वायरस के कारण मरने वाले लोगों के अंतिम संस्कार से जुड़ी कई दुखद खबरें आ रही हैं। कहीं मृतक को दो गज जमीन नहीं मिली तो कहीं चिताएं सड़क पर जलानी पड़ीं, तो कहीं अपनों ने ही अंतिम संस्कार करने से इनकार कर दिया। अमेरिका से भी कोविड-19 मरीजों के शवों को लेकर एक चौंकाने वाली खबर आई है। यहां कई मरीजों के शव 1 साल से फ्रीजर ट्रकों में रखे हुए हैं और दफन किए जाने का इंतजार कर रहे हैं। पिछले साल अमेरिका में जब कोरोना वायरस पीक पर था तब यह खबर सामने आई थी कि न्यूयॉर्क में लोगों की बेतहाशा मौत के बाद प्रशासन को कोविड मरीजों के शवों को फ्रीजर ट्रक में रखना पड़ा था।

स्थानीय मीडिया की खबरों के मुताबिक इन शवों को ट्रकों में रखे हुए एक साल हो गया है और इन्हें अब तक दफन नहीं किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, स्थानीय प्रशासन ने स्वीकार किया है कि करीब 750 शवों को दफन करना बाकी है। अब इन शवों को दफन करने का काम शुरू किया जा रहा है। न्यूयॉर्क शहर में हार्ट आइसलैंड नाम का कब्रिस्तान है। यह यहां का सबसे बड़ा कब्रिस्तान है और यहां गरीबों या लावारिस शवों को दफनाया जाता है। ट्रकों में रखे इन शवों को भी यहीं दफनाया जाएगा। फिलहाल स्थानीय प्रशासन इन मृतकों के परिजनों से संपर्क करने की कोशिश कर रहा है। स्थानीय अधिकारियों के मुताबिक, पिछले साल मार्च-अप्रैल में न्यूयॉर्क में कोरोना वायरस बुरी तरह कहर ढा रहा था। तब ऐसे शवों को स्टोर कर दिया गया था जिनके परिवार अपने परिजनों को सही तरीके से विदाई देना चाहते थे। दुनिया में कोरोना की सबसे बुरी मार अमेरिका ने ही झेली है। यहां 6 लाख मौतें दर्ज हुईं हैं और अब भी 64 लाख एक्टिव केस हैं। हालांकि अब अमेरिका इससे उबर रहा है।

अफगानिस्तान में चार साल में हवाई हमलों में गई 1600 बच्चों की जान

काबुल, (एजेंसी)। दशकों से गृहयुद्ध की विभीषिका झेल रहा अफगानिस्तान बच्चों के लिए कब्रगाह बनता जा रहा है। ताजा शोध में पता चला है, कि पिछले 5 साल में हवाई हमलों में मारे गए कुल लोगों में 40 फीसदी बच्चे हैं। जारी आंकड़े में कहा गया है कि वर्ष 2016 से 2020 के बीच में हुए हवाई हमले में 1598 बच्चे मारे गए या घायल हो गए। यह रिपोर्ट उस समय पर आई है, जब काबुल में बालिका विद्यालय में किए गए भीषण बम धमाके में 50 लोग मारे गए हैं। गृह मंत्रालय ने बताया कि मरने वालों में अधिकतर 11 से 15 साल की लड़कियां हैं। पीड़ित परिजनों ने रविवार को अपने प्रियजनों को सुपुर्दे खाक कर दिया।

गृह मंत्रालय के प्रवक्ता तारिक अरियान ने बताया कि हमले में घायलों की संख्या भी 100 के पार हो गई है। सेव द चिल्ड्रेन इंटरनैशनल संस्था की अफगानिस्तान के डायरेक्टर क्रिस न्यामंडी ने कहा, दुखद, ये आंकड़े आश्चर्य में नहीं डालते हैं। अफगानिस्तान पिछले कई सालों से बच्चों के लिए बेहद खतरनाक रहा है।

अफगानिस्तान से इस साल अमेरिकी सेना हट रही है और संस्था के आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2017 से लेकर वर्ष 2019 के बीच में अंतरराष्ट्रीय गठबंधन ने अपने हमलों की संख्या को 247 के मुकाबले तीन गुना करते हुए 757 तक पहुंचा दिया। संयुक्त राष्ट्र ने इन हमलों पर चिंता जाहिर की थी लेकिन किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। न्यामंडी ने कहा कि पिछले 14 साल से हर दिन अफगानिस्तान में 5 बच्चे या तो मारे जाते हैं या घायल हो जाते हैं। एक्शन ऑन आर्म्ड वाइलेंस के कार्यकारी निदेशक इअइन ओवेर्टन ने कहा कि अमेरिका ने वर्ष 2018-19 में इतने ज्यादा बम बरसाए जितना उसने वर्ष 2011 में भी नहीं गिराए थे जब अमेरिकी अभियान चरम पर था। इस बमबारी की वजह से अफगानिस्तान बच्चों के लिए सबसे खतरनाक साल रहा। इस बीच काबुल में बालिका विद्यालय में किए गए भीषण बम धमाके में मरने वालों की संख्या बढ़कर 50 हो गई है। गृह मंत्रालय ने बताया कि मरने वालों में अधिकतर 11 से 15 साल की लड़कियां हैं। शनिवार के इस हमले में घायलों की संख्या भी 100 के पार हो गई है।

यूएई ने पाकिस्तान समेत चार देशों पर लगाया ट्रैवल बैन

दुबई, (एजेंसी)। कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों को देखते हुए संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) सिविल एविएशन अथॉरिटी ने चार एशियाई देशों के नागरिकों के अपने यहां आने पर रोक लगा दी। प्रतिबंधित इसमें पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका शामिल हैं। हालांकि, भारत को इस लिस्ट में शामिल नहीं किया गया है। यह ट्रैवल बैन 12 मई से लागू होगा। बयान में यह नहीं बताया गया है कि बैन कब तक जारी रहेगा। यूएई ने इसी महीने की शुरूआत में इशारा किया था कि वो संक्रमण रोकने के लिए कुछ सख्त कदम उठा सकता है। पाकिस्तान के लिए यूएई का फैसला दोहरे झटके की तरह है। करीब 6 महीने पहले यूएई ने पाकिस्तानियों के वर्क वीजा और परमिट रद्द करना शुरू किया था। इसके बाद से अब तक नए वर्क वीजा जारी नहीं किए गए हैं। अब ट्रैवल बैन भी लगा दिया गया है। यूएई को लगता है कि पाकिस्तान में वैक्सीनेशन की रफ्तार न के बराबर है और यहां के लोग यूएई के हालात बिगाड़ सकते हैं। पाकिस्तान और बांग्लादेश से ज्यादातर मजदूर यहां आते हैं। पाकिस्तान सरकार खुद मान रही है कि ईद के पहले बाजारों में बेतहाशा भीड़ बढ़ रही है और लोग सावधानी नहीं रख रहे। इससे निपटने के लिए सेना को सड़कों पर उतार दिया है। इसके बावजूद हर दिन करीब 4 हजार मामले सामने आ रहे हैं। फिलहाल, ट्रैवल बैन एकतरफा रखा गया है। यूएई से इन देशों के लोग वापस अपने देश जा सकेंगे लेकिन इसके लिए भी सख्त नियम तय किए गए हैं। इन देशों में मौजूद यूएओई डिप्लोमैटिक मिशन, नागरिक और बिजनेस जेट्स आ सकेंगे। इन लोगों को भी यात्रा के लिए आरटीपीसीआर टेस्ट रिपोर्ट सबमिट करनी होगी और यह 48 घंटे से ज्यादा पुरानी नहीं होनी चाहिए।

वैज्ञानिकों का दावा–मंगल ग्रह पर मिला मशरूम

वाशिंगटन, (एजेंसी)। चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंस के माइक्रोबायोलॉजिस्ट डॉक्टर ज़िनली वी, हार्वर्ड स्मिथसोनियन के एस्ट्रोफिजिसिस्ट डॉ रुडोल्फ श्क्लिड और डॉक्टर ग्रैबियाल जोसेफ ने दावा किया है कि उन्हें मंगल ग्रह पर मशरूम मिले हैं। उन्होंने ये दावा नासा के क्यूरोसिटी रोवर द्वारा जारी की गई तस्वीरों पर रिसर्च करने के बाद किया है। गौरतलब है कि क्यूरोसिटी रोवर एक ऐसा डिवाइस है जिसे दूसरे ग्रहों की सतह पर चलाकर रिसर्च की जाती है। बता दें कि 6 अगस्त 2012 को मंगल ग्रह की सतह पर पहुंच गया था और ये अब भी मंगल ग्रह पर एक्टिव है और लगातार नासा को महत्वपूर्ण तस्वीरें और रिसर्च सामग्री उपलब्ध करा रहा है।

दरअसल, इन तस्वीरों में मंगल ग्रह के उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्ध पर काले मकड़ियों जैसे आकार वाले चैनल्स को देखा जा सकता है। हालांकि नासा का कहना है कि ये कार्बन डाइऑक्साइड आइस के हिमद्रवण के चलते हुआ है लेकिन इन वैज्ञानिकों की टीम का कहना है कि ये फंगी, काई और शैवाल की कॉलोनी हैं जिससे साफ होता है कि मंगल ग्रह पर जीवन की संभावना है। इन वैज्ञानिकों का दावा है कि ये मशरुम कुछ दिनों, हफ्तों और महीनों के अंतराल में गायब होते हैं और वापस आ जाते हैं। अप्रैल 2020 में भी आर्मस्ट्रॉन्ग और जोसेफ ने एक ऐसी ही रिसर्च गेट रिलीज की थी जिसमें दावा किया गया था कि मंगल ग्रह पर मशरूम उगते हैं। हालांकि इन तीनों वैज्ञानिकों के दावों को लेकर साइंटिफिक समुदाय बहुत ज्यादा उत्साहित नहीं है.इसमें इन वैज्ञानिकों की विवादास्पद छवि भी शामिल है।

दरअसल साल 2014 में जोसेफ ने नासा पर केस किया था और कहा था कि वे एक बायोलॉजिकल जन्तु पर रिसर्च नहीं कर रहे हैं जो उन्होंने ऑपरचूनिटी रोवर की तस्वीरों में देखा है। हालांकि बाद में ये साफ हो गया था कि वो कोई जन्तु नहीं बल्कि चट्टान थी। गौरतलब है कि मंगल ग्रह कई मायनों में पृथ्वी से मिलता जुलता है और इंसानों के लिए हमेशा से कौतूहल का विषय रहा है। पृथ्वी की तुलना में मंगल ग्रह पर 38 प्रतिशत ग्रैविटी है। मंगल ग्रह पर साल में 687 दिन होते हैं। वही मंगल ग्रह पर एक दिन 24 घंटे और 40 मिनटों का होता है। हालांकि इस ग्रह की सतह पर कार्बन डाइऑक्साइड की बहुलता और पानी की कमी ने जीवन के इकोसिस्टम को चुनौतीपूर्ण बनाया है।

हालांकि अगर चुनौतियों की बात की जाए तो इस ग्रह पर कार्बन डायऑक्साइड और मीथेन गैस काफी ज्यादा मात्रा में है। इसके अलावा इस ग्रह की मिट्टी में भी कुछ ऐसे कंपाउंड्स हैं जो जीवन को मुश्किल बनाते हैं। मंगल ग्रह पर पानी तो मौजूद है लेकिन वो इस ग्रह की सतह के नीचे दबा हुआ है। मालूम हो कि पिछले कुछ समय से मंगल ग्रह लगातार सुर्खियों में छाया हुआ है। नासा के अलावा चीन और अमेरिका जैसे देश मंगल ग्रह पर लगातार मिशन भेज रहे हैं। एलन मस्क कह चुके हैं कि अगले पांच सालों में मंगल ग्रह पर इंसानों को भेजना चाहते हैं। अब इस मंगल ग्रह को लेकर कुछ वैज्ञानिकों ने बड़ा दावा किया है।

ताइवान को डब्यूएचओ की बैठक में बुलाने की अमेरिकी अपील पर भड़का चीन

बीजिंग, (एजेंसी)। अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन द्वारा विश्व स्वास्थ्य संगठन से उसकी इस महीने होने वाली बैठक में ताइवान को बुलाए जाने के अनुरोध पर भड़के चीन ने सोमवार को इस अपील की निंदा की। ताइवान को चीन अपने देश का हिस्सा मानता है। ब्लिंकन द्वारा शुक्रवार को जारी बयान में वैसी ही अपील की गयी थी, जैसे इस महीने लंदन में जी7 के विदेश मंत्रियों ने संयुक्त अपील के जरिए की थी। इन बयानों से चीन की कम्युनिस्ट सरकार बहुत नाराज है।

चीन सरकार का मानना है कि ताइवान उसका हिस्सा है और उसे स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में विदेशों से संबंध रखने और वैश्विक संगठनों का हिस्सा बनने का अधिकार नहीं है। चीन के विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता हुआ चुनयिंग ने कहा कि ब्लिंकन की अपील एक चीन की नीति और अमेरिका-चीन संयुक्त घोषणापत्र का गंभीर उल्लंघन है। उन्होंने कहा, चीन इसकी कड़ाई से भर्त्सना करता है और इसे खारिज करता है। गृह युद्ध के बाद 1949 में ताइवान चीन से अलग हो गया था। दोनों देशों के बीच व्यापार संबंध बहुत अच्छे हैं, लेकिन कोई आधिकारिक संबंध नहीं है।

यरूसलम में इजरायली पुलिस एक फिलिस्तीनी प्रदर्शनकारी को पकड़ती हुई।

न्यूजीलैंड में हुई चाकूबाजी के मामले में पुलिस ने एक संदिग्ध को पकड़ा।

अंतरिक्ष से लौटी वाइन, कीमत और स्वाद दोनों बदले

पेरिस, (एजेंसी)। एक बोतल रेड वाइन को नवंबर 2019 में अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन पर भेजा गया था, ताकि ये वहां पर धरती के गुरुत्वाकर्षण से दूर रखी जा सके। यह पता किया जा सके कि इसका क्या असर होता है। अंतरिक्ष में 14 महीने बिताने के बाद अब रेड वाइन की बोतल बिक्री के लिए तैयार है। धरती पर लौटने के बाद अब इस वाइन का स्वाद इसकी असली उम्र से ज्यादा पुरानी लग रही है। आमतौर इस रेड वाइन की कीमत 6000 डॉलर्स यानी 4.39 लाख रुपए है। लेकिन अंतरिक्ष से लौटने के बाद इसे खरीदने के लिए आपको करोड़ों रुपए खर्च करने पड़ सकते हैं। इस रेड वाइन का नाम है पेट्रस 2002 मर्लोट। इसे फ्रांस के बोर्दो इलाके के अंगूरों से बनाया गया है। इस स्पेस वाइन की 12 बोतलें अंतरिक्ष में जानी थीं। फिलहाल जो बोतल धरती पर लौटी है, उसने अंतरिक्ष स्टेशन पर 438 दिन बिताए हैं। अच्छी बात ये है कि इस दौरान स्पेस स्टेशन पर मौजूद किसी भी एस्ट्रोनॉट ने इन बोतलों की वाइन को पिया नहीं। तारीफ करनी पड़ेगी उनकी धैर्य की। पेट्रस 2002 मर्लोट की बोतल ने धरती के कई चक्कर लगाए। जाते समय भी और आते समय भी। इस दौरान इसने माइक्रोग्रैविटी और कॉस्मिक रेडिएशन का सामना किया। यह 14 जनवरी 2021 को वापस धरती पर लाई गई। इसे लाने के लिए स्पेसएक्स ड्रैगन कैप्सूल की मदद ली गई थी। आप पेट्रस 2002 मर्लोट की बोतल अब क्रिस्टीज के नीलामी घर से बोली लगाकर खरीद सकते हैं। लेकिन इसके लिए आपका करोड़पति होना जरूरी है। क्योंकि 4.39 लाख की एक बोतल की नीलामी की शुरूआती कीमत 1 मिलियन डॉलर्स यानी 7.32 करोड़ रुपए रखी गई है। यह बिक्री क्रिस्टीज नीलामी घर की वेबसाइट से ऑनलाइन होगी। हालांकि इसकी नीलामी की तारीख अभी तय नहीं की गई है। वैज्ञानिकों ने जब धरती पर फर्मेंटेड पेट्रस 2002 मर्लोट की तुलना अंतरिक्ष स्टेशन की पेट्रस से की तो उन्हें स्वाद में काफी अंतर दिखाई दिया। यह वाइन वैसे तो 20 साल पुरानी है लेकिन अंतरिक्ष वाली वाइन का स्वाद इससे ज्यादा पुरानी वाइन का लगता है। यानी अब पेट्रस 2002 मर्लोट वाइन ज्यादा पुरानी होने की वजह से ज्यादा कीमती हो गई है आपको बता दें कि अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन में फ्रांस की बेहतरीन और उच्च गुणवत्ता वाली बोर्दो रेड वाइन 2 नवंबर 2019 को पहुंचाई गई थी। यह शराब अंतरिक्षयात्रियों के पीने के लिए नहीं थी। पहले बताया गया था कि अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंचाई गईं रेड वाइन की ये 12 बोतलें एक साल तक वहां रखी जाएंगी। वैज्ञानिक यह पता करना चाहते हैं कि अंतरिक्ष में रेड वाइन की बोतलों पर क्या असर पड़ता है अगले तीन सालों तक छह अंतरिक्ष मिशन में ये शराब की बोतलें भेजी जाएंगी। ताकि विस्तृत अध्ययन किया जा सकेगा। वैज्ञानिक यह अध्ययन करेंगे कि एक साल तक इन बोतलों को अंतरिक्ष स्टेशन में शून्य गुरुत्वाकर्षण यानी भारहीनता और अंतरिक्षीय विकिरण के बीच रखने पर क्या होता है क्या उनके स्वाद में बदलाव आता है क्या वे खराब हो जाएंगी या उनकी गुणवत्ता में और इजाफा होता है। अगर इन बोतलों में भरी शराब के स्वाद और गुणवत्ता में इजाफा होता है तो शराब उद्योग में एक नई क्रांति आएगी। साथ ही आपको अंतरिक्ष में रखी गई शराब की बोतल पीने को मिल सकती है। शनिवार यानी 2 नवंबर को वर्जीनिया से नॉर्थरोप ग्रुमेन के स्पेस कैप्सूल से इन बोतलों को अंतरिक्ष स्टेशन के लिए रवाना किया गया था। इन बोतलों को एक खास धातु के डिब्बे में बंद करके अंतरिक्ष स्टेशन पर भेजा गया था, ताकि वे रास्ते में टूटे नहीं। रेड वाइन पर चल रहे अध्ययन में फ्रांस की बोर्दो यूनिवर्सिटी, जर्मनी स्थित बेवेरिया यूनिवर्सटी और लग्जमबर्ग स्थित एक स्टार्टअप स्पेस कार्गो अनलिमिटेड शामिल हैं। एर्लांगेन-न्यूरेमबर्ग यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर और इस अध्ययन से जुड़े माइकल लेबर्ट ने बताया कि इस शराब के बनाने में यीस्ट एवं जीवाणुओं दोनों का इस्तेमाल किया गया है। इसमें विभिन्न प्रकार की रासायनिक प्रक्रियाएं शामिल हैं। इसीलिए इसका अंतरिक्ष में अध्ययन सही है। अंतरिक्ष में रखी गई शराब की तुलना पृथ्वी पर इतने ही समय के लिए रखी गई बोर्दो की शराब से की जाएगी। ताकि, यह पता चल सके कि पृथ्वी पर रखी शराब बेहतर है या अंतरिक्ष में रखी गई।

अब दिल्ली में आईसीयू और ऑक्सीजन के बेड की कमी नहीं है : केजरीवाल

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली में चल रहे वैक्सीनेशन को लेकर आज एक महत्वपूर्ण प्रेस कॉन्फ्रेंस की। सीएम ने कहा कि हमने पिछले कुछ दिनों में ऑक्सीजन के बेड खूब बढ़ाएं। कल ही जीटीबी हॉस्पिटल के सामने 500 नए आईसीयू के बेड चालू किए हैं। अब दिल्ली में आईसीयू और ऑक्सीजन के बेड की कमी नहीं है। दिल्ली में वैक्सीनेशन पूरे जोर-शोर से चालू हो गया है। लोगों में वैक्सीनेशन को लेकर खूब उत्साह है, मैंने खुद देखा है। दिल्ली सरकार के जिन स्कूलों में वैक्सीनेशन हो रहा है, मैं उनमें से कई स्कूलों में गया और लोगों से बात की। लोग बहुत खुश हैं और अच्छे से अपना वैक्सीनेशन करवा रहे हैं। मैं अपने स्कूल स्टाफ और फ्रंटलाइन वर्कर्स का धन्यवाद करना चाहता हूं, जो वैक्सीनेशन में लगे हुए हैं। सीएम केजरीवाल ने कहा कि अभी हम सवा लाख रोज वैक्सीन लगा रहे हैं। इसको जल्दी हम रोज 3 लाख से अधिक लोगों को वैक्सीन लगाना शुरू कर देंगे। हमारा लक्ष्य है कि आने वाले तीन महीने में सभी दिल्ली निवासियों को वैक्सीन लगा दिया जाए। लेकिन इसमें एक बड़ी समस्या आ रही है, वह है वैक्सीन की कमी की। दिल्ली में हमारे पास अब केवल कुछ दिन की ही वैक्सीन बची है और यह समस्या देशव्यापी है। पूरे देश में इस वक्त वैक्सीन की भारी कमी हो रही है। कुछ राज्य तो ऐसे हैं, जहां वैक्सीन न होने के कारण अभी तक वहां वैक्सीनेशन शायद शुरू भी नहीं हो पाया है। वैक्सीन की कमी देश के सामने इस वक्त बहुत बड़ी चुनौती बन गई है। आज केवल दो कंपनियां वैक्सीन बना रही हैं। यह दोनों कंपनियां मिल कर महीने में केवल 5-7 करोड़ वैक्सीन ही बनाती हैं। इस तरह, तो हमें देश के हर व्यक्ति को वैक्सीन लगाने में दो साल से ज्यादा समय लग जाएगा। तब तक तो कोविड-19 की पता नहीं कितनी लहरें आ जाएंगी और कितनी बबार्दी हो जाएगी इसलिए जरूरी है कि हम भारत में वैक्सीन का उत्पादन युद्ध स्तर पर बढ़ाएं और देश के हर नागरिक को अगले कुछ महीने में वैक्सीन लगाने की राष्ट्रीय योजना बनाएं। जब तक हर भारतीय को वैक्सीन नहीं लगती है, तब तक यह जंग जीती नहीं जा सकती।

सीएम केजरीवाल ने कहा कि मैं आज एक सुझाव देना चाहता हूं। वैक्सीन बनाने का काम केवल दो कंपनियां न करें, बल्कि कई और कंपनियों को वैक्सीन बनाने में लगाया जाए। केंद्र सरकार इन दोनों कंपनियों से वैक्सीन बनाने का फामूर्ला ले ले और उन सभी कंपनियों को दे दे, जो सुरक्षित तरीके से वैक्सीन बना सकती हैं। ऐसे कठिन समय में केंद्र सरकार के पास शक्ति है कि वह यह कर सकती है। वैक्सीन बनाने का फामूर्ला सार्वजनिक करके उन कंपनियों को दे सकती है, जो वैक्सीन बनाना चाहती हैं। यह सुनिश्चित किया जाए कि भारत में जो भी प्लांट वैक्सीन बनाने में सक्षम हैं, उन सब में वैक्सीन का उत्पादन होना चाहिए और हर भारतवासी को वैक्सीन लगनी चाहिए। यही एक तरीका है, जिसके द्वारा हम जल्दी से जल्दी सभी भारतीयों को वैक्सीन लगा पाएंगे।

नई दिल्ली में मंगलवार को भाजपा सांसद श्रीमती मीनाक्षी लेखी पार्टी कार्यालय में एक प्रेस कान्फ्रेंस को संबोधित करती हुई।

दिल्ली में कहीं कोरोना से तो नहीं हुई 13 कुत्तों की मौत, 7 मिले गायब; पीएम रिपोर्ट से होगा खुलासा

नई दिल्ली। दक्षिण दिल्ली के महरौली इलाके में दर्जनभर से अधिक कुत्तों की हुई संदिग्ध हालात में मौत ने लोगों के होश उड़ा दिए हैं। जागरण संवाददाता से मिली जानकारी के मुताबिक, पिछले चार-पांच दिन के दौरान इलाके में संदिग्ध हालात में 10 से अधिक कुत्तों की मौत हो चुकी है। इस बीच सोमवार को भी तीन और कुत्तों की मौत हो गई। कमाली-जमाली पार्क में दर्जनों कुत्तों को बीते कई वर्ष से खाना खिला रहीं छवि कहती हैं कि पार्क में वे जब भी आती थीं तो सारे कुत्ते आ जाते थे, लेकिन इस एक सप्ताह के दौरान यहां कुत्तों की लगातार मौत हो रही है।

छवि ने एक और हैरान करने वाली बात बताई है। उनका कहना है कि वह अब तक 10 कुत्तों के शव तो वे खुद देख चुकी हैं, जबकि सात कुत्ते गायब हैं। उन्होंने बताया कि पहले कुत्तों के मुंह से झाग आता है फिर वे मुंह, आंख व कान को पंजों से रगड़ना शुरू करते हैं और लहूलुहान हो जाते हैं। थोड़ी देर में तड़प-तड़प कर उनकी मौत हो जाती है। उनके कॉल करने पर दो बार पर पुलिस भी आई, लेकिन कुछ भी नहीं किया।

वहीं, एक अन्य स्थानीय निवासी जैनुल सैफी व हसन ने बताया कि बुधवार को पहली मौत हुई थी। उसके बाद अलग-अलग दिन चार और कुत्तों की अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। तीन कुत्तों की सोमवार को मौत हो गई।

उधर, पूरे मामले के बाबत पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ. राकेश सिंह ने बताया कि इस बारे में दक्षिणी दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों का फोन आया था। पोस्टमार्टम के लिए हमारी टीम उनके साथ तालमेल बना रही है। संभवत- मंगलवार को पोस्टमार्टम होगा। ऐसा भी हो सकता है कि कुत्तों को कुछ खाने-पीने से ऐसी समस्या हुई हो। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से सही जानकारी मिल सकेगी।

रेमडेसिविर टीका दिलाने की आड़ में ठगी करने के आरोप में एक गिरफ्तार

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कोविड-19 मरीज के उपचार में उपयोग होने वाला रेमडेसिविर टीका दिलाने की आड़ में लोगों से ठगी करने के आरोप में एक व्यक्ति को मध्य प्रदेश के रीवा जिले से गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि आरोपी की पहचान रीवा निवासी अमन सिंह के रूप में हुई है।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि पीड़ित नीरज कुमार तिवारी ने पुलिस से शिकायत करके आरोप लगाया था कि सोशल मीडिया के जरिये मिले एक फोन नम्बर पर संपर्क करने पर एक व्यक्ति ने उन्हें रेमडेसिविर टीका उपलब्ध कराने के नाम पर 8,000 रुपये की ठगी कर ली। तिवारी को अपने बीमार रिश्तेदार के लिए छह रेमडेसिविर टीके की जरूरत थी।

दिल्ली में खत्म हो गई कोरोना की दूसरी लहर की पीक : सत्येंद्र जैन

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली में बीते के कुछ दिन से कम हुए कोरोना के कहर को देखकर जहां लोगों को थोड़ी राहत मिली है, वहीं, दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने मंगलवार को कहा कि ऐसा लग रहा है कि दूसरी लहर की पीक अब धीरे धीरे कम हो रही है। जैन ने कहा कि पिछले कुछ दिनों में दिल्ली की पॉजिटिविटी दर 36% से घटकर 19% के करीब आ गई है। पहले प्रतिदिन अधिकतम 28,000 करीब मामले गए थे, अब ये कम होकर 12,500 के पास आ गए हैं। जैन ने कहा कि जब तक हम पॉजिटिविटी दर को 5% से नीचे और केसों को 3000-4000 तक नहीं ले जाते, तब तक हम इसे हल्के में नहीं ले सकते। कम टेस्टिंग के सवाल पर जैन कहा कि रविवार को भी 66,000 टेस्ट हुए थे। प्रतिदिन करीब 80,000 के करीब टेस्ट हो रहे हैं। दिल्ली में कोरोना के 23,000 के करीब बेड हैं जिसमें 3,500 के करीब बेड खाली हैं। उन्होंने कहा कि यहां लहर बहुत ज्यादा है, लेकिन अब लगता है कि अप्रैल के आखिर से इसकी पीक धीरे-धीरे नीचे आ रही है। लॉकडाउन के कारण लोग बाहर नहीं आ रहे हैं, जबकि पहले अधिक लोग बाहर निकल रहे थे। उन्होंने कहा कि ऑक्सीजन और बेड की मांग में अब कमी आई है। हमारे पास लगभग 23,000 बेड्स हैं, जिनमें से 20,000 भरे हुए हैं, यह एक बड़ी संख्या है। ऑक्सीजन की आपूर्ति जारी रहनी चाहिए अन्यथा यह समस्या बढ़ जाएगी। अब हमें 700 मीट्रिक टन से कम ऑक्सीजन की जरूरत पड़ रही है।

गौरतलब है कि कोरोना महामारी से गंभीर रूप से जूझ रही दिल्ली में सोमवार को संक्रमण के 12,651 नए मामले सामने आए थे, जबकि इस दौरान 319 मरीजों की मौत हो गई। वहीं, सोमवार को कोरोना संक्रमण की दर घटकर 19। 10 प्रतिशत हो गई, जोकि पिछले चार सप्ताह में सबसे कम है। दिल्ली के स्वास्थ्य विभाग की ओर से जारी हेल्थ बुलेटिन के अनुसार, कोरोना संक्रमण के नए मामलों में गिरावट को जांच संख्या में कमी से जोड़कर देखा जा रहा है। रविवार को 66,234 नमूनों की कोविड-19 जांच की गई। राजधानी में कोरोना संक्रमण की दर 16 अप्रैल के बाद सबसे निचले स्तर पर पहुंचकर 19। 10 हो गई है। बता दें कि, दिल्ली में 17 अप्रैल के बाद से कोरोना संक्रमण की दर लगातार 20 प्रतिशत से अधिक बनी हुई थी।

कुत्ते को नाम से न बुलाने पर भड़का मालिक

नई दिल्ली, (एजेंसी)। हरियाणा के गुरुग्राम में कुत्ते के एक मालिक ने अपने पड़ोसी और उसके परिवार को सिर्फ इसलिए पीट डाला क्योंकि उसने कुत्ते को नाम से नहीं बल्कि कुत्ता कहकर बुलाया। एक खबर के मुताबिक, यह हादसा गुरुग्राम के साइबरसिटी इलाके में ज्योति पार्क में हुआ। कुत्ते के हिंसक स्वभाव से परेशान, इलाके के सुधीर ने अपने पड़ोसी से कुत्ते को जंजीर रखने के लिए कहा था। कुत्ते के मालिक को सुझाव और इस बात पर गुस्सा आया कि उसने कुत्ते के नाम का उपयोग नहीं किया और उसे कुत्ता कहकर बुलाया।

इसके बाद दोनों परिवारों के बीच हिंसक लड़ाई हुई। एक अन्य निवासी ने इस घटना को रिकॉर्ड कर लिया जिसमें कुत्ते के मालिक को सुधीर और उसके परिवार पर छड़ और लाठी से हमला करते हुए दिखाया। सुधीर के परिवार के कम-से-कम छह सदस्यों को गंभीर चोटें आईं। मीडिया से बात करते हुए, सुधीर ने कहा कि उन्होंने अपने पड़ोसी से कुत्ते को जंजीर रखने के लिए कहा था क्योंकि यह उनके बच्चों पर काटने के लिए भागता था। सुधीर ने अपने पड़ोसी के खिलाफ गुरुग्राम के एक पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है और पुलिस ने जांच शुरू की है। गुरुग्राम में एक पालतू जानवर को लेकर हुए खूनी संघर्ष की यह पहली घटना नहीं है। अतीत में कई घटनाएं हुई हैं जहां पालतू कुत्तों पर विवाद के कारण पड़ोसियों के बीच हिंसक झगड़े हुए हैं।

मेट्रो बंद होने के बाद बढ़ा कैब और ऑटो का किराया

नई दिल्ली, (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली में तीसरी बार बढ़ाए गए लॉकडाउन में पाबंदियां भी बढ़ा दी गई हैं। मेट्रो बंद होने से आपात ड्यूटी जैसे स्वास्थ्य, पुलिस सेवा आदि में जुड़े लोगों को निजी वाहन का सहारा लेना पड़ा। अन्य किसी काम से निकले लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा, क्योंकि लॉकडाउन के कारण कैब और ऑटो की संख्या कम है। ऐसे में व्यस्त घंटों में कई रूट पर कैब का किराया सामान्य दिनों के मुकाबले बढ़ा हुआ मिला। वहीं लोग सामाजिक दूरी के नियम ताक पर रखकर ऑटो में सफर करते दिखाई पड़े। दिल्ली मेट्रो के बंद होने की वजह से आकाश को अपनी पत्नी को कड़कड़डूमा स्थित कार्यालय में खुद छोड़कर आना पड़ा। वापसी आने के दौरान पुलिस ने उन्हें चेतावनी देकर छोड़ा। यमुना विहार में रहने वाले आकाश ने बताया कि पहले पत्नी को मौजपुर मेट्रो स्टेशन तक छोड़ देता था, वहां से वह मेट्रो पकड़कर कड़कड़डूमा पहुंच जाती थीं। मेट्रो बंद होने की वजह से पत्नी को दफ्तर छोड़कर वापस लौट रहा था तो रास्ते में पुलिस ने बैरिकेडिंग पर रोक लिया। पहले तो मुझसे घर से बाहर निकलने का कारण पूछा। उन्हें पत्नी को दफ्तर छोड़कर आने की बात बताई तो बड़ी मुश्किल से माने और चेतावनी देकर छोड़ा। ऐसे तो जब तक मेट्रो बंद रहेगी, मुझे परेशानी का सामना करना पड़ेगा। मेट्रो बंद होने से रिक्शा चालकों को भी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। दिलशाद गार्डन के विभिन्न पॉकेट और ब्लॉक से रिक्शा से मेट्रो तक सवारी ढोने वाले राम प्रसाद ने बताया कि मेट्रो नहीं चलने से सवारी भी नहीं मिल रही है। काम ठप है। पहले दिन में 10 सवारी भी मिल जाती थी तो 200 का काम हो जाता था और खर्च चल जाता था। लेकिन अब तो दिहाड़ी के लिए सोचना पड़ेगा। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी से आए किराये पर रिक्शा चलाने वाले राम प्रकाश का कहना है कि कई रिक्शा वाले कोरोना बढ़ने पर अपने गांव लौट गए, लेकिन वहां काम नहीं होने के कारण मैं नहीं गया। रोज कुछ न कुछ करके कमा लेता था। अब मुश्किल हो रही है। लॉकडाउन से सवारियां काफी कम मिल रही थी, लेकिन रोज खाने का खर्च और रिक्शा का किराया निकल जाता था। लेकिन मेट्रो बंद से मुश्किल ज्यादा हो रही है।

अब 15 मीटर ऊंचे बने मकानों को भी मिलेगी बिजली का कनेक्शन

नई दिल्ली, (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली के अब 15 मीटर ऊंचे बने मकानों में रहने वालों को बिजली का कनेक्शन मिलेगा। दिल्ली सरकार और दिल्ली विद्युत नियामक आयोग (डीईआरसी) ने यह जानकारी उच्च न्यायालय को दी है। न्यायमूर्ति संजीव सचदेवा के समक्ष दिल्ली सरकार और डीईआरसी ने बताया कि इस संबंधित नियमों में 15 अप्रैल, 2021 को बदलाव कर दिया है। उन्होंने कहा कि संबधित नियम में बदलाव के बाद अब बिना स्टील्ट पार्किंग के 15 मीटर से अधिक और स्टील्ट पार्किंग के साथ 17.5 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले मकानों में भी बिजली के कनेक्शन/मीटर लग सकेंगे। ऐसे मकानों के सिर्फ उन मंजिलों/फ्लैटों में बिजली का कनेक्शन लगाने के लिए अग्निशमन विभाग की अनापत्ति प्रमाण पत्र की जरूरत नहीं होगी जो बिना स्टील्ट पार्किंग के 15 मीटर और स्टील्ट पार्किंग के साथ 17.5 मीटर के दायरे में बने हैं। अब तक मकान की ऊंचाई बिना स्टील्ट पार्किंग के 15 मीटर से अधिक और स्टील्ट पार्किंग के साथ 17.5 मीटर से अधिक होने पर भूतल पर बिजली का कनेक्शन नहीं दिया जाता था। अदालत अब्दुल अमीर द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई कर रही है। बिना स्टील्ट पार्किंग के 15 मीटर से अधिक और स्टील्ट पार्किंग के साथ 17.5 मीटर से अधिक ऊंचे मकानों में बिजली का कनेक्शन नहीं दिए जाने को चुनौती दी थी। साथ ही उन्हें बिजली वितरण कंपनी में नए नियमों के बिजली कनेक्शन के लिए आवेदन करने और जरूरी प्रक्रिया का पालन करने को कहा है। याची ने आरोप लगाया था कि 15 मीटर से अधिक ऊंचे मकानों में बिजली का कनेक्शन देने में भेदभाव किया जा रहा है। उन्होंने कहा था कि उनके पास के मकानों में बिजली का कनेक्शन दिया गया है जबकि समान ऊंचाई होने के बाद भी उनके मकान में बिजली का कनेक्शन नहीं दिया जा रहा है।

कोरोना वायरस से लड़ने में देश में वैक्सीन की कमी सबसे बड़ी बाधा - सीएम

नई दिल्ली । मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने देश भर में वैक्सीन की हो रही किल्लत पर सुझाव देते हुए कहा कि केंद्र सरकार वैक्सीन निर्माता दोनों कंपनियों से फार्मूला लेकर सक्षम कंपनियों दे, जिससे कि भारत में वैक्सीन का उत्पादन बढ़ाया जा सके। केवल दो कंपनी से पूरे देश को वैक्सीन देना संभव नहीं है। भारत में अन्य कई कंपनियों को वैक्सीन बनाने की इजाजत दी जाए और वैक्सीन का फार्मूला उन कंपनियों से साझा कर मुनाफे का कुछ अंश दोनों कंपनियों को दिया जाए। अभी भारत में सिर्फ दो कंपनियां ही वैक्सीन बना रही हैं, जो महीने में 6-7 करोड़ वैक्सीन ही बनाती हैं। इस तरह तो देश के हर व्यक्ति को वैक्सीन लगाने में दो साल लग जाएंगे, तब तक तो कई लहर आ जाएगी और काफी बर्बादी हो जाएगी।

भारत में बेहतरीन उद्यमी, फार्मा कंपनियां और वैज्ञानिक हैं, अगर उन्हें अवसर दिया गया, तो वे अपना पूरा सहयोग देंगे। देश के हर नागरिक को कुछ महीने में वैक्सीन लगाने के लिए एक राष्ट्रीय योजना बनाई जाए, तभी हम अगली लहर से पहले सभी को सुरक्षा कवच दे पाएंगे।

हमने पिछले कुछ दिनों में आईसीयू और ऑक्सीजन के खूब बेड बढ़ाएं हैं

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली में चल रहे वैक्सीनेशन को लेकर आज एक महत्वपूर्ण प्रेस कॉन्फ्रेंस की। सीएम ने कहा कि हमने पिछले कुछ दिनों में ऑक्सीजन के बेड खूब बढ़ाएं। कल ही जीटीबी हॉस्पिटल के सामने 500 नए आईसीयू के बेड चालू किए हैं। अब दिल्ली में आईसीयू और ऑक्सीजन के बेड की कमी नहीं है। दिल्ली में वैक्सीनेशन पूरे जोर-शोर से चालू हो गया है। लोगों में वैक्सीनेशन को लेकर खूब उत्साह है, मैंने खुद देखा है। दिल्ली सरकार के जिन स्कूलों में वैक्सीनेशन हो रहा है, मैं उनमें से कई स्कूलों में गया और लोगों से बात की। लोग बहुत खुश हैं और अच्छे से अपना वैक्सीनेशन करवा रहे हैं। मैं अपने स्कूल स्टाफ और फ्रंटलाइन वर्कर्स का धन्यवाद करना चाहता हूं, जो वैक्सीनेशन में लगे हुए हैं।

दिल्ली समेत पूरे देश में वैक्सीन की भारी कमी है- सीएम अरविंद केजरीवाल ने कहा कि अभी हम सवा लाख रोज वैक्सीन लगा रहे हैं। इसको जल्दी हम रोज 3 लाख से अधिक लोगों को वैक्सीन लगाना शुरु कर देंगे। हमारा लक्ष्य है कि आने वाले तीन महीने में सभी दिल्लीवासियों को वैक्सीन लगा दिया जाए। लेकिन इसमें एक बड़ी समस्या आ रही है, वह है वैक्सीन की कमी की। दिल्ली में हमारे पास अब केवल कुछ दिन की ही वैक्सीन बची है और यह समस्या देशव्यापी है। पूरे देश में इस वक्त वैक्सीन की भारी कमी हो रही है। कुछ राज्य तो ऐसे हैं, जहां वैक्सीन न होने के कारण अभी तक वहां वैक्सीनेशन शायद शुरू भी नहीं हो पाया है। वैक्सीन की कमी देश के सामने इस वक्त बहुत बड़ी चुनौती बन गई है। आज केवल दो कंपनियां वैक्सीन बना रही हैं। यह दोनों कंपनियां मिल कर महीने में केवल 5-7 करोड़ वैक्सीन ही बनाती हैं।

इस तरह, तो हमें देश के हर व्यक्ति को वैक्सीन लगाने में दो साल से ज्यादा समय लग जाएगा। तब तक तो कोविड-19 की पता नहीं कितनी लहरें आ जाएंगी और कितनी बर्बादी हो जाएगी? इसलिए जरूरी है कि हम भारत में वैक्सीन का उत्पादन युद्ध स्तर पर बढ़ाएं और देश के हर नागरिक को अगले कुछ महीने में वैक्सीन लगाने की राष्ट्रीय योजना बनाएं। जब तक हर भारतीय को वैक्सीन नहीं लगती है, तब तक यह जंग जीती नहीं जा सकती।

घरों में ईद की नमाज पढ़कर खुशियां मनाएं मुस्लिम समाज के लोग : बुखारी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। मुसलमानों का सबसे बड़ा त्योहार ईद उल फितर रमजान के महीने के खत्म होने पर मनाया जाता है। पिछले साल की तरह इस साल भी कोरोना महामारी ने तबाही मचा रखी है। इसे देखते हुए मुस्लिम धर्मगुरुओं ने अनुरोध किया है कि इस बार सभी लोग अपने घरों में ही ईद की नमाज पढ़कर खुशियां मनाएं। इस्लामिक कैलेंडर के अनुसार, रमजान के बाद शव्वाल की पहली तारीख को ईद-उल-फितर मनाई जाती है। ईद के दिन सुबह की नमाज पढ़ इसकी शुरूआत हो जाती है। जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अहमद बुखारी ने मुस्लिम समाज से अपील की है कि इस बार कोरोना की वजह से ईद पर लोग अपने घरों पर ही नमाज अदा करें।

उन्होंने कहा कि कोरोना संक्रमण बहुत तेजी से फैल रहा है। यह ऐसा कयामत का मंजर हमने आपनी अपनी जिंदगी में कभी नहीं देखा। इस दौरान कई परिवारों ने अपने लोगों को खो दिया है। कई लोग तो अपनों को कंधा भी नहीं दे सके। डॉक्टरों के मुताबिक अभी तीसरी लहर बाकी है। इसके लिए बहुत एहतियात की जरूरत है। इस साल रमजान 13 अप्रैल से शुरू हुआ था, इसलिए ईद उल फितर 13 मई गुरुवार या 14 मई शुक्रवार को मनाई जा सकती है। हालांकि, चांद देखकर ही इसका सही दन तय होगा। नई दिल्ली के इमाम हाउस में मुख्य इमाम डॉक्टर इमाम उमेर अहमद इल्यासी ने कहा मैं सभी लोगों ने गुजारिश करता हूं कि आप सरकार द्वारा जारी गाइडलाइंस का सख्ती से पालन करें। मस्जिदों के अंदर चंद लोग ही नमाज पढ़ रहें है, इसलिए आप बीते साल की तरह इस साल भी घर में नमाज अदा करें।

कोविड-19 रिपोर्ट आने तक घर पर नहीं रहने वालों के खिलाफ दर्ज होगा केस

गुरुग्राम । कोविड-19 जांच के लिए नमूने देने के बाद घर पर क्वारंटाइन रहने के बजाय बाहर घूमने वालों पर अब कार्रवाई होगी। नियम तोड़ने वालों के खिलाफ महामारी अधिनियम 1897 व आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 की धाराओं के तहत मामला दर्ज किया जाएगा। गुरुग्राम जिले में कोरोना के बढ़ते संक्रमण की रोकथाम के लिए जिला उपायुक्त डॉ. यश गर्ग ने नियम तोड़ने वालों से सख्ती से पेश आने के निर्देश दिए हैं।

उपायुक्त डॉ. यश गर्ग ने कहा कि जो व्यक्ति कोविड-19 संबंधित लक्षण दिखाई देने पर अपनी जांच करवाने के लिए नमूने दे रहे हैं, वह जांच रिपोर्ट आने तक अपने घर में सेल्फ आइसोलेशन में रहें। उपायुक्त ने कहा कि पिछले कुछ दिनों में कोविड-19 के मामलों में बढ़ोतरी हुई है। ऐसे में जरूरी है कि आमजन कोरोना संक्रमण की रोकथाम में जिला प्रशासन का सहयोग करे और लॉकडाउन नियमों का गंभीरता से पालन करे। उन्होंने कहा कि वर्तमान में 4-टी मंत्र यानी टेस्टिंग, ट्रेकिंग, ट्रेसिंग और ट्रीटमेंट का विशेष ध्यान रखा जाना अत्यंत आवश्यक है। स्वास्थ्य विभाग उन लोगों के लगातार संपर्क में है जो कोरोना संक्रमित होने के बाद होम आइसोलेशन में रह रहे हैं। ऐसे मरीजों की काउंसलिंग की जा रही है और उन्हें सामान्य गाइड लाइन के बारे में बताया जा रहा है। उन्होंने कहा कि लोगों को मास्क पहनने, सोशल डिस्टेंसिंग के नियमों का पालन करने, और टीकाकरण के बारे में जागरूक किया जा रहा है।

संपादकीय

नतीजों से शक्तिशाली हुए क्षत्रप

विधानसभा चुनावों के नतीजों को अगर देखें, तो खासतौर पर ममता बनर्जी की जीत स्तब्धकारी है। उन्हें क्या खूब जनादेश मिला है, जब विपक्ष के कद्दावर नेता लगभग रोज ही ममता बनर्जी को निशाना बनाने में लगे थे। तमाम कोशिशों के बावजूद ममता बनर्जी की सीटों की संख्या घटने के बजाय पिछली बार की तुलना में बढ़ गई है। तमाम विपक्षी नेताओं में अगर आप देखते हैं कि ममता बनर्जी सबसे बड़ी भाजपा विरोधी और प्रधानमंत्री की सबसे मुखर आलोचक रही हैं। ममता बनर्जी ने पूरा चुनाव अभियान नरेंद्र मोदी के खिलाफ चलाया है। अभियान के दौरान ही उन्होंने सभी विपक्षी नेताओं को चिट्ठी लिखी थी कि हमें लोकतंत्र को बचाने के लिए एक नेशनल फ्रंट बनाना चाहिए। आने वाले समय में ममता बनर्जी का यह एक बड़ा एजेंडा होगा कि केंद्र सरकार के विरोध के लिए क्षेत्रीय दलों का एक फ्रंट बनाएं। यह फ्रंट चुनाव के लिए तो नहीं होगा, लेकिन जिस तरह से केंद्र सरकार सारी शक्तियों का केंद्रीकरण कर रही है, राज्यों को उपेक्षा महसूस हो रही है, इन विषयों पर ममता बनर्जी बाकी पार्टियों को लेकर नरेंद्र मोदी के खिलाफ खूब लड़ेंगी और इसमें उन्हें तमिलनाडु के द्रमुक नेता एम के स्टालिन और केरल के नेता पी विजयन का साथ मिलेगा। ये दोनों नेता भी अपने-अपने राज्य में बहुत तगड़े जनादेश से जीतकर आए हैं। ये भी संघवाद पर बहुत मजबूती से विश्वास करने वाले नेता हैं।

कुल मिलाकर, कोरोना ने जिस तरह से नरेंद्र मोदी की छवि को धक्का पहुंचाया है और जिस तरह से उनकी देश और विदेश की प्रेस में आलोचना हो रही है। ज्यादातर लोग कह रहे हैं कि यह सब पूरा केंद्र सरकार का कुप्रबंधन था, जिसके कारण लोग जान गंवा रहे हैं। अगर सरकार थोड़ा सतर्क रहती और विशेषज्ञों की बात सुन लेती, तो इतना बुरा हाल न होता। अब लड़ाई यहीं से शुरू होगी। आगे आने वाले महीनों में यह बढ़ेगी। विपक्ष का आरोप है कि कोरोना के समय केंद्र सरकार ने वैक्सीन, ऑक्सीजन, लॉकडाउन जैसे फैसलों को पूरी तरह से केंद्रीकृत कर दिया था। पूरा कोरोना प्रबंधन दिल्ली से चल रहा था। आज ज्यादातर विपक्षी दलों द्वारा शासित राज्य यही तो बोल रहे हैं कि हमें वैक्सीन नहीं मिल रही, दवाओं का अभाव है, ऑक्सीजन की कमी है। महाराष्ट्र तो एक ऐसा राज्य है, जो पहले से ही केंद्र सरकार से लड़ रहा है। अगर आप देखें, तो मुझे लगता है, क्षेत्रीय नेताओं का एक समूह बनेगा, जो चुनौती देगा। मुद्दों के आधार पर चुनौती दी जाएगी और आज सबसे बड़ा मुद्दा कोरोना महामारी है।

दूसरी ओर, कांग्रेस का तो सफाया हो गया है, कोई भी कांग्रेस की तरफ देख नहीं रहा है। कांग्रेस की अपनी राजनीति है, अपनी सोच है, जो क्षेत्रीय पार्टियों से अलग है। क्षेत्रीय दलों के लिए रास्ता अब आसान हो गया है, कांग्रेस उनकी राह में कोई अड़चन नहीं डाल सकती। अन्य मुख्यमंत्री जैसे ओडिशा में नवीन पटनायक, आंध्र प्रदेश में जगन रेड्डी और तेलंगाना में चंद्रशेखर राव अब तक लगभग चुप थे, लेकिन अब कोरोना की वजह से कुछ-कुछ उनकी आवाज भी निकल रही है। ये लोग भी ममता के साथ जुड़ने की कोशिश करेंगे। अब देखना है, उत्तर प्रदेश में क्या होता है। छह महीने में उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव की तैयारी शुरू हो जाएगी। यहां विपक्षी दलों के पास कानून-व्यवस्था एक बड़ा मुद्दा है। दूसरा कोरोना जिस तरह फैल रहा है, लोग जिस तरह जान गंवा रहे हैं, यह बड़ा मुद्दा है। तीसरा मुद्दा है, कृषि कानूनों के खिलाफ चल रहा आंदोलन। उत्तर प्रदेश में केंद्र सरकार के खिलाफ विपक्ष अगर एकजुट हो गया, तो उसकी आवाज बहुत बढ़ जाएगी। मुख्य बात यही होगी कि क्षेत्रीय पार्टियां केंद्रीकरण का विरोध करेंगी। किसी भी तरह की मनमानी के खिलाफ आवाज उठाएंगी। मांग उठेगी कि केंद्र सरकार को संघवाद पर आना ही पड़ेगा। हमारा संविधान संघीय ढांचे की गारंटी देता है। चुनावी नतीजों से वन इंडिया, वन पीपुल, वन लंग्वेज के नारे को चोट लगी है। दक्षिण के राज्यों में भाजपा की कोशिशें लगभग नाकाम रही हैं। इन राज्यों में क्षेत्रीय पहचान, भाषा और संस्कृति का महत्व ज्यादा है। यह समझना पड़ेगा कि वन इंडिया का जो सपना है, एक भाषा, एक रहन-सहन रखना, यह नहीं चलेगा। यही आवाज केरल, तमिलनाडु और बंगाल से मुखरता से उठी है। खासकर बंगाल जहां भाजपा ने बहुत जोर लगा दिया, फिर भी लोगों ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

दूसरी बात, ममता बनर्जी के खिलाफ हर जगह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चेहरा तो काम नहीं कर सकता, वह तो प्रधानमंत्री हैं। तमिलनाडु में भाजपा के पास क्या चेहरा है? केरल में क्या चेहरा है, श्रीधरन, जो 85 साल के हो चुके हैं? चुनावों ने साफ कर दिया है कि विविधता में एकता का सबक भाजपा को सीखना ही पड़ेगा। हमारे यहां अलग-अलग संस्कृति है, सबको एक धारा में डालना बहुत ही मुश्किल है, ऐसा हो नहीं सकता। जहां केरल में वामपंथियों की जीत की बात है, तो यह चुनाव वाम ने नहीं जीता है। जीत का पूरा श्रेय विजयन के प्रशासन को जाता है। वहां जीत विचारधारा की नहीं, कामकाज की हुई है। बाढ़ आई थी, कोरोना फैला है, इसे जिस तरह से विजयन ने संभाला है, उसे लोगों ने सराहा है। केरल में एक और महत्वपूर्ण बात हुई है कि ईसाई वोट वामपंथियों को गया है। यह वोट हमेशा कांग्रेस की ओर जाता था। इस समुदाय ने भी बेहतर प्रशासन देखकर ही विजयन के पक्ष में वोट किया है। उधर, तमिलनाडु में कमल हासन जैसे अभिनेता चुनाव हार गए हैं। लगता है, तमिलनाडु में फिल्म स्टार की राजनीति का जमाना खत्म हो गया, अब नई राजनीति चलेगी। देखने वाली बात होगी कि स्टालिन किस तरह की राजनीति शुरू होती है। स्टालिन पुरानी द्रविड़ मुद्रा में नहीं हैं। तमिलनाडु में जो हुआ है, वह अपेक्षित ही था, दस साल से अन्नाद्रमुक शासन में थी। जयललिता भी मैदान में नहीं थीं, स्टालिन को फायदा हुआ। बहरहाल, लोगों का ज्यादा ध्यान बंगाल पर लगा रहेगा। जहां ममता बनर्जी के सामने हिंसा का मामला होगा और 'कट मनी' का भी। दोनों कमियों को किसी तरह से संभालना पड़ेगा। भाजपा अब बड़ी विपक्षी है, तीन से 75 सीट पर आ गई है, लेफ्ट और कांग्रेस साफ है। ममता बनर्जी के सामने चुनौती अब पहले से बड़ी है। उन्हें केंद्र सरकार के खिलाफ मोर्चा बनाने के साथ ही शासन अच्छे से चलाकर दिखाना होगा।

प्रवीण कुमार सिंह

कांग्रेस सहित कुछ दल संकट की इस घड़ी में जनता को भड़काने की कर रहे नापाक कोशिश

कोविड को रोकने में टीकाकरण एक महत्वपूर्ण कदम है, लेकिन अफसोस कि इसमें भी कुछ दलों ने सियासत की। उन्होंने वैक्सीन के खिलाफ देश को गुमराह किया। केंद्र सरकार ने टीकाकरण अभियान के तहत अब तक राज्यों-केंद्रशासित प्रदेशों को 28 अप्रैल तक करीब 16 करोड़ कोरोना रोधी टीके मुफ्त दिए हैं। केंद्र ने राज्यों को और टीके मुफ्त भेजने की गारंटी दी है। टीकाकरण का तीसरा चरण शुरू हो गया है। सभी राज्यों को चाहिए कि वे एक साथ आएं, टीकाकरण को अंजाम दें और नागरिकों की सुरक्षा की दिशा में काम करें। यह समय राजनीति का नहीं है। आइए, हम सब मिलकर इस त्रासदी के खिलाफ निर्णायक जंग को अंजाम तक पहुंचाएं।

कोविड महामारी की दूसरी लहर से आज पूरा देश जूझ रहा है। इससे निपटने के लिए जो भी करना आवश्यक था या फिर जिन भी चीजों की जरूरत थी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने अपना दायित्व निभाते हुए वह सब किया है। मुश्किलें दूर करने और जान के नुकसान को कम करने के लिए त्वरित, ठोस और समग्र कदम उठाए जा रहे हैं। संक्रमण में अप्रत्याशित वृद्धि के बावजूद युद्धस्तर पर इससे निपटने के लिए तमाम प्रयत्न किए जा रहे हैं। हम सबने देखा कि पिछले साल मोदी सरकार ने किस तरह पहली लहर को उस वक्त थामा था जब भारत मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर की दृष्टि से सक्षम नहीं था। पहली लहर की विभीषिका के जाते ही व्यवस्था में कुछ ढील दी गई, ताकि आर्थिक चक्र को गति दी जा सके। हालांकि केंद्र की ओर से लगातार राज्यों को कोविड के प्रति सतर्क किया जाता रहा। केंद्र सरकार ने सभी राज्यों की सरकारों के साथ कई बार बैठक की और उनसे बार-बार आग्रह किया कि वे अपने-अपने राज्यों में सार्वजनिक स्थलों पर कोविड के दिशा-निर्देशों का पालन सुनिश्चित कराएं।

पहली लहर के जाते ही कुछ राज्य सरकारों ने, जो कोविड सेंटर पिछली बार तैयार किए थे, उन्हें बंद कर दिया। वहां लगे वेंटिलेटर और मशीनों को पैक कर दिया गया। जब जनवरी में टीकाकरण की शुरुआत हुई तो इसको कोरोना पर अंतिम प्रहार माना गया, लेकिन इसके साथ ही शुरू हुई लापरवाही और सियासत। कांग्रेस शासित राज्यों ने वैक्सीन को लेकर सियासत शुरू की। केंद्र सरकार पर हमले होने लगे। जहां महाराष्ट्र की उद्धव सरकार वसूली और अन्य मामलों पर ध्यान देने लगी तो वहीं दिल्ली की केजरीवाल सरकार को पंजाब और उत्तर प्रदेश का विधानसभा चुनाव नजर आने लगा। इस सियासी

बिसात पर किसान नेताओं को आगे किया गया और दिल्ली को बंधक बना लिया गया। कृषि सुधार कानूनों के विरोध के नाम पर सियासत को प्राथमिकता दी गई और कोरोना को नजरअंदाज किया जाने लगा। इसका नतीजा यह हुआ कि कोरोना ने फिर वापसी की।

आजकल एक गलत विमर्श चलाया जा रहा है कि केंद्र सरकार ने इससे निपटने के लिए कुछ नहीं किया और इससे अनभिज्ञ बनी रही। मालूम हो कि केंद्र सरकार ने महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, केरल और बंगाल की सरकारों को पांच-सात जनवरी, 2021 के बीच ही पत्र लिखकर कोरोना के बढ़ते मामलों पर कड़ी नजर रखने को कहा था। उसी दौरान केंद्र की एक उच्चस्तरीय समिति ने केरल जाकर स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा की थी। केरल और महाराष्ट्र में फिर से ऐसी टीम भेजी गई थी। 24-25 फरवरी को भी सभी राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में ऐसे टीमें भेजी गई और उन्हें कोरोना मामलों पर नजर रखने को कहा गया। सभी राज्यों को सर्विलांस के साथ-साथ प्रभावशाली रणनीति बनाने को भी कहा गया था। साथ ही ऐसे कार्यक्रमों को चिन्हित करने को कहा गया था, जिससे कोरोना के फैलने की आशंका हो। कोरोना की दूसरी लहर से निपटने से जुड़ी तैयारियों को लेकर केंद्र ने पहले ही नौ बैठकें की थीं। इन बैठकों में खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी या प्रधानमंत्री कार्यालय की तरफ से कोई प्रतिनिधि शामिल होते थे।

बहरहाल कोरोना के विरुद्ध भारत में अब एक परिपूर्ण युद्ध शुरू हो गया है। केंद्र और राज्यों की सरकारें, वे चाहे किसी भी पार्टी की हों, अपनी कमर कसके कोरोना को हराने में जुट गई हैं। हालांकि कोरी राजनीति के चलने कुछ राज्य सरकारें अपनी नाकामी का ठीकरा केंद्र पर डालकर इस समस्या से भागना चाहती हैं, लेकिन मोटे तौर पर सब एकजुट होकर काम कर रहे हैं। दुख की बात है कि कांग्रेस सहित कुछ राजनीतिक पीटियां इसमें भी राजनीति कर रही हैं और संकट की इस घड़ी में भी जनता को भड़काने की नापाक कोशिश कर रही हैं। वहीं केंद्र सरकार समाज के सहयोग के साथ कोविड को हर हाल में परास्त करने में युद्धस्तर पर काम कर रही है।

मोदी सरकार द्वारा मेडिकल ऑक्सीजन के उत्पादन के लिए 24 घंटे में लाइसेंस देने का इंतजाम किया है। स्टील प्लांट्स में ऑक्सीजन उत्पादन शुरू किया गया है। ऑक्सीजन के औद्योगिक प्रयोग को कम किया गया है। टैंकरों की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। ग्रीन कॉरिडोर बनाकर ऑक्सीजन एक्सप्रेस की शुरुआत की गई है। सभी राज्यों में सक्रिय कोरोना मामलों को लेकर भविष्य के आंकड़ों का अनुमान लगाया गया था और उसी हिसाब से उन्हें ऑक्सीजन का कोटा भी मिला था, लेकिन राज्यों में मात्र पांच दिनों के भीतर इसकी मांग काफी बढ़ गई। लिहाजा 22 अप्रैल, 2021 को 'ऑपरेशन ऑक्सीजन की शुरुआत की गई। इसके अलावा 25 अप्रैल, 2021 को हर जिले में ऑक्सीजन प्लांट लगाने का फैसला लिया गया। पीएम केयर्स फंड से एक लाख पोर्टेबल ऑक्सीजन कंसंट्रेटर की खरीद और ऑक्सीजन संयंत्रों की स्थापना की जा रही है। लिक्विड नाइट्रोजन गैस के टैंकरों को लिक्विड ऑक्सीजन टैंकरों में बदलने की अनुमति दी गई है। वहीं रेमडेसिविर की मांग बढ़ने पर सेंट्रल औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने सात मैन्यूफैक्चरर्स की 22 से अधिक मैन्यूफैक्चरिंग साइट को अनुमति दी गई है। कोविड को रोकने में टीकाकरण एक महत्वपूर्ण कदम है, लेकिन अफसोस कि इसमें भी कुछ दलों ने सियासत की। उन्होंने वैक्सीन के खिलाफ देश को गुमराह किया। केंद्र सरकार ने टीकाकरण अभियान के तहत अब तक राज्यों-केंद्रशासित प्रदेशों को 28 अप्रैल तक करीब 16 करोड़ कोरोना रोधी टीके मुफ्त दिए हैं। केंद्र ने राज्यों को और टीके मुफ्त भेजने की गारंटी दी है। टीकाकरण का तीसरा चरण शुरू हो गया है। सभी राज्यों को चाहिए कि वे एक साथ आएं, टीकाकरण को अंजाम दें और नागरिकों की सुरक्षा की दिशा में काम करें। यह समय राजनीति का नहीं है। आइए, हम सब मिलकर इस त्रासदी के खिलाफ निर्णायक जंग को अंजाम तक पहुंचाएं।

कोरोना की तीसरी लहर दूसरी से भी घातक हो सकती है, इसलिए चिकित्सा तंत्र पर विश्वास बनाए रखें

कोविड महामारी की दूसरी लहर इतनी तेज और भयंकर है कि उसकी कल्पना सरकार और जनता के साथ-साथ चिकित्सा जगत के विशेषज्ञों ने भी नहीं की थी। फिलहाल यह कहना कठिन है कि यदि संक्रमण की इतनी तेज लहर की चेतावनी पहले से होती तो क्या चिकित्सा जगत और सरकारी मशीनरी उसका सामना आसानी से कर पाती और जनहानि को रोका जा सकता था? आज अस्पतालों में अव्यवस्था के जैसे हृदयविदारक दृश्य इंटरनेट मीडिया और टीवी चैनलों पर देखने को मिल रहे हैं, उनसे तो यह लगता है कि यदि दूसरी लहर की व्यापकता का भान होता तो सैकड़ों लोगों की जान बचाई जा सकती थी। आज संकट केवल ऑक्सीजन की कमी का ही नहीं, जीवनरक्षक दवाओं का भी है और अस्पताल बेड का भी।

कुछ दवाइयों की किल्लत तो इसलिए पैदा हो गई है, क्योंकि कोरोना संक्रमण का असर कम होने पर उनके उत्पादन में कटौती कर दी गई थी। अब स्थिति यह है कि मुनाफाखोरों ने इन दवाओं की कालाबाजारी शुरू कर दी है। इसके अलावा लोगों ने जरूरत न होते हुए भी उन्हें खरीदकर रख लिया है। इस समय ऑक्सीजन की भी खासी किल्लत है और इसकी वजह यह है कि योजना के बाद भी समय पर नए ऑक्सीजन प्लांट नहीं शुरू किए जा सके। अभी ऑक्सीजन को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने के लिए विदेशों से कंटेनर लाए जा रहे हैं। साथ ही वे उद्योग भी उसकी आपूर्ति अस्पतालों को कर रहे हैं, जो उसका उपयोग अपने यहां करते थे। इसके बाद भी उसकी कमी देखने को मिल रही है। कुछ लोग बिना जरूरत इस कारण ऑक्सीजन सिलेंडर घर पर रखे हुए हैं कि शायद आगे काम आए। इससे यही पता चलता है कि लोग चिकित्सा तंत्र पर भरोसा नहीं कर पा रहे हैं।

अपने देश का स्वास्थ्य ढांचा पहले से ही कमजोर है। हमारे अस्पतालों में मरीजों के साथ तीमारदार भी होते हैं और मरीजों की हालत को लेकर डॉक्टरों से सवाल करते रहते हैं। कई बार डॉक्टरों के पास इन सवालों के जबाव देने का समय नहीं होता। इससे लोगों का शिकायती स्वर तेज होता है। आम भारतीयों का अस्पतालों पर भरोसा इसलिए भी नहीं, क्योंकि चिकित्सा तंत्र को सुधारने के अपेक्षित प्रयास नहीं किए गए। सरकारी अस्पतालों का हाल तो इतना खराब है कि वहां पर उच्च मध्यम वर्ग के लोग जाना ही नहीं चाहते। दूसरी ओर निजी अस्पताल मुनाफाखोरी के लिए जाने जाते हैं। वहां लोग ऐसे अनुभवों से खूब गुजरते हैं कि जब तक एक निश्चित रकम जमा न कर दी जाए, तब तक मरीज का उपचार शुरू नहीं होता, भले ही वह कितनी भी गंभीर हालत में हो। भारत में अनावश्यक टेस्ट कराने, उपचार में देरी करने या गलत दवाएं देने या फिर बढ़ा-चढ़ाकर बिल बनाने की शिकायतें भी आम हैं। कई बार ये शिकायतें सही भी होती हैं। यह कहना कठिन है कि ऐसी स्थिति विकसित देशों में नहीं है, क्योंकि वहां तीमारदार या मीडिया अस्पतालों के अंदर नहीं घूम रहा होता।

इन दिनों देसी-विदेशी मीडिया देश के कमजोर स्वास्थ्य ढांचे की खबर लेने के साथ सरकार को कठघरे में खड़ा कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय मीडिया का एक वर्ग सरकार पर कुछ ज्यादा ही हमलावर है। वह इसकी अनदेखी कर रहा है कि 130 करोड़ की आबादी वाले भारत में मृत्यु दर यूरोप और अमेरिका से कहीं कम है। जिन कारणों से विकसित देशों में कोरोना मरीजों की मौत हुई, उन्हीं कारणों से भारत में भी हो रही है, लेकिन विदेशी मीडिया भारत के मामले में अलग मापदंड अपनाए हुए है। जब अमेरिका और यूरोप में प्रतिदिन हजारों की संख्या में कोरोना मरीज मर रहे थे, तब विदेशी मीडिया अपने अस्पतालों की बदहाल स्थिति और सरकारी तंत्र की नाकामी पर सवाल उठाने से बच रहा था। उसके दोहरे रवैये से यह सच छिपने वाला नहीं कि एक समय अमेरिका और यूरोप में भी स्वास्थ्य ढांचा नाकाफी साबित हो रहा था और इस कारण वहां भी अव्यवस्था थी।

विकसित देशों और भारत में एक फर्क यह भी है कि यहां मरीजों के तीमारदार आइसीयू तक के वीडियो बनाने में सक्षम हो जाते हैं। इसी कारण भारत में अस्पतालों और कोरोना मरीजों की बदहाली की जैसी करुण कहानियां चारों ओर नजर आ रही हैं, वैसी विदेश में नहीं दिखतीं। विकसित देशों में तीमारदार अस्पतालों के चक्कर नहीं काटते, न मरीज की मौत के बाद सड़क पर हंगामा करते हैं और न ही इंटरनेट मीडिया पर भड़ास निकालते हैं। भारत में मरीज के मरने पर डॉक्टरों को पीटने और अस्पतालों में तोड़फोड़ की घटनाएं आम हैं। कई बार इन घटनाओं के फोटो और वीडियो मीडिया से लेकर अदालत तक में चर्चा का विषय बन जाते हैं। इससे भी लोगों का चिकित्सा जगत पर अविश्वास और बढ़ जाता है।

यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि भारत में कोई भी यह अनुमान नहीं लगा सका कि कोरोना की दूसरी लहर इतनी व्यापक होगी। इस दूसरी लहर से निपटने के लिए कोई खास तैयारी नहीं की गई।

सबका साथ है जरूरी

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने सरकार पर कोरोना की दूसरी लहर से निपटने में पूरी तरह नाकाम रहने का आरोप लगाते हुए मांग की है कि सरकार तुरंत सर्वदलीय बैठक बुलाकर विस्तार से पूरी स्थिति स्पष्ट करे। यकीनन सरकार उनके आरोपों का भरपूर खंडन करेगी, लेकिन मीटिंग के उनके सुझाव पर गौर करना ठीक रहेगा। लोकतंत्र में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप चलते रहते है। लेकिन देश में कोरोना की दूसरी लहर ने जो हालात पैदा कर दिए हैं, वे किसी भी सूरत में सामान्य नहीं कहे जा सकते। दवाएं, अस्पताल, आईसीयू बेड, ऑक्सिजन, वैक्सीन हर मोर्चे पर कमियां दिख रही हैं। लोग उन कमियों की वजह से जूझते, बिलखते और मरते देखे जा रहे हैं। सरकार अपने स्तर पर कोशिश कर रही है, लेकिन उन कोशिशों की सीमाएं साफ दिख रही हैं। इसके उलट ऑक्सिजन की कोई कमी नहीं है, लेकिन सही वक्त पर और सही मात्रा में उसे मुहैया कराने की चुनौती बनी हुई है।

इसी क्रम में कई गैरबीजेपी शासित राज्यों की सरकारों का केंद्र सरकार से विवाद भी बढ़ता दिख रहा है। कुल मिलाकर स्थिति यह हो गई है कि महामारी के इस दौर में जब सबको एकजुट होकर इस चुनौती का सामना करने की जरूरत थी, तब विभिन्न दलों और अलग-अलग सरकारों के अलग-अलग सुर निकल रहे हैं। ऐसे में यह पहली जरूरत है कि सभी राजनीतिक दलों और उनसे जुड़ी सरकारों में तालमेल बनाया जाए। इसका सबसे अच्छा उपाय यही हो सकता है कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में जल्द से जल्द एक सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए जिसमें सरकार पूरी पारदर्शिता के साथ सारे तथ्य रखे और देश की राजनीतिक बिरादरी को विश्वास में ले। लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोगों को विश्वास में लेने की दिशा में पहला कदम होता है जनप्रतिनिधियों को विश्वास में लेना। हालांकि कोरोना संक्रमण शुरू होने के बाद से दो बार सर्वदलीय बैठक हो चुकी है। पहली बैठक पिछले साल 8 अप्रैल को हुई थी जब देश में 21 दिनों का पहला लॉकडाउन चल रहा था। दूसरी सर्वदलीय बैठक 4 दिसंबर को हुई जब वैक्सीन जल्द ही तैयार हो जाने की उम्मीद बन चुकी थी।

हालात उस वक्त भी बुरे थे, लेकिन तब न तो सरकारी तंत्र ऐसा असहाय नजर आ रहा था और न ही आम लोगों में ऐसी निराशा थी। इसलिए आज पहले से भी ज्यादा जरूरी है कि सरकार सभी राजनीतिक दलों के नेतृत्व को साथ लेने की पहल करे। इन दलों के चुनावी हित अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन आखिर सबको इसी देश में, इसी जनता के बीच राजनीति करनी है, उसी के समर्थन से आगे बढ़ना है। आज जब बात देश की है, आम जनता की है तो सबका दायित्व है कि छोटे-छोटे हितों से ऊपर उठें। सब उठेंगे भी, लेकिन सबसे ज्यादा जिम्मेदारी सरकार की है, इसीलिए पहल भी उसे ही करनी चाहिए।

दुनिया भर के फिल्म निर्माताओं और दर्शकों पर सत्यजित राय ने छोड़ा अमिट प्रभाव

टीकाकरण शुरू होते ही हल्ला मचाया कि सबको वैक्सीन दो। मकसद सबको सुरक्षित करना बिल्कुल नहीं था। सबको मालूम है कि वैक्सीन उत्पादन में समय लगेगा। ये लोग चाहते थे कि सरकार पर दबाव बनाओ कि सबके लिए एक साथ टीकाकरण हो। टीकाकरण केंद्रों पर अफरातफरी मचे। अब जब सरकार 18 साल से ऊपर वालों के लिए एक मई से टीकाकरण शुरू कर रही है तो कांग्रेस शासित और कुछ अन्य राज्य कह रहे हैं कि हम तो नहीं शुरू कर पाएंगे। क्यों? क्योंकि वैक्सीन कंपनी कह रही है कि 15 मई से पहले टीका नहीं दे पाएंगे। केंद्र और दूसरे राज्यों ने पहले ऑर्डर दिया, ये अब जागे हैं। टीकाकरण के खिलाफ यह जो अभियान चल रहा है, उसका मकसद जो संक्रमित नहीं हैं, उनके मन में डर पैदा करना है।

यह बातचीत हिरक राजार देशे (किंगडम ऑफ डायमंड्स, 1980) के स्कूल शिक्षक-से-विद्रोही और नायक बने गोपी और बाघा के बीच हुई. संक्षेप में, सार्वभौमिक मानवतावाद की यही भावना सत्यजित राय की फिल्मों में रची-बसी है। सरल लेकिन प्रभावशाली। यह बच्चों की फिल्म, सभी के लिए ऐसा उल्लेखनीय कला प्रयास था, जिसमें अत्याचार के खिलाफ प्रतिरोध के साथ अधिनायकवाद के खिलाफ लोगों का विद्रोह शामिल है। चालीस साल बाद, हिरक राजार देशे में- एक शिक्षक और उसके असंभाव्य सहयोगी गायक गोपी और ढोलकी बाघा, एक ऐसे तानाशाह को गिराने की कोशिश करते हैं- जो दुनिया भर के नेताओं के मुकाबले असहमति या आलोचना को किसी भी रूप में दबाने के लिए पहले से कहीं ज्यादा विवादास्पद और अलोकतांत्रिक हिरक राजा है। हिरक राजार देशे आदर्शवादी आशा और लोकप्रिय हर्षोन्माद के नोट पर समाप्त होता है क्योंकि निरंकुश शासक को उसकी अपनी मगजधुलाई (ब्रेनवाश) मशीन के अधीन कर लिया जाता है, उनकी विशालकाय प्रतिमा लोगों द्वारा गिरा दी जाती है, और उस भूमि पर फिर से स्वतंत्रता और न्याय बहाल हो जाता है। 1955 और 1992 के बीच अपनी फिल्मों के अंत में राय अक्सर मानवतावाद और उम्मीद को एक अद्वितीय रचनात्मक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करते थे। उनकी 1989 की फिल्म गणशत्रु को लें, तो वह हेनरिक इब्सन की एन एनिमी ऑफ द पीपल पर आधारित थी, लेकिन उसे एक छोटे बंगाली शहर पर आधारित कर दिया गया था। इब्सन का नाटक इस क्रूर व्यक्तिवादी नोट पर समाप्त होता है - दुनिया का सबसे ताकतवर आदमी वह है जो सबसे अलग अकेले खड़ा है। जबकि, सत्यजित राय की फिल्म, इस सचाई और आदर्शवादी डॉक्टर के साथ समाप्त होती है, जो अपने समुदाय द्वारा विज्ञान और सत्य के पक्ष में खड़ा होने के लिए जाना जाता है, और पूछता है, अभी आशा है? और उसके समर्थन में स्थानीय युवाओं और शिक्षित समूह द्वारा आयोजित रैली में यह आवाज़ स्पष्ट सुनी जा सकती है। अभिभूत डॉक्टर कहता है, मैं अकेला नहीं हूँ!

सामूहिक भलाई के लिए अलग-अलग संघर्ष अक्सर राय के लिए एक मार्गदर्शक रूपांकन था। जैसा कि उन्होंने एक बार कहा था, एक कलाकार के रूप में मैं भी एक सक्रियतावादी हूँ। यह मेरा तरीका है। सत्यजित राय के गुजरने के लगभग 23 साल बाद संयुक्त राष्ट्र ने उनके कला रूप को सक्रियता और परिवर्तन के एक कारक के रूप में न केवल मान्यता दी बल्कि ट्रांसफॉर्मेटिव पावर ऑफ़ आर्ट प्रदर्शनी के साथ इसका उत्सव भी मनाया। न्यूयॉर्क में 2015 में उनके चित्र का अनावरण ऑड्रे हेपबर्न, जोन बाएज़ और मलाला यूसुफ़ज़ई जैसे 15 अन्य रचनाकारों के बीच इन शब्दों के साथ किया गया था, मानवता की परिवर्तनकारी शक्ति को उजागर करने के लिए...जैसे कि... कला वास्तव में जीवन को बदल सकती है। सत्यजित राय का इस स्थान पर गौरवपूर्ण जगह पाना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि उनकी फिल्मों ने वास्तव में संयुक्त राष्ट्र के मूलभूत मूल्यों, सार्वभौमिक मानवाधिकार, सभी लोगों के लिए न्याय और गरिमा और न्याय संगतता को ही प्रतिबिंबित किया। और ऐसा उन्होंने इंसानी कहानियों को बताकर, और रिश्तों और भावनाओं पर ध्यान केंद्रित करके किया। जैसा कि अपूर संसार (द वर्ल्ड ऑफ अपू, 1959) की नायिका शर्मिला टैगोर ने इसे सहज ढंग से कहा- टैगोर और राय के लिए, लोग और उनकी कठिन परिस्थितियां सबसे पहले आते थे। निश्चित रूप से वह बंगाल के सबसे वलंत सांस्कृतिक प्रतीक, नोबेल पुरस्कार विजेता बहुश्रुत रवींद्रनाथ टैगोर का उल्लेख कर रही थीं, जिनका सत्यजित राय पर गहरा प्रभाव था।

राय ने कहा था, मुझे टैगोर से यह काम स्थानांतरित हुआ हैज बेशक, हमारी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, हमारा सांस्कृतिक श्रृंगार, पूर्व और पश्चिम का एक संलयन हैज हमने पाश्चात्य शिक्षा, पाश्चात्य संगीत, पाश्चात्य कला, पाश्चात्य साहित्य को ग्रहण किया है। राय की रचनात्मक संवेदनशीलता प्रकृति और पोषण का एक संयोजन थी। उनके दादा उपेंद्रकिशोर राय प्रसिद्ध बंगाली लेखक, चित्रकार, दार्शनिक और ब्रह्म समाज के प्रमुख व्यक्ति थे (हिंदू धर्म की एक ऐसी शाखा जो मूर्तिपूजा से बचती थी और मनुष्य की समानता पर जोर देती थी), और उनके पिता सुकुमार राय भी अग्रणी बंगाली लेखक थे, जो कविता और बचों का साहित्य रचने के साथ ही एक चित्रकार और आलोचक थे। उन्हें रबींद्रनाथ टैगोर से लेकर अपने शिक्षकों नंदलाल बोस और शांति निकेतन में बिनोद बिहारी मुखर्जी तक, रेनीटोर और डी सिका की (साइकिल चोर), चैप्लिन और फोर्ड की (फोर्ट अपाचे) जैसी फिल्मों से लेकर कार्टियर ब्रेसन की फोटोग्राफी और बीथोवेन के संगीत तक से प्रेरणा मिली। इसलिए जब उनके जीवनी लेखक एंड्रयू रॉबिन्सन ने उनसे पूछा कि क्या वह खुद को 50 प्रतिशत पश्चिमी मानते हैं, तो राय ने जवाब दिया- हां, मुझे ऐसा लगता है - जो मुझे पश्चिमी दर्शकों के लिए अधिक सुलभ बनाता है, जो किसी हद तक पाश्चात्य मॉडल से प्रभावित नहीं है। और फिर भी, राय अपनी जड़ों के प्रति वफादार रहे और दक्षिण कोलकाता के घर का उनका अव्यवस्थित अध्ययनकक्ष हमेशा ही उनका रचनात्मक मुख्यालय रहा, जहां से उन्होंने न केवल सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की खोज की बल्कि उन्हें अपनी फिल्मों के माध्यम से चित्रित भी किया। वह वास्तव में एक गौरवशाली नागरिक थे- अपने कार्य माध्यम में चिरंतन स्थानीय लेकिन अपनी सहज अपील में वैश्विक। सत्यजित राय की मेरी पसंदीदा फिल्म दृश्यों में से एक को लें, तो जो आकर्षक स्मृति मेरे दिमाग में चुहल करती है, वह अरण्येर दिन रात्रि (डेज एंड नाइट्स इन द फॉरेस्ट, 1970) की है, जिसमें केंद्रीय पात्रों ने प्रसिद्ध हस्तियों के नाम की धज्जियां उड़ा दीं। वैश्विक विविधता वाले पात्रों की गौरवशाली श्रृंखला मुझे कभी विस्मित नहीं करती, क्योंकि मेरी यादों में अठखेलियां करते हैं - रवींद्रनाथ, कार्ल मार्क्स, क्लियोपेट्रा, अतुल्य घोष, हेलेन ऑफ ट्रॉय, शेक्सपियर, माओ त्से तुंग, डॉन ब्रैडमैन, रानी रश्मोनी, बॉबी कैनेडी, टेकचंद ठाकुर, नेपोलियन, मुमताज़ महल! यह महत्वपूर्ण था कि यादों की यह अठखेलियां केवल लोगों पर केंद्रित थी। जैसा कि राय का कहना था- मैं मानवतावादी होने के प्रति सचेत नहीं हूं। यह बस इतना है कि मुझे इंसानों में दिलचस्पी है। और जिस तरह से उन्होंने इंसानों, उनकी क्रूरताओं और उनके संघर्षों, उनके व्यक्तिगत विद्रोह और सरल विजय को दर्शाया, उसने दूर-दूर तक उनके प्रशंसकों को आकर्षित किया।

कोई आश्चर्य नहीं कि जब सत्यजित राय ने रिचर्ड एटनबरो से शतरंज के खिलाड़ी (द चेस प्लेयर्स, 1977) में एक छोटी सी भूमिका के लिए संकोच के साथ उनसे बात की तो इस ब्रिटिश कलाकार ने कहा- सत्यजित, मुझे तो आपके लिए टेलिफोन डायरेक्टरी पढ़कर सुनाने में भी खुशी होगी। राय के साथ काम करने के बाद एटनबरो ने उनकी प्रतिभा की तुलना चैपलिन से की थी। इसलिए सत्यजित राय की सृजनात्मकता मौलिक रूप से जीवन और मानवता के लिए थीं, जैसा की अकीरा कुरोसावा ने एक बार इन शब्दों में व्यक्त किया था- ... उनकी फिल्मों को देखे बिना रहना ठीक सूरज या चंद्रमा को देखे बिना रहने जैसा है।

यहां तक कि अपनी पहली फिल्म पाथेर पांचाली (1955) की शोहरत से बहुत पहले 1948 में कलकत्ता के द स्टेट्समैन अखबार में उन्होंने भारतीय फिल्मों के साथ क्या गलत है? शीर्षक से लिखा था- सिनेमा के लिए कचा माल स्वयं जीवन है। यह अविश्वसनीय है कि एक ऐसा देश जिसने पेंटिंग और संगीत और कविता को प्रेरित किया है, वह फिल्म निर्माता को आगे बढ़ाने में विफल है। उन्हें केवल अपनी आंखें, और अपने कान खुले रखने हैं। उन्हें ऐसा करने दो। सत्यजित राय ने 40 वर्षों और 37 फिल्मों में ऐसा ही किया। द अपू ट्रिलॉजी में त्रासदी के बीच मानवीय गरिमा से लेकर महानगर में मानवीय भावनाओं का लचीलापन; गूपी गाइन बाघा बाइन में बचों के कल्पित कहानी की मार्फत मजबूत युद्ध-विरोधी संदेश, तो अपनी लोकप्रिय जासूसी फिल्मों सोनार किला और जॉय बाबा फेलुनाथ में अपराध पर सजा की जीत का संदेश दिया।

गौरवशाली भारत के स्वामी प्रकाशक एवं मुद्रक प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं, दिल्ली.... से मुद्रित एवं, ब्लॉक नं. 23 मकान नं. 399 त्रिलोकपुरी दिल्ली....91
से प्रकाशित संपादक -प्रवीण कुमार सिंह टेलीफोन नं. 011.22786172 फैक्स नं. 011.22786172
RNI, No. DELHIN383334, E-mail: gauravashalibarat@gmail.com इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के पीआरबी एट के तहत

राजनाथ सिंह पहुंचे लखनऊ, कहा-सीएम योगी ने किया बेहतरीन काम

लखनऊ । सूबे की राजधानी लखनऊ में कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों को लेकर बेहद गंभीर देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह मंगलवार को लखनऊ पहुंचे। एयरपोर्ट पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को रिसीव करने के लिए खुद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पहुंचे। इस दौरान उनके साथ पांच अन्य मंत्री भी थे। एयरपोर्ट पर लखनऊ के डीएम और कमिश्नर भी मौजूद रहे। राजनाथ सिंह डीआरडीओ द्वारा बनाए गए अस्पतालों का मुआयना करने यहां पहुंचे हैं। उन्होंने एयरपोर्ट के गेस्ट हाउस में मुख्यमंत्री आदित्यनाथ के साथ बैठक की। लखनऊ के सांसद राजनाथ सिंह की पहल पर डीआरडीओ और एचएएल ने लखनऊ में मिशन मोड पर कोविड अस्पताल तैयार किया है। एयरपोर्ट के गेस्ट हाउस में बैठक के दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा, इस संक्रमण काल में अगर किसी को कोई कमी दिखाई देती है और कोई भी सुझाव देता है तो इसका केंद्र और प्रदेश सरकार स्वीकार करेगी। कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुनियाभर में जो राजनयिक संबंध बनाए हैं, आज उसी का परिणाम है कि आज जब भारत पर संक्रमण काल है तो सभी तरफ से मदद करने को तैयार हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी की रोकथाम के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदम सराहनीय हैं। इसके लिए सीएम योगी आदित्यनाथ ने जो कदम उठाए हैं उसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बेहतरीन काम किया है। उन्होंने संक्रमण के कारण जनिकी जाने गई हैं उनके परिवारजनों को संवेदना भी व्यक्त की।

वहीं सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हर व्यक्ति का जीवन अमूल्य है। ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन और

जीविका दोनों को बचाने का कार्य केंद्र और प्रदेश सरकार द्वारा युद्धस्तर पर किया जा रहा है। उन्होंने प्रदेश में कोविड नियंत्रण के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और डीआरडीओ-एचएएल की मदद से जगह-जगह कोविड हास्पिटल स्थापित करने के लिए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का आभार जताया। सीएम योगी आदित्यनाथ ने जनता से अपील करते हुए कहा कि उपचार से बेहतर बचाव है। इसलिए केंद्र और प्रदेश सरकार की गाइड लाइन का पालन करिए, जिससे हमें इस वायरस की चेन को तोड़ने में काफी मदद मिलेगी।

सांसद राजनाथ सिंह का विशेष विमान दिन में करीब 12 बजे चौधरी चरण सिंह इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर लैंड किया। यहां से वह हज हाउस में एचएएल के कोविड अस्पताल का जायजा लेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी इस मौके पर हज हाउस पहुंचेंगे। इसके बाद वह अवध शिल्प ग्राम में डीआरडीओ के अटल बिहारी वाजपेई कोविड अस्पताल का भी निरीक्षण करेंगे।

इससे पहले भाजपा महानगर अध्यक्ष मुकेश शर्मा ने बताया था कि रक्षामंत्री राजनाथ सिंह करीब 11ः30 बजे अमौसी एयरपोर्ट पहुंचेंगे। वहां से वह 11ः45 बजे सरोजनीनगर के हज हाउस में तैयार एचएएल कोविड हॉस्पिटल के लिए प्रस्थान करेंगे। यहां पर एचएएल व राज्य सरकार के सहयोग से तैयार 255 बेड के कोविड-19 अस्पताल का निरीक्षण करेंगे। इसके बाद दोपहर करीब एक बजे अवध शिल्पग्राम पहुंचकर वहां शुरू हो चुके अटल बिहारी वाजपेई कोविड अस्पताल का भी निरीक्षण करेंगे। यहां रक्षा मंत्री डीआरडीओ व सेना के अधिकारियों से मिलेंगे। यहां अब तक 505 में से 250 बेड पर मरीजों की भर्ती हो रही है। यहां पर बाकी 250 ऑक्सीजन वाले बेड पर कोरोना संक्रमित रोगियों की भर्ती भी मंगलवार से शुरू हो जाएगी। अवध शिल्प ग्राम से करीब डेढ़ बजे वह सीधे अमौसी एयरपोर्ट पहुंचेंगे और फिर वहां से दिल्ली रवाना हो जाएंगे।

सरोजनी नगर के हज हाउस में राज्य सरकार और एचएएल के सहयोग से बने 255 बेड के कोविड अस्पताल में आज से भर्ती शुरू होगी। सोमवार को यहां पर ड्राइ रन के बाद समीक्षा में सभी चीजें अस्पताल संचालन के लिए दुरुस्त पाई गई हैं। अब अस्पताल मरीजों की भर्ती के लिए पूरी तरह से तैयार हो चुका है। अस्पताल में निर्बाध ऑक्सीजन सप्लाई उपलब्ध है। यहां लेवल-2 या लेवल-3 संक्रमितों को बड़ी राहत मिलेगी। अस्पताल संचालन के लिए मुख्य चिकित्सा अधिकारी और हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के बीच एमओयू भी हो चुका है। इस अस्पताल संचालन के लिए स्वयंसेवी संस्था केयर इंडिया डॉक्टर, नर्स और पैरामेडिकल स्टाफ का सहयोग दे रहे है। अस्पताल में ट्राइऐज एरिया का भी निर्माण किया गया है, जहां भर्ती प्रक्रिया के बीच मरीज को प्राथमिक चिकित्सा दी जा सकेगी। एक हेल्प डेस्क बनाई गई है। जहां भर्ती मरीजों के परिवारीजन दिन में तीन बजे से शाम पांच के बीच अपने मरीज की स्वास्थ्य जानकारी ले सकेंगे। कोविड रोगियों की निगरानी के लिए कंट्रोल रूम भी बनाया गया है। यहां सीसीटीवी कैमरे के जरिए मॉनीटर पर एक टीम नजर रखेगी।

संक्षिप्त खबर

गोंडा में गोरखपुर-राप्तीसागर एक्सप्रेस के एसी कोच का पहिया जाम, धुंआ निकलते देख यात्रियों ने चेन खींचकर बचाई जान

गोंडा । मंगलवार को गोंडा रेलवे स्टेशन से थोड़ी ही दूरी पर यशवंतपुर-गोरखपुर राप्तीसागर एक्सप्रेस आग का गोला बनने से बच गई। गोरखपुर राप्तीसागर एक्सप्रेस के एसी कोच का पहिया अचानक ही जाम हो गया था। जिसकी वजह से इसमें से धुआं निकलने लगा। धुंआ निकलते देख आनन फानन में यात्री चेनपुलिंग कर ट्रेन से उतर कर भागने लगे। गार्ड और ड्राइवर ने अग्निशमन यंत्र से शार्ट सर्किट पर काबू पाया। लगभग आधे घंटे बाद ट्रेन मनकापुर के लिए रवाना हुई। बता दें कि यशवंतपुर- गोरखपुर राप्तीसागर एक्सप्रेस गोंडा स्टेशन पर रुकने के बाद दोपहर तीन बजे के आसपास गोरखपुर के लिए रवाना हुई थी। ट्रेन अभी मोतीगंज-झिलाही के बीच पहुंची ही थी कि इसे एसी कोच के एक्सल से धुआं उठने लगा। धीरे धीरे धुआं तेजी से उठने लगा। इसे देखकर ट्रेन में बैठे यात्रियों में अफरातफरी मच गई। यात्रियों ने चेन पुलिंग कर ट्रेन को रोका और उतरकर भागने लगे। धुंआ उठने की जानकारी गार्ड और लोकोपायलट को हुई। दोनों ने अग्निशमन यंत्र से शार्ट सर्किट पर काबू पाया। इस दौरान ट्रेन आधे घंटे तक रूकी रही आगे के लिए रवाना की गई। जानकारी के मुताबिक कोई जनहानि नहीं हुई। मनकापुर स्टेशन अधीक्षक प्रभाकर पांडेय ने बताया कि पहिया ब्लॉक होने के कारण पटरियों से धुंआ निकलने लगा था आग लगने से पहले कर्मचारियों ने इसे बुझा लिया। हालांकि इस दौरान यात्रियों को काफी परेशानी हुई, जानकारी रेलवे कंट्रोल को दी गई7 रेलवे अफसरों ने भी पहुंचकर स्थिति की जानकारी ली। पूर्वोत्तर रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी महेश गुप्त ने बताया कि ब्रेक जाम हुआ था, इससे धुआं निकलने लगा था, जिसे बुझा दिया गया7 इसमें 25 मिनट का वक्त लगा, अन्य गाड़ियों के संचालन पर कोई असर नहीं पड़ा है।

यूपी में गिर रहा कोरोना संक्रमण का ग्राफ, 20,463 नए केस; 306 लोगों की मौत

लखनऊ । कोरोना वायरस संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार के प्रयासों और लोगों में बढ़ी जागरूकता का असर दिखने लगा है। प्रदेश में कोरोना संक्रमण के आंकड़ों में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है। हालांकि मृत्युदर अभी भी चिंता का विषय बनी हुई है। पिछले 24 घंटों पर नजर डाली जाए तो 20,463 नए मामले सामने आए हैं। वहीं 306 लोगों ने इस महामारी के आगे दम तोड़ दिया है। अब सक्रिय मामलों की संख्या 2,16,057 हो गई है। एक दिन में करीब 29,358 लोग अस्पतालों से डिस्चार्ज हो गए हैं। राजधानी लखनऊ में पिछले 24 घंटे में 1154 नए संक्रमित मिले, जबकि 3229 मरीज डिस्चार्ज होकर घर जा चुके है। यहां 23 लोगों की मौत हो गई है। उत्तर प्रदेश के अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य अमित मोहन प्रसाद ने बताया कि चौबीस घंटों में प्रदेश में 2,33,705 सैंपल्स की जांच की गई, जिसमें कोरोना संक्रमण के 20,463 नए मामले सामने आए और 29,358 लोग डिस्चार्ज हुए। अब तक प्रदेश में कुल 4,34,04,184 सैंपल्स की जांच की गई है। अब यूपी में कोरोना संक्रमण के सक्रिय मामलों की संख्या 2,16,057 है। अपर मुख्य सचिव सूचना नवनीत सहगल ने बताया कि प्रदेश के सभी गांवों की सीएचसी में 20 ऑक्सीजन बेड सृजित करने का अभियान चलाया गया है। 45,00 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर जिलों में भेज दिए गए हैं। 17,000 से ज्यादा ऑक्सीजन कंसंट्रेटर खरीदने का टेंडर फाइनल कर लिया गया है।कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए प्रदेश के 11 और जिलों में सोमवार से 18 से 44 वर्ष आयु वर्ग के लोगों का टीकाकरण शुरू हो गया है। इन्हें मिलाकर अब प्रदेश के 18 जिलों में 18 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को टीके लगाए जा रहे हैं। सोमवार को सूबे के इन 18 जिलों में इस आयुवार्ग के 50157 लोगों को टीके लगाए गए। जिन 11 जिलों में सोमवार से 18 वर्ष से अधिक व्यक्तियों के टीकाकरण की शुरुआत हुई, उनमें आगरा, अलीगढ़, फीरोजाबाद, मुरादाबाद, सहारनपुर, मथुरा, अयोध्या, गाजियाबाद, गौतम बुद्ध नगर, झांसी और शाहजहांपुर शामिल हैं। इनके अलावा लखनऊ, कानपुर नगर, प्रयागराज, वाराणसी, गोरखपुर, मेरठ और बरेली में इस आयु वर्ग का टीकाकरण पहली मई से जारी है। प्रदेश के सभी जिलों में 45 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को भी कोरोना वैक्सीन लगाने का अभियान फल से जारी है।

पप्पू को हिरासत में लेने पर पत्नी का नीतीश पर हमला, सरकार के सहयोगी मांझी-सहनी भी नाराज

पटना । पूर्व सांसद पप्पू यादव को पटना पुलिस ने मंगलवार को कोरोना गाइडलाइन तोड़ने के मामले में हिरासत में ले लिया। पप्पू को हिरासत में लेते ही बिहार की राजनीति गर्म हो गई है। नीतीश सरकार के सहयोगी जीतन राम मांझी और मुकेश सहनी नाराज हो गए हैं। इधर, पप्पू यादव की पत्नी व कांग्रेस नेत्री रंजीत रंजन ने भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर हमला किया है।

आमजन की सेवा को प्रेरित करे सरकार: सहनी

सुपौल की पूर्व सांसद रंजीत ने ट्वीट किया कि मुख्यमंत्री नीतीश जी लॉकडाउन के उल्लंघन में गिरफ्तारी का कोई प्रावधान नहीं है। पप्पू यादव को तत्काल रिलीज करें। हम सब मिलकर इस वैश्विक महामारी से लड़ें, मानवता को बचाएं! वहीं नीतीश सरकार में मंत्री मुकेश सहनी ने कहा कि जनता की सेवा ही धर्म होना चाहिए। सरकार को जन प्रतिनिधि, सामाजिक संस्था एवं कार्यकर्ता को आमजन की मदद के लिए प्रेरित करना चाहिए। जन प्रतिनिधि को भी कोरोना गाइडलाइन का सख्ती से पालन करते हुए कार्य करना चाहिए। ऐसे समय में सेवा में लगे पप्पू यादव को गिरफ्तार करना असंवेदनशील है।

मानवता के लिए खतरनाक घटना- हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जीतनराम मांझी ने पप्पू यादव की गिरफ्तारी पर मंगलवार को ट्वीट करके कहा कि कोई जनप्रतिनिधि अगर दिन-रात जनता की सेवा करे और उसकी एवज में उसे गिरफ्तार की जाए, ऐसी घटना मानवता के लिए खतरनाक है। ऐसे मामलों की पहले न्यायिक जांच हो तब ही कोई कारवाई होनी चाहिए नहीं तो जन आक्रोश होना लाजमी है।

हिदायत के बाद बिना पास घूम रहे पप्पू यादव: एसएसपी

पप्पू यादव के हिरासत में लिए जाने पर पटना एसएसपी उपेंद्र कुमार शर्मा ने कहा कि पप्पू यादव लगातार बिना पास के घूम रहे थे, जबकि उन्हें हिदायत दी गई थी कि वे बिना किसी ठोस वजह के घर से बाहर ना निकलें। मंगलवार को सूचना मिली कि वह कोविड गाइडलाइन का उलंघन करते हुए पीएमसीएच के कोविड वार्ड में पहुंच गए हैं। इसके बाद पुलिस के पास फोन आया कि उनकी वजह से मरीजों को इलाज से परेशानी हो रही है। जिसके बाद पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया। उनकी अभी गिरफ्तारी नहीं की गई है। कानूनी प्रकिया चल रही है।

पप्पू यादव बोले-मुझे मरवाना चाहते हैं मुख्यमंत्री, जनता जग गई तो मोदी-नीतीश आपको पड़ेगा महंगा

पटना। कोरोना गाइडलाइन का उल्लंघन करने पर पूर्व सांसद पप्पू यादव को पुलिस ने हिरासत में लिया है। पटना के पीरबहोर थाने में पप्पू यादव के पर एफआइआर दर्ज की गई है। मामले को लेकर बिहार की राजनीति गर्मा गई है। पप्पू को हिरासत में लिए जाने पर नीतीश कुमार के सहयोगी भी विरोध जता रहे हैं। इस बीच पप्पू यादव ने नीतीश कुमार पर कोरोना पॉजिटिव कर हत्या करवाने का आरोप लगाया है।

जीवन दांव पर लगा बचा रहा जिंदगियां- हिरासत में लिए जाने के बाद पप्पू यादव लगातार ट्वीट कर रहे हैं। पप्पू यादव ने नीतीश कुमार पर आरोप लगाते हुए कहा कि धैर्य की परीक्षा न लें, अन्यथा जनता अपने हाथों में व्यवस्था लेगी तो आपका प्रशासन सारा लॉकडाउन प्रोटोकॉल भूल जाएगा। पप्पू ने कहा कि मेरा एक माह पहले ऑपेरशन हुआ है। तब भी अपना जीवन दांव पर लगा जिंदगियां बचा रहा हूं। अभी मेरा टेस्ट हुआ, कोरोना निगेटिव आया। आप पॉजिटिव कर मारना चाहते हैं।

इतिहास नहीं करेगा माफ

पप्पू यादव ने कहा कि घंटों से गांधी मैदान थाने में बैठाया रखा गया है। इतनी देर में कितने लोगों के लिए ऑक्सीजन हॉस्पिटल बेड, रेमडेसिविर आदि का प्रबंध कर पाता। कितनी जिंदगी बचाने का प्रयास कर पाता। पप्पू यादव ने कहा कि नीतीश जी जो करना है जल्दी करें। आप भाजपा के दबाव में क्रूरता की हद न पार करें! इतिहास माफ नहीं करेगा! लॉकडाउन उल्लंघन के नाम पर गिरफ्तारी सरकार ने खुद अपने पांव पर कुल्हाड़ी मार ली है। जाग गई जनता तो मोदी-नीतीश यह आपको भारी पड़ेगी कोरोना काल में जिंदगियां बचाने के लिए अपनी जान हथेली पर रख जूझना अपराध है, तो हां मैं अपराधी हूं।

दस दिन में कम हुए करीब एक लाख एक्टिव केस, डब्ल्यूएचओ ने भी योगी आदित्यनाथ सरकार के प्रयास को सराहा

लखनऊ । वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के संक्रमण से उबरने के बाद स्थलीय निरीक्षण पर उतरने के साथ ही प्रदेश में कोरोना कर्फ्यू को लगातार लागू करने का मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का प्रयास रंग ला रहा है। प्रदेश में बीते दस दिन में करीब एक लाख एक्टिव केस कम हो गए हैं। सूबे की योगी आदित्यनाथ सरकार के इस प्रयास को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भी काफी सराहा है।

उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार दस दिनों में उत्तर प्रदेश में कुल एक्टिव केस 94 हजार घट गए हैं। प्रदेश में 30 अप्रैल को कोरोना वायरस की सेकेंड स्ट्रेन अपने चरम पर थी। 30 अप्रैल को प्रदेश में करीब तीन लाख दस हजार एक्टिव केस थे। अब यह घटकर करीब दो लाख 16 हजार हैं। बीते 24 घंटे में भी प्रदेश में नए संक्रमित केस 21 हजार से केस कम हो हैं और इस दौरान करीब 29 हजार लोग इसके कहर से उबरे हैं।

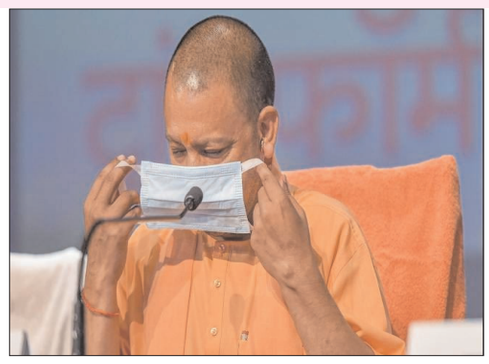

62 दिन में पहली बार 24 घंटे के दौरान देश में करोना से संक्रमित होने वालों 3,29,942 की तुलना में ठीक होने वाले 3.55 लाख अधिक रहे। लगातार पांचवे दिन भी देश में 24 घंटे में नए संक्रमित लोगों की संख्या चार लाख से नीचे 3, 29 517 रही।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार के ट्रेस, टेस्ट तथा ट्रीट के फार्मूला पर काम करने के प्रयास को काफी सराहा है। डब्ल्यूएचओ का मानना है कि भारत के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ सरकार ने गांव में भी जाकर घर-घर लोगों का परीक्षण किया है।

संदिग्ध लोगों को आगाह किया गया है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी संख्या में संक्रमितों को होम आइसोलेट किया और उनको दवा की किट भी प्रदान की। इस प्रक्रिया से काफी सुधार हो गया है। उत्तर प्रदेश सरकार का संक्रमितों को तेजी से अलग करने, उनको इलाज देने और इनके सम्पर्क में आने वालों की खोज कर उनको भी आगाह करने का तरीका बेहद सराहा जा रहा है।

कोरोना संक्रमित थाईलैंड की स्पा गर्ल की लखनऊ में मौत के मामले में सपा नेता सहित तीन के खिलाफ केस दर्ज

लखनऊ । सूबे की राजधानी के स्पा पार्लर में काम करने वाली थाईलैंड की युवती की तीन मई को कोरोना संक्रमण में मौत के बाद प्रकरण के लगातार गंभीर होने के मामले में मंगलवार को समाजवादी पार्टी के नेता आइपी सिंह सहित तीन लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। उधर लखनऊ पुलिस प्रशासन ने उस ह्व2 थाईस्पा को सील करवा दिया गया, जहां पर थाइलैंड की युवती बीते तीन वर्ष से काम करती थी। इसके साथ ही स्पा के मैनेजर तथा युवती के मोबाइल कॉल डिटेल के आधार पर लखनऊ के 50 से अधिक लोग पुलिस के रडार पर है। इनसे भी पूछताछ की जाएगी।

प्रदेश में राजनाथ सिंह की सरकार में दर्जा प्राप्त मंत्री रहे आजमगढ़ के समाजवादी पार्टी के नेता आइपी सिंह के खिलाफ थाईलैंड की युवती के मामले में केस दर्ज किया गया है। भाजपा सांसद संजय सेठ से जुड़े ट्वीट के मामले में राज्यसभा सदस्य के निजी सचिव की तहरीर पर गौतमपल्ली थाने में यह केस दर्ज किया गया है। सपा प्रवक्ता आईपी सिंह, महेंद्र कुरिया तथा रामदत्त तिवारी के खिलाफ 67 आईटी एक्ट तथा आईपीसी 500 में एफआइआर दर्ज कराई गई है। थाइलैंड की स्पा गर्ल की कोरोना वायरस संक्रमण के मौत के मामले में भाजपा नेता तथा राज्यसभा सदस्य संजय सेठ के पुत्र का नाम थाईलैंड की स्पा गर्ल से जोड़ने के आरोप में केस दर्ज कराया गया है। आरोपितों ने थाई युवती पियाथेडा को लखनऊ बुलाने का आरोप संजय सेठ के पुत्र पर लगाया था।

अपने खिलाफ केस दर्ज होने के मामले में समाजवादी पार्टी के नेता आइपी सिंह ने ट्वीट किया है। उन्होंने कहा कि मैं इस पूरे प्रकरण पर कानूनी सलाह ले रहा हूं और अपना पक्ष जल्द सामने रखूंगा। पुलिस ने मेरे किसी भी सवाल का जवाब नहीं दिया और अब राजनीतिक दबाव में आकर इस प्रकरण् की जांच करने की मेरी मांग पर मेरे ही खिलाफ मुकदमा कर दिया गया। किसी पूंजीपति के निजी सचिव को क्या अधिकार है मेरे ऊपर मानहानि का मुकदमा करने का। कोरोना संमत्रण से मृत थाईलैंड की स्पा गर्ल के मामले में सपा नेता आइपी सिंह को भी नामजद किया गया है।

पुलिस की अब तक की जांच में थाईलैंड की युवती के पास ट्रेवल वीजा तथा पासपोर्ट होने के बाद भी लखनऊ के स्पा सेंटर में उसको नौकरी दिलाने में सलमान नाम के व्यक्ति की संलिप्तता सामने आ रही है। इसके साथ फोन कॉल सहित कई मामलों में स्पा के मालिक राकेश शर्मा से भी जल्दी पूछताछ होगी।

2010 मे पहली बार लखनऊ आई- थाईलैंड की युवती पहली बार 2010 मे लखनऊ आई थी। यहां के स्पा संचालक उसे सैलरी पैकेज पर बुलाते थे। वह टूरिस्ट वीजा पर आकर यहां नौकरी करती और वीजा की मियाद खत्म होते ही अपने देश लौट जाती। पुलिस के मुताबिक, 2010, 2018, 2019 और अब 31 मार्च को चौथी बार युवती यहां आई थी। वह 2 अप्रैल से राकेश शर्मा के ह्व2 ञ्रद्धड्डद्ब स्पा में काम करने लगी। हर बार वह पर्यटक के तौर पर आई और यहां नौकरी करती रही। इसकी जानकारी इंटेलीजेंस यूनिट से लेकर पुलिस तक को नही हुई। इतना ही नहीं, वह शहर के जिन इलाकों में रुकी, जहां नौकरी की वहां की पुलिस को भी उसकी भनक नही लगी। कानूनी जानकारों का कहना है कि यह वीजा कानून का उल्लंघन है और इसके लिए कड़े सजा के प्रावधान हैं। इंटेलीजेंस यूनिट और पुलिस की ऐसी लापरवाही देश के लिए खतरा बन सकती है।

अब लखनऊ के 50 से अधिक लोग रडार पर- लखनऊ में थाईलैंड की स्पा गर्ल की कोरोना संक्रमण से मौत के मामले में जांच कर रही पुलिस की टीम ने जब उसके मोबाइल का कॉल डिटेल खंगाली तो लखनऊ के 50 से अधिक अफसर तथा सफेदपोश और कारोबारी रडार पर हैं। पुलिस ने रविवार को जांच शुरू की है। पुलिस जांच में अबतक पता चला है कि महिला तीन वर्ष से लखनऊ आ रही थी। वह लखनऊ के ओ2 स्पा में काम करती थी और लॉकडाउन में भी लखनऊ के बड़े नेता और कारोबारी उससे मसाज कराते थे। इस केस में बड़े लोगों के जुड़े होने की वजह से पुलिस अब मामले में सावधानी के साथ जांच कर रही है। जांच टीम की अध्यक्षता कर रह डीसीपी संजीव सुमन ने बताया कि थाईलैंड से आई महिला एजेंट के जरिए 2019 में लखनऊ आई थी।

इसके बाद वो सलमान के संपर्क में आई। सलमान एक स्पा सेंटर में मैनेजर है। महिला हुसैनगंज के होटल गोल्डन ट्यूलिप के पास एक कमरे में किराए पर रहती थी। डीसीपी ने बताया कि उसकी तबीयत 23 अप्रैल को बिगडग़ी शुरू हुई इसके बाद 28 अप्रैल को उसे लोहिया अस्पताल में भर्ती कराया गया। यहां तीन मई को कोरोना संक्रमण से उसकी मौत हो गई। अब तक जांच में भाजपा से राज्यसभा के सदस्य संजय सेठ बेटे का मामले में कोई कनेक्शन सामने नहीं आया है। पुलिस इस मामले में इंटरनेट मीडिया के जरिए भी जांच कर रही है। इस प्रकरण में समाजवादी पार्टी के नेता आईपी सिंह ने संजय सेठ पर गंभीर आरोप लगाकर मामले की सीबीआई जांच की मांग की थी। आईपी सिंह ने कहा लखनऊ पुलिस ने थाईलैंड से बुलाई गई स्पा गर्ल की मृत्यु पर अब तक आधिकारिक बयान क्यूं नहीं जारी किया। क्या उसके शव का पोस्टमॉर्टम हुआ। ये शिवम कुक कौन है, जिसे डेड बॉडी हैंडओवर की गई। इसकी जान पर खतरा है। राकेश शर्मा लोकल हैंडलर कहां गायब है। एजेंट सलमान कहां है।

पूर्व सांसद धनंजय सिंह की तलाश में जौनपुर में लखनऊ पुलिस का फिर छापा, फिर खाली हाथ

लखनऊ । उत्तर प्रदेश में पंचायत चुनाव खत्म होने के बाद एक बार फिर से पुलिस ने जौनपुर से बहुजन समाज पार्टी से सांसद रहे धनंजय सिंह पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। बाहुबली धनंजय सिंह अब फिर से जौनपुर से राजनीति में खासी रुचि ले रहा है। जौनपुर के मल्हनी से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में विधानसभा का उप चुनाव हारने के बाद धनंजय सिंह ने जौनपुर से अपनी पत्नी को जिला पंचायत सदस्य का चुनाव लड़वाया और अब पत्नी श्रीकला धनंजय सिंह को जिला पंचायत अध्यक्ष बनवाने की जुगत में भी है।

पूर्व सांसद बाहुबली धनंजय सिंह की गिरफ्तारी के लिए मंगलवार को अपर पुलिस अधीक्षक व सीओ सदर एसओजी टीम ने उनके पैतृक आवास बन्सफा में छापेमारी की। आधा घंटे की तलाशी के दौरान मौके पर पूर्व सांसद नही मिले। इस दौरान विधान परिषद सदस्य बृजेश कुमार सिंह प्रिंसू व पूर्व सांसद के वाहन चालको से बातचीत करने के बाद पुलिस खाली हाथ लौट गई। विधान परिषद सदस्य बृजेश कुमार सिंह प्रिंसू ने पुलिस को बताया कि मैं तो अभी आया हूं। मुझे जानकारी नही है। वहीं, अपर पुलिस अधीक्षक त्रिभुवन सिंह ने बताया कि लखनऊ में अजीत सिंह हत्याकांड में पूर्व सांसद धनंजय सिंह विभूति खंड थाना में साजिशकर्ता के रूप में नामजद आरोपित हैं। इस मामले में जारी वारंट के आधार पर उनके पैतृक आवास बन्सफा में छापेमारी की गई। तलाशी के दौरान वे वहां नही मिले।

मऊ से ब्लॉक प्रमुख रहे मऊ अजीत सिंह की लखनऊ में गैंगवार में हत्या के मामले में साजिकर्ता के रूप में नामजद पूर्व सांसद धनंजय सिंह पर 25 हजार रुपए का इनामी भी घोषित है। लखनऊ पुलिस ने मंगलवार को धनंजय सिंह की तलाश में जौनपुर में सिकरारा थाना क्षेत्र में बनसफा गांव में छापा मारा। आज भी लखनऊ पुलिस खाली हाथ लौटी। आज भी जौनपुर पुलिस के साथ ही लखनऊ पुलिस की टीम धनंजय सिंह ढूंढने गयी थी लेकिन नहीं मिला था। जौनपुर और लखनऊ की संयुक्त टीम ने छापेमारी की कार्रवाई की, लेकिन मौके पर कोई नहीं मिला। आज भी घर पर जिला पंचायत सदस्य का चुनाव रिकॉर्ड वोट से जीतने वाली धनंजय सिंह की पत्नी श्रीकला घर पर थीं।

पूर्व सांसद धनंजय सिंह की पत्नी श्रीकला ने जिला पंचायत सदस्य का चुनाव लड़ा और वार्ड नंबर 46 से सर्वाधिक मत से जीतीं। इससे पहले बीते तीन अप्रैल को भी लखनऊ पुलिस ने जौनपुर में धनंजय सिंह की तलाश में छापा मारा था, लेकिन वह पुलिस को नहीं मिला था। इसके कुछ दिन बाद ही धनंजय सिंह अपनी पत्नी के चुनाव के प्रचार में लगातार दिखा।

मेदांता लखनऊ में ऑक्सीजन सपोर्ट पर आजम खां, अब्दुल्ला की हालत स्थिर

लखनऊ । लखनऊ के मेदांता अस्पताल में भर्ती समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता व रामपुर के सांसद आजम खां अभी भी आइसीयू में भर्ती हैं। चिकित्सकों की निगरानी में उनका इलाज चल रहा है। बता दें कि उन्हें सोमवार को आइसीयू में शिफ्ट किया गया था। वहीं उनके बेटे अब्दुल्ला की स्थिति अभी स्थिर बनी हुई है। मेदांता के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. राकेश कपूर की टीम उनकी देखरेख कर रही है।

लखनऊ के मेदांता हॉस्पिटल की तरफ से मंगलवार शाम को मेडिकल बुलेटिन जारी किया गया। जिसमें बताया गया कि 72 वर्षीय आजम खां अभी आइसीयू वार्ड में भर्ती हैं जहां उनका इलाज चल रहा है। वहीं अब्दुल्ला खान की स्तिथि स्थिर व संतोषजनक है ,उन्हें भी डॉक्टरों की निगरानी में रखा गया है। बता दें कि रविवार शाम नौ बजे 72 वर्षीय समाजवादी पार्टी के सांसद आजम खां और उनके बेटे मोहम्मद अब्दुल्ला को कोरोना पॉजिटिव होने के चलते मेदांता हॉस्पिटल में भर्ती किया गया था। सोमवार को सांसद आजम खां को ऑक्सीजन लेने में ज्यादा दिक्कत हो

रही थी, उन्हें 10 लीटर प्रति मिनट ऑक्सीजन की जरूरत पड़ रही है। इसको देखते हुए क्रिटिकल केयर टीम ने सांसद आजम खां को आइसीयू में शिफ्ट कर दिया।

सीतापुर जिला कारागार में बंद सांसद आजम खां की तबीयत रविवार दोपहर को फिर बिगड़ गई थी। आजम खां कोरोना वायरस से संक्रमित हैं। पिता के साथ जेल में निरुद्ध बेटा अब्दुल्ला आजम भी कोरोना संक्रमित हैं।

डॉक्टरों की टीम ने उनका स्वास्थ्य परीक्षण किया और तत्काल अस्पताल में भर्ती कराने की सलाह दी थी। इस पर आजम खां को उनके बेटे अब्दुल्ला के साथ लखनऊ मेदांता अस्पताल में भर्ती किया गया। मिली जानकारी के मुताबिक, अधिकारी आजम खां को लखनऊ संजय गांधी पीजीआइ में भर्ती कराने को कह रहे थे, पर आजम खां ने जेल से बाहर अस्पताल में भर्ती होने को मना कर दिया। इस पर पिता-पुत्र को मेदांता अस्पताल में भर्ती किया गया।

मध्य रेलवे के कर्मचारी सदस्य मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस में कोविड -19 वैक्सीन खुराक प्राप्त करने की प्रतीक्षा करते हुए।

श्रीनगर में महामारी से प्रेरित कर्फ्यू के दौरान एक सुनसान सड़क पर गश्त करते सुरक्षाकर्मी।

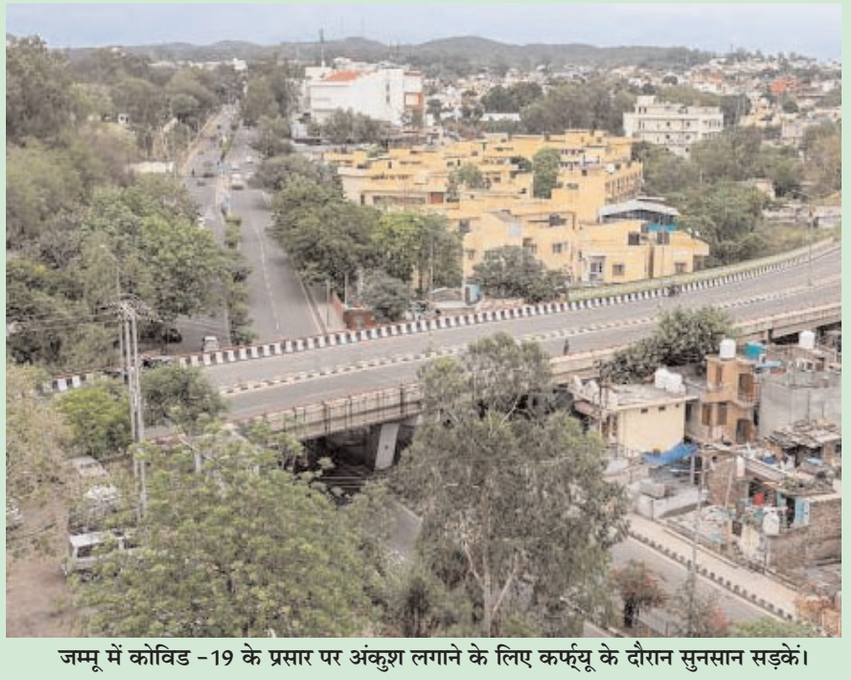

जम्मू में कोविड -19 के प्रसार पर अंकुश लगाने के लिए कर्फ्यू के दौरान सुनसान सड़कें।

एक नजर

वैक्सीनेशन न होने से लाखों पाक विस्थापित हिंदू परिवारों का जीवन खतरे में, देवनानी ने गृहमंत्री और मुख्यमंत्री को लिखा पत्र

अजमेर । पूर्व शिक्षा मंत्री व विधायक अजमेर वासुदेव देवनानी ने आधार कार्ड के अभाव में पाक विस्थापित लाखों हिंदू परिवारों का वैक्सीनेशन नहीं होने पर चिंता जताते हुए कहा है कि इससे इन परिवारों में कोरोना संक्रमण फैलने का खतरा उत्पन्न हो गया है, जिससे इनका जीवन खतरे में पड़ गया है। देवनानी ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और राजस्थान के मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में कहा है कि देश-प्रदेश में पाक से आए लाखों विस्थापित कठिनता से जीवनयापन कर रहे हैं, लेकिन नागरिकता मिलने के इंतजार में उन्हें कई सहूलियतें नहीं मिल पा रही हैं। इनके आधार कार्ड भी नहीं बन पाए हैं, जिससे यह लोग अनेक सुविधाओं से वंचित हैं। यही कारण है कि आधार कार्ड के अभाव में इनका टीकाकरण भी नहीं हो पा रहा है।

पाक के अत्याचारों से दुखी होकर आए भारत-उन्होंने कहा कि यह लोग पाकिस्तान में वहां की सरकार के अत्याचारों से परेशान होकर भारत आए हैं। ऐसे में केंद्र और प्रदेश सरकार की जिम्मेदारी है कि वह इनकी सुध ले, ताकि यह परिवार टीकाकरण से वंचित नहीं रहे। उन्होंने कहा कि राजस्थान के जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर आदि सीमावर्ती जिलों में बड़ी संख्या में पाकिस्तान से आए विस्थापित बड़े कठिन दौर से गुजर रहे हैं। दो समय की रोटी की व्यवस्था भी बड़ी मुश्किल से कर पाते हैं। ऐसे में यदि परिवार का एक भी सदस्य कोरोना की चपेट में आ गया, तो पूरे परिवार के सामने बड़ा संकट खड़ा हो जाएगा।

वैकल्पिक व्यवस्था की जाए-देवनानी ने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का लक्ष्य भारत को ''कोरोनामुक्त-वैक्सीनयुक्त'' बनाना है। टीकाकरण के लिए आधार कार्ड की आवश्यकता होती है। लेकिन आधार कार्ड के अभाव में इन परिवारों का कहीं भी टीकाकरण नहीं हो पा रहा है। ऐसे में इन परिवारों के लिए कोई वैकल्पिक व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे इन परिवारों के लोगों का भी टीकाकरण कर कोरोना महामारी से बचाया जा सके और यह लोग अपना सुरक्षित जीवन जी सकें। उन्होंने मांग की है कि सरकार इन विस्थापित हिंदू परिवारों के लिए कोई वैकल्पिक व्यवस्था तुरंत करे, जिससे इन परिवारों को भी कोरोना संक्रमण से बचाया जा सके।

आइसक्रीम ट्रॉली में फेंसिडिल की बोतलें छुपाकर तस्करी के प्रयास को बीएसएफ ने किया नाकाम, तस्कर गिरफ्तार

कोलकाता । बंगाल में भारत-बांग्लादेश सीमा क्षेत्र में दक्षिण बंगाल फ्रंटियर के सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) द्वारा चलाए जा रहे शून्य तस्करी अभियान ने तस्करों के हौंसले पस्त कर दिए है। सीमा पर कड़ी निगरानी के चलते बीएसएफ जवानों की नजरों से बचने के लिए तस्करी में शामिल गिरोह आए दिन लगातार नए- नए तरीके अपना रहे हैं, लेकिन बावजूद उसके उनके हर मंसूबे विफल हो जा रहे हैं। ताजा मामला मुर्शिदाबाद जिले की है जहां मंगलवार को बॉर्डर आउट पोस्ट फर्जीपारा इलाके से आइसक्रीम की ट्रॉली में प्रतिबंधित फेंसिडिल कफ सिरप की बोतलें छुपाकर बांग्लादेश में तस्करी की कोशिश की जा रही थी, लेकिन बीएसएफ के सतर्क जवानों ने उसे भी नाकाम कर दिया। दक्षिण बंगाल फ्रंटियर के प्रवक्ता व डीआइजी सुरजीत सिंह गुलेरिया ने बताया कि आइसक्रीम ट्रॉली के अंदर से 319 बोतल फेंसेडिल जब्त करने के साथ तस्कर को भी रंगे हाथों पकड़ लिया गया है। जब्त फेंसेडिल का बाजार मूल्य करीब 79,541 रुपये है। फेंसिडिल की बॉर्डर आउट पोस्ट फर्जीपारा के सीमावर्ती इलाकों से तस्करी की जा रही थी।

बीएसएफ की खुफिया शाखा की सूचना पर की गई कार्रवाई- एक बयान में बताया गया कि 10 मई, मंगलवार को बीएसएफ की खुफिया शाखा द्वारा फेंसिडिल की तस्करी के संबंध में विश्वस्त सूचना पर सीमावर्ती पोस्ट फ़र्ज़ीपारा, 141वीं बटालियन, सेक्टर बेहरामपुर के जवानों को सीमा पर सतर्क कर दिया गया। सुबह लगभग 10-20 बजे जवानों ने एक संदिग्ध आइसक्रीम विक्रेता को आते हुए देखा। पार्टी ने जब उसे रोककर तलाशी ली तो आइसक्रीम ट्रॉली के अंदर से 319 फेंसिडिल की बोतलें बरामद हुईं। इसके बाद तस्कर को तुरंत हिरासत में ले लिया गया। पकड़े गए व्यक्ति की पहचान सूरज मंडल (20), गांव - डी परसपुर, पीओ - मुरादपुर आरज़ी, थाना - जालंगी, जिला - मुर्शिदाबाद के रूप में हुई है।

कानूनी कार्रवाई के लिए पुलिस स्टेशन जालंगी को सौंप दिया

पूछताछ में गिरफ्तार व्यक्ति ने बताया कि वह भारतीय नागरिक है। उसने खुलासा किया है कि वह फेंसिडिल के वाहक के रूप में काम करता है। यह खेप सोहेल मलिथा, ग्राम- दयारामपुर, थाना - सागरपारा,जिला - मुर्शिदाबाद और जाफर मलिथा, ग्राम + पोस्ट - परसपुर, थाना- सागरपारा, जिला - मुर्शिदाबाद से उसने लिया था। फेंसिडिल को सीमा पार करा कर बांग्लादेश के कुश्तिया जिले के रहने वाले जियारुल और रसूल को सौंपना था। लेकिन इससे पहले ही बीएसएफ ने उसे पकड़ लिया। जब्त किए गए सामानों के साथ गिरफ्तार तस्कर को आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए पुलिस स्टेशन जालंगी को सौंप दिया गया है। इधर, 141 बटालियन, बीएसएफ के कमांडेंट नागेंद्र सिंह रौतेला ने अपने जवानों की पीठ थपथपाते हुए इस कार्रवाई पर प्रसन्नता व्यक्त की, जिसके परिणामस्वरूप तस्करी की कोशिशों को नाकाम किया गया। उन्होंने कहा कि यह केवल ड्यूटी पर उनके सैनिकों द्वारा प्रदर्शित सतर्कता के कारण ही संभव हो सका है।

बंगाल की 12वीं कक्षा की छात्रा का दावा, ऐसे मास्क का किया अविष्कार जो कोरोनोवायरस को मार सकता है

कोलकाता । बंगाल के पूर्व बर्द्धमान जिले की एक छात्रा ने दावा किया है कि उसने ऐसे मास्क का अविष्कार किया है कि जो कोरोनोवायरस को मार सकता है। उसका ये मास्क गूगल के म्यूजियम ऑफ डिजाइन एक्सीलेंस में मुंबई में प्रदर्शित किया जाएगा। मीडिया से बात करते हुए कक्षा 12वीं की छात्रा दिर्गतिका बोस ने कहा कि उसके मास्क में तीन चैंबर हैं। एक निगेटिव आयन जनरेटर है जो हवा में धूल के कणों को फिल्टर करता है। जब फिल्टर की गई हवा दूसरे चैंबर में प्रवेश करती है, तो यह तीसरे तक पहुंचती है जो एक रासायनिक चैंबर है जिसमें साबुन और पानी का मिश्रण होता है जो कोरोना वायरस को मार सकता है। दिर्गतिका ने कहा, अगर एक कोविड-संक्रमित व्यक्ति मास्क का उपयोग करता है, तो वह जिस हवा को बाहर निकालता है, वह इसी तरह की प्रक्रिया से गुजरेगी। इससे वायरस के प्रसार को रोका जा सकता है। दिर्गतिका ने बताया कि उसने मास्क पर परीक्षण के लिए राज्य के स्वास्थ्य विभाग से संपर्क किया है और यह कोविड -19 के प्रसार के खिलाफ एक कारगर प्रयास हो सकता है। कक्षा 12वीं की छात्रा ने कहा कि उसने कोविड -19 महामारी की पहली लहर के दौरान यह मास्क बनाया था। पिछले साल हुए लॉकडाउन के दौरान जो भी संसाधन उसके पास थे, उसी से मास्क को बनाया। बता दें दिर्गतिका ने इससे पहले सुंदरवन में स्थानीय लोगों के लिए एक ऐसा चश्मा बनाया था जिससे लोग अपना सिर मोड़े बिना पीछे देख सकते थे। इससे जंगल में जंगली जानवरों से स्थानीय लोगों को मदद मिली जो पीछे से उनका शिकार कर सकते थे।

जोधपुर का हिन्दू सेवा मंडल बना तारणहार, अब तक तीन सौ संक्रमितों का कर चुका अंतिम संस्कार, शुरू किया अस्थि बैंक

जोधपुर । कोरोना की सुनामी में कई परिवार अपने प्रियजनों को गंवा चुके है । अपनों को सदा के लिए खोने के बाद उपजी पीड़ा के बीच कोरोना प्रोटोकाल से अंतिम संस्कार भी बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य है । ऐसे परिवारों के लिए हिन्दू सेवा मंडल तारणहार बन सामने आया है। मंडल की तरफ से 300 से अधिक संक्रमितों का दाह संस्कार किया जा चुका है । वहीं मंडल की तरफ से अब एक अस्थि बैंक की स्थापना की गई है । इसमें मृतक की अस्थियों को जमा करवाया जा सकता है लॉकडाउन खुलने पर वे यहां से उसे ले जा सकते है ।

हिन्दू सेवा मंडल के सचिव विष्णु प्रजापत ने बताया कि कोरोना काल में लोगों की दिक्कतों को ध्यान रख हमारे कार्यकर्ताओं ने पहल की अब तक हम लोग 300 से अधिक कोरोना संक्रमित शवों का दाह संस्कार करवा चुके है ।जब संक्रमित लोगों के शव के पास उनके परिजन तक जाने से घबराने लगे तो मंडल के कार्यकर्ता इस मामले में लोगों की मदद करने को आगे आए।ऐसे में मंडल ने कई लोगो का रीति रिवाज से अंतिम संस्कार सम्पन्न किया है।उनमें से बड़ी संख्या में लोगों की अस्थियां हमारे पास सुरक्षित रखी हुई है । कुछ लोग अस्थियां ले जा चुके है । लोगों की दिक्कतों को ध्यान में रख हमने अब एक अस्थि बैंक शुरू किया है । किसी भी स्थान पर दाह संस्कार करवाने के बाद परिजन अस्थियों को हमारे पास जमा करवा सकते है ।

टोकन व्यवस्था से जमा की गई है अस्थियां

कोरोना के दौर में काल कलवित हुए लोगों का अंतिम संस्कार करवाने के बाद उनकीअस्थियां परिवार जन की मौजूदगी में

एकत्रित की जाती है। इसके अलावा यदि कोई परिवार अपने रिश्तेदार की अस्थियां एकत्रित कर हिंदू सेवा मंडल को सौंप ता है तो वह उन्हें सुरक्षित स्थान पर रखते हैं। इसके साथ ही हिंदू सेवा मंडल के कार्यकर्ता संबंधित परिजन को एक टोकन देते हैं और टोकन के नम्बर को अस्थिकलश पर भी अंकित किया जाता है। लॉकडाउन के बाद या व्यवस्था होने पर संबंधित परिवार उस टोकन नंबर के आधार पर अपने मृतक परिजनों की अस्थियां ले जाा सकते हैं। इसके अलावा हिन्दू सेवा मंडल भी शेष अस्थितयो को गंगा विस्थरजन के लिए ले जाता है। जहाँ पूरे सनातन परम्परा से इनका गंगा विसर्जन किया जाता है।मंडल प्रति वर्ष करीब 200 लावारिस शवों का अंतिम संस्कार करवाता आया है ।

सौ वर्ष से मानव सेवा के लिए समर्पित हिन्दू सेवा मंडल

जोधपुर में हिन्दू सेवा मंडल का इतिहास करीब सौ वर्ष पुराना है । सौ वर्ष पूर्व स्पेनिश फ्लू से बड़ी संख्या में लोगों ने दम तोड़ा था । उस दौर में लोगों की मदद के लिए पांच लोगों ने पहल कर संकट में घिरे लोगों को मदद के रूप में दाह संस्कार का कार्य शुरू किया था। इसके बाद से यह परम्परा बनी और अब सेवा में बदल चुकी है।

कोरोना काल में भी हिन्दू सेवा मंडल ने विशेष पहल की- महामारी को ध्यान में रख मंडल ने अधिक संख्या में दाह संस्कार करने के लिए अतिरिक्त लकड़ियों की व्यवस्था कर रखी है । साथ ही दाह के लिए अतिरिक्त प्लेटफार्म भी निर्मित किये जिससे आम जन मानस को दुख में मदद मिल सके।

राजस्थान एपिडेमिक अध्यादेश के तहत अब तक 19 लाख 64 हजार 511 व्यक्तियों का चालान, ग्राउंड पर सख्ती बरत रही पुलिस

जयपुर । अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस डॉ. रवि प्रकाश मेहरडा ने कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए कोविड हैल्थ प्रोटोकाल एवं राज्य सरकार द्वारा समय समय पर जारी गाइडलाइन की गंभीरता से पालना कराने के निर्देश दिये हैं। पुलिस ग्राउंड पर सक्रियता से सख्ती बरत रही है। उन्होंने आम-जन से घर पर ही रहने, सोशल डिस्टेंसिंग रखने, मास्क पहनने और कोविड एप्रोप्रियेट बिहेवियर अपनाने का आग्रह किया है।

डॉ. मेहरडा ने बताया कि राजस्थान पुलिस द्वारा कोरोना के संक्रमण की रोकथाम के लिए निर्धारित प्रावधानों के तहत प्रभावी कार्यवाही की जा रही है। प्रदेश में कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम के लिए राजस्थान एपिडेमिक अध्यादेश के तहत अब तक 19 लाख 64 हजार 511 व्यक्तियों का चालान किया जा चुका है। रविवार को कुल 30 हजार 731 चालान किये गये। इनमें सार्वजनिक स्थलों पर मास्क नहीं लगाने पर 4 लाख 47 हजार 126, बिना मास्क पहने लोगों को सामान बेचने पर 20 हजार 301, निर्धारित सुरक्षित भौतिक दूरी नहीं रखने पर 14 लाख 50 हजार 759 व्यक्तियों के चालान किये गये है।

रविवार को सार्वजनिक स्थलों पर मास्क नहीं लगाने पर 1897, बिना मास्क पहने लोगों को सामान बेचने पर 127, निर्धारित सुरक्षित भौतिक दूरी नहीं रखने पर 27147 कुल 30 हजार 731 व्यक्तियों के चालान किये गये है।सार्वजनिक स्थलों पर थूकने, शराब का सेवन करने एवं सार्वजनिक स्थलों पर गुटखा-तम्बाकू का सेवन करने वाले व्यक्तियों के खिलाफ भी कार्यवाही की जा रही है।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस ने बताया कि निषेधाज्ञा तथा क्वारंटाईन मापदण्डों का उल्लघंन करने पर अब तक 4 हजार 566 एफआईआर दर्ज कर अब तक 8 हजार 153 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। रविवार को 31 एफआईआर दर्ज कर 24 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया।

एमवी एक्ट में 20.70 लाख वाहनों का चालान, 2 लाख 37 हजार से अधिक वाहन जब्त

डॉ. मेहरडा ने बताया कि निषेधाज्ञा व एमवी एक्ट के तहत अब तक 20 लाख 70 हजार 31 वाहनों का चालान एवं 2 लाख 37 हजार 324 वाहनों को जब्त किया गया एवं 40 करोड़ 25 लाख रुपये से अधिक जुर्माना वसूल किया जा चुका है। रविवार को 6972 वाहनों का चालान किया गया एवं 1641 वाहनों को सीज किया गया साथ ही 10 लाख 85 हजार 100 रूपये का जुर्माना वसूल किया गया। सोशल मीडिया के दुरुपयोग के मामलों में अब तक 236 मुकदमे दर्ज कर 311 असामाजिक तत्वों के खिलाफ अभियोग दर्ज किया है एवं 275 को गिरफ्तार किया गया है।

अस्पताल में बंद पड़े वेंटिलेटर को चालू करवाने को लेकर विधायक ने दी आत्मदाह की चेतावनी

जोधपुर । जोधपुर संभाग के जालौर जिले के विधायक जोगेश्वर गर्ग ने ट्वीट कर आत्मदाह की चेतावनी दी है। कोरोना महामारी के बीच अस्पतालों की लचर व्यवस्था और जिले की बदहाल चिकित्सा प्रणाली को लेकर बन्द पड़े वेंटिलेटर को लेकर विधायक ने यह ट्वीट किया है जिसमें उन्होंने अब आत्मदाह को ही अंतिम विकल्प बताते हुए जिला कलेक्टर के सामने आत्मदाह की चेतावनी भरा ट्वीट किया है।

जोगेश्वर गर्ग ने अपने ट्वीट में लिखा है कि ÷मेरी सारी ताकत और समझ काम में ले कर थक गया हूँ। नतीजा शून्य । कलेक्टर कार्यालय के आगे खड़े होकर आत्मदाह करना बाकी रह गया है। आप कहो तो वो भी कर दूं यदि कोई गारंटी ले कि उसके बाद ये वेन्टीलेटर चालू हो जाएंगे।÷ अपनी पीड़ा को बयान करते हुए जोगेश्वर गर्ग ने केंद्र सरकार और राज्य सरकार से जुड़े कई लोगों को टैग किया है। राजस्थान सरकार के चिकित्सा मंत्री रघु शर्मा को टैग करते हुए लिखा है कि जालौर के जिला अस्पताल में बंद पड़े इन वेंटीलेटर का उपयोग शुरू करवा दो। सरकार इस विषय पर न तो गम्भीर है न ही चिंतित।

केंद्र सरकार और भारतीय जनता पार्टी से जुड़े पदाधिकारियों को टेक करते हुए गर्ग ने लिखा है कि यह वेंटिलेटर लगभग 1 साल पहले आ गए थे अधिकांश वेंटिलेटर पीएम केयर्स फंड से खरीद कर भारत सरकार द्वारा भेजे गए थे 12 वेंटिलेटर तत्कालीन जिला कलेक्टर हिमांशु गुप्ता के प्रयासों द्वारा दानदाताओं ने दिए थे लेकिन यह वेंटिलेटर अभी तक शुरू नहीं हो पाए हैं और लोग बेवजह मर रहे हैं इन को लेकर वर्तमान प्रशासन भी हाथ खड़े कर चुका है। जोगेश्वर गर्ग के इस ट्वीट को लेकर अब हलचल तेज हुई है। हालांकि जिला प्रशासन के अनुसार स्टाफ की दिक्कत के कारण यह वेंटिलेटर जिला अस्पताल में शुरू नहीं हो पाए हैं इसको लेकर के एक दिन पहले ही भर्ती की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है और स्थानीय स्तर पर 25 पदों पर भर्ती निकाली गई है। उम्मीद है कि बड़ी जल्दी इन वेंटिलेटर उसको शुरू कर दिया जाएगा। पश्चिमी राजस्थान के जोधपुर संभाग के जालौर मुख्यालय स्थित जिलाअस्पताल में तकरीबन 14 से 15 वेंटिलेटर बंद अवस्था में है जिन्हें यहां स्थापित करना था लेकिन अन्य कारणों की वजह से यह आज दिनांक तक शुरू नहीं हो पाए हैं जिसके कारण जालोर आहोर रानीवाड़ा सांचौर से जुड़े कोरोना संक्रमण के मरीजों को बड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है। आखिरकार उन्हें जोधपुर रेफर किया जाता है जहां पहले से बड़े अस्पतालों में नो बेड की स्थिति है ऐसे में मरीज की मौत हो जाती है।

महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री अनिल देशमुख के विरुद्ध ईडी ने भी दर्ज की एफआईआर , सचिन वाझे पुलिस सेवा से बर्खास्त

मुंबई । महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री अनिल देशमुख के विरुद्ध प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने भी प्राथमिकी दर्ज कर ली है। इससे पहले उच्चन्यायालय के आदेश पर सीबीआई उनके खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले में प्राथमिकी दर्ज कर चुकी है। देशमुख की पार्टी राकांपा का कहना है कि देशमुख के विरुद्ध ये मामले राजनीतिक बदले की भावना से दर्ज किए जा रहे हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने मुंबई के पूर्व पुलिस आयुक्त परमबीर सिंह द्वारा अनिल देशमुख पर लगाए गए घूसखोरी के आरोपों के आधार पर धन शोधन अधिनियम (पीएमएलए) के तहत इन्फोर्समेंट केस इन्फार्मेशन रिपोर्ट (ईसीआईआर) दर्ज की है।

सिंह ने मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को पत्र लिखकर आरोप लगाया था कि अनिल देशमुख पुलिस अधिकारियों के जरिए हर महीने 100 करोड़ रुपयों की वसूली करवाना चाहते थे। उच्चन्यायालय ने उनके इसी आरोप के आधार पर इस पूरे मामले की

सीबीआई जांच के आदेश दे दिए हैं। सीबीआई ने 24 अप्रैल को देशमुख के विरुद्ध मामला दर्ज कर अपनी जांच शुरू भी कर दी है। इस मामले में बड़ी रकम के लेनदेन के संकेत मिल रहे थे। जिस पुलिस अधिकारी सचिन वाझे से अनिल देशमुख ने कथित तौर पर 100 करोड़ रुपयों की वसूली करवाना चाहते थे, उसके पास से एनआईए को बड़ी रकम भी हाथ लगी है।

माना जा रहा है कि इसीलिए प्रवर्तन निदेशालय ने भी अब इस मामले में जांच शुरू कर दी है। ईडी जल्द ही पूर्व गृहमंत्री को पूछताछ के लिए बुला सकती है। अब अंटीलिया प्रकरण, मनसुख हिरेन हत्याकांड एवं अनिल देशमुख पर लगे घूस के आरोपों की जांच में कुल तीन केंद्रीय जांच एजेंसियां शामिल हो चुकी हैं। ईडी इस मामले में मुंबई पुलिस के पूर्व एपीआई सचिन वाझे सहित कुछ अन्य पुलिस अधिकारियों से भी पूछताछ कर सकती है।

बता दें कि इस मामले की शुरुआत 25 फरवरी को उद्योगपति मुकेश अंबानी के घर अंटीलिया के निकट विस्फोटक लदी स्कार्पियो कार खड़ी किए जाने से हुई थी। शुरू में इस मामले की जांच मुंबई पुलिस के एपीआई सचिन वाझे को सौंपी गई थी। लेकिन इस मामले की जांच एनआईए के हाथ में जाते ही एनआईए ने वाझे को ही मुख्य आरोपी बनाकर उसे गिरफ्तार कर लिया। फिर स्कार्पियो के कथित मालिक मनसुख हिरेन की हत्या के मामले में भी एनआईए ने सचिन वाझे को ही मुख्य आरोपी बनाया है।

एनआईए द्वारा यह जांच थोड़ा आगे बढ़ाते ही महाराष्ट्र सरकार ने मुंबई के तत्कालीन पुलिस आयुक्त परमबीर सिंह का उनके पद से स्थानांतरण कर दिया और तब के गृहमंत्री अनिल देशमुख ने यह बयान भी दिया कि अंटीलिया एवं सचिन वाझे प्रकरण में परमबीर सिंह की भूमिका ठीक न होने के कारण उनका स्थानांतरण किया गया है। देशमुख का यह बयान परमबीर सिंह को पसंद नहीं आया और उन्होंने मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को एक लंबा पत्र लिखकर गृहमंत्री अनिल देशमुख पर पुलिस अधिकारियों से 100 करोड़ रुपए प्रतिमाह वसूली का सनसनीखेज आरोप लगा दिया। देशमुख ने इस मामले में पहले सर्वोच्च न्यायालय, फिर मुंबई उच्चन्यायालय में देशमुख की सीबीआई से जांच कराने की याचिका भी दायर की। इसके बाद ही देशमुख को अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा था।

सचिन वाझे बर्खास्त - उद्योगपति मुकेश अंबानी की इमारत अंटीलिया के बाहर विस्फोटक लदी कार खड़ी करने एवं इसी कार के कथित मालिक मनसुख हिरेन की हत्या के मामले में आरोपी सचिन वाझे को मुंबई पुलिस की सेवा से बर्खास्त कर दिया गया है। वाझे को इन दोनों मामलों में गिरफ्तारी के बाद से निलंबित कर दिया गया था, और उसके कुछ दिन बाद ही उसकी बर्खास्तगी की प्रक्रिया शुरू कर दी गई थी।

मुंबई के पुलिस आयुक्त हेमंत नगराले ने उसकी बर्खास्तगी का फैसला मंगलवार को लिया। सचिन वाझे से एनआईए कई घंटे की पूछताछ कर चुकी है। सीबीआई ने भी उससे पूर्व गृहमंत्री पर लगे घूस के आरोपों के सिलसिले में पूछताछ की है। फिलहाल वह नई मुंबई की तलोजा जेल में बंद है।

गुजरात सरकार ने राज्य में प्रवेश के लिए आरटी पीसीआर टेस्ट की अनिवार्यता समाप्त की

अहमदाबाद । आईसीएमआर के दिशा निर्देश के बाद गुजरात सरकार ने अन्य प्रदेशों से गुजरात में प्रवेश करने वाले यात्रियों के लिए आरटी पीसीआर टेस्ट की रिपोर्ट की अनिवार्यता समाप्त कर दी है। कोई भी स्वस्थ व्यक्ति अब गुजरात में बिना इसी रिपोर्ट के प्रवेश कर सकेगा। इंडियन कार्डसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च ने गत दिनों अंतर राज्य परिवहन को लेकर कई राज्य सरकारों की ओर से लागू की गई आरटी पीसीआर टेस्ट रिपोर्ट की अनिवार्यता को गैर जरूरी बताते हुए राज्यों से जांच रिपोर्ट की अनिवार्यता को समाप्त करने का आग्रह किया था।

4 मई को जारी अपने दिशा निर्देश में आईसीएमआर ने इसका स्पष्ट उल्लेख किया था इससे पहले गुजरात सरकार, राजस्थान सरकार, महाराष्ट्र सरकार सहित कई राज्यों ने अपने अपने क्षेत्रों में आने वाले यात्रियों से आरटी पीसीआर की नेगेटिव रिपोर्ट को अनिवार्य कर रखा था।

हालांकि अहमदाबाद महानगर पालिका ने अहमदाबाद के लोगों के लिए इस अनिवार्यता को समाप्त करते हुए कहा था कि राजस्थान, मध्य प्रदेश अथवा महाराष्ट्र से अहमदाबाद आने वाले यात्रियों को आरटी पीसीआर टेस्ट रिपोर्ट की कोई जरूरत नहीं है।

स्वास्थ्य विभाग ने बताया है कि अगर यात्री कोरोना संक्रमित नहीं है तथा उनमें किसी तरह के कोई लक्षण नहीं है तो वह बिना जांच रिपोर्ट भी प्रदेश में आ सकते हैं लेकिन जिन्हें सर्दी खांसी बुखार अथवा कोरोना से जुड़े अन्य कोई लक्षण हो तो यात्रा को टालें।

गुजरात सरकार ने अहमदाबाद में ड्राइव थ्रू आरटी पीसीआर टेस्ट की भी व्यवस्था कर रखी है। गुजरात हाईकोर्ट की ओर से राज्य सरकार को कोविड-19 टेस्ट की संख्या बढ़ाने के निर्देश दिए, जिसके बाद सरकार ने प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में भी कोरोना की जांच की व्यवस्था की लेकिन पता चला है कि राज्य की नौ यूनिवर्सिटी ने ही अपने यहां आरटी पीसीआर टेस्ट की व्यवस्था की है।

गुजरात में राज्य सरकार के अधीन 26 विश्वविद्यालय हैं तथा इनमें से पांच विश्वविद्यालय और कोविड-19 की जांच व्यवस्था शुरू करने वाले हैं। राज्य में अभी नेशनल फॉरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी गांधीनगर, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी आणंद, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात यूनिवर्सिटी सूरत तथा आई आई पी एच गांधीनगर, आणंद एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, यूकेए यूनिवर्सिटी बारडोली, अहमदाबाद यूनिवर्सिटी कामधेनू यूनिवर्सिटी गांधीनगर सेंट्रल यूनिवर्सिटी गुजरात सहित नौ विश्वविद्यालयों में आरटी पीसीआर टेस्ट किए जा रहे हैं।

गुजरात में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 10990 नए सामने आए और 118 लोगों की मौत

अहमदाबाद । गुजरात में पिछले 24 घंटे में कोरोना संक्रमण के 10990 केस सामने आए जबकि कोरोना संक्रमण के चलते 118 लोगों की मौत हो गई। अहमदाबाद में कोरोना संक्रमितों की संख्या 3059 है जबकि कोरोना से मौत का आंकडा 17 है। गुजरात में एक सप्ताह से लगातार कोरोना संक्रमण के मामले घट रहे हैं, 14 हजार 500 से अब यह आंकडा 11 हजार से भी कम दर्ज किया गया है। मुख्यमंत्री विजय रुपाणी ने गांधीनगर में अपनी सरकारी आवास पर कोरोना के लिए गठित टास्क फोर्स में शामिल मेडिकल विशेषज्ञों के साथ कोरोना की दूसरी लहर पर नियंत्रण के साथ तीसरी लहर के लिए तैयारियों पर भी चर्चा की।

बीते चौबीस घंटे में राज्य में 15198 लोग स्वस्थ हुए जबकि राजय में 2 लाख 18 हजार 513 लोगों ने कोरोना का टीका लगवाया। राज्य में अब तक कोरोना से 8629 लोगों की मौत हो चुकी है। जबकि 5 लाख 63 हजार 133 लोग स्वस्थ होकर घर पहुंच चुके हैं।

बीते चौबीस घंटे में राज्य के विविध महानगर व जिलों में कोरोना संक्रमण के मामले इस प्रकार है। अहमदाबाद महानगर पालिका इलाके में 3059 केस दर्ज किये जबकि 17 लोगों की मौत हुई। सूरत महानगर पालिका क्षेत्र में 790 केस व 8 मौत , वडोदरा महानगर पालिका में 598 केस व 6 मौत , राजकोट महानगर पालिका में 334 केस व 6 की मौत, जामनगर महानगर पालिका क्षेत्र में 308 केस व 7 की मौत, भावनगर महानगर पालिका में 253 केस 2मौत, जूनागढ़ महानगर पालिका क्षेत्र में 229 केस 4 की मौत तथा गांधीनगर महानगर पालिका में कोरोना संक्रमण के 116 मामले सामने आए जबकि मौत का आंकडा शून्य है।

2 रिश्तेदारों की मौत पर भड़कीं मीरा चोपड़ा , बोलीं–

कोरोना ने नहीं, सरकार की नाकामी ने मारा

कोरोनावायरस की दूसरी लहर ने देश में तहलका मचा दिया है। इस वायरस की वजह से हर दिन हजारों लोगों की मौत हो रही है। बॉलीवुड और टीवी के बहुत से सितारें भी इस महामारी की वजह से अपनो को खो चुके हैं। प्रियंका चोपड़ा की कजिन एक्ट्रेस मीरा चोपड़ा ने भी पिछले 10 दिनों में अपने परिवार के 2 सदस्यों को खो दिया है। कुछ दिनों पहले उन्होंने ट्वीट कर बताया था कि उनके परिवार के दो सदस्यों का निधन हो गया है। अब मीरा का कहना है कि उनके परिवार के लोगों को कोरोनावायरस ने नहीं बल्कि देश की कमजोर स्वास्थ्य व्यवस्था ने मारा है। मीरा चोपड़ा ने कहा, मैंने कोविड-19 की वजह से अपने दो करीबी कजिन को नहीं खोए बल्कि खराब स्वास्थ्य सेवाएं इसके लिए जिम्मेदार हैं। मेरे पहले कजिन को करीब दो दिन तक बेंगलुरू में आईसीयू बेड नहीं मिला और दूसरे का ऑक्सीजन लेवल अचानक कम हो गया था। दोनों की उम्र 40 साल के आस-पास थी। उन्होंने बताया है कि वह इस घटना के बाद से काफी डरी हुई हैं। उन्होंने कहा, यह बहुत दुखद है कि हम उन्हें बचाने के लिए कुछ नहीं कर पाए। मैं लगातार डर के साथ हूं कि अब आगे क्या होगा। हर एक जिंदगी बस खत्म होती दिख रही है। आप अपनी क्षमता के साथ सबकुछ करते हैं लेकिन आप फिर भी उन्हें खो देते हैं। मीरा ने कहा, बहुत गुस्सा आ रहा है और ऐसा पहली बार है जब मुझे महसूस हो रहा है कि मेरा देश कूड़ेदान में चला गया है। हम अस्पताल में ऑक्सीजन, इंजेक्शन, दवाइयों और बेड्स की व्यवस्था नहीं कर पाए। सरकार हमारे लिए यह सब करती है लेकिन वो हमारे लोगों की जिंदगियां बचाने में विफल रही। उन्होंने कहा, पिछले साल लॉकडाउन लगा था ऐसे में महामारी से निपटने के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं को सुधारा जा सकता था लेकिन दूसरी लहर के साथ पता चला कि ऐसा कुछ भी नहीं किया गया। मुझे यह भी पता नहीं है कि मैं अब क्या महसूस कर रही हूं। परिवार में पिछले 10 दिनों में हुई दो मौतों के बाद अब मुझे कोई उम्मीद नहीं दिखती है।

कोरोना काल में जरूरतमंदों को फूड डोनेट कर रहे फरहान अख्तर

देश में कोरोनावायरस का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है। वहीं संकट की इस इस घड़ी में कई सेलेब्स मदद के लिए आगे आ रहे है। अभिनेता-फिल्म निर्माता फरहान अख्तर भी उत्तर प्रदेश के शहर में कोविड प्रभावित परिवारों और देखभाल करने वालों की मदद में आगे आए हैं। मीडिया की लाइमलाइट से दूर फरहान ने नॉन-फॉर-प्रॉफिट ऑर्गनाइजेशन- होप फॉर वेलफेयर ट्रस्ट के साथ काम करना जारी रखा है। उनके दान का उपयोग इस मुश्किलभरे हालात में रोगियों और देखभाल करने वालों को खाना खिलाने के लिए किया जा रहा है। एनजीओ के सेक्रेटरी दिव्यांशु उपाध्याय ने साझा किया कि इन दान का उपयोग न केवल वायरस संक्रमित रोगियों को खाना खिलाने के लिए किया जा रहा है, बल्कि वाराणसी में हरिश्चंद्र और मणिकर्णिका शमशान घाटों पर काम करने वाले लोगों के लिए भी किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि होप टीम में से आठ लोग शहर में हर दिन 1000 थालियों का वितरण कर रहे हैं। प्रत्येक थाली में चावल, दाल, रोटी, सब्जी, सलाद और बिस्कुट हैं। यदि हम दिन में अस्पतालों में भोजन वितरित करते हैं, तो रात में श्मशान घाट पर ध्यान केंद्रित करते हैं। फरहान सर हमेशा हमारी जरूरत के समय में हमारे साथ खड़े रहे हैं और हम इन कठिन वक़्त में उनके योगदान के लिए आभारी हैं। एनजीओ सेक्रेटरी ने यह भी बताया कि उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से फरहान तक अपनी आवाज़ उस वक़्त पहुंचाई थी जब शहर में कोविड के मामलों में वृद्धि देखने मिली और अभिनेता तुरंत अपनी प्रतिक्रिया देते हुए मदद करने के लिए तैयार थे। फरहान ने संकट में फंसे लोगों के कल्याण के लिए गुप्त रूप से और सक्रिय रूप से योगदान दिया है। हाल ही में उन्होंने राष्ट्रीय स्तर के मुक्केबाज और एनआईएस क्वालिफाइड कोच की मदद की थी, जो कि अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। पिछले साल, उन्होंने सरकारी अस्पतालों के हेल्थकेयर वर्कर्स के लिए 1000 पीपीई किट वितरित की थी।

अमिताभ बच्चन ने दिल्ली के एक कोविड केयर सेंटर को दो करोड़ दिए दान

मेगास्टार अमिताभ बच्चन ने गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब में शुरू किए गए श्री गुरु तेग बहादुर कोविड देखभाल केन्द्र को वैश्विक महामारी कोरोना वायरस से निपटने के लिए दो करोड़ रुपये दान दिए हैं। दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति के अध्यक्ष मंजिंदर सिंह सिरसा ने ट्विटर पर यह जानकारी दी। सिरसा ने रविवार को ट्वीट किया, '' 'सिख महान है, उनक सेवा को सलाम,' अमिताभ बच्चन जी ने श्री गुरु तेग बहादुर कोविड देखभाल केन्द्र को दो करोड़ रुपये का योगदान देते समय यह शब्द कहे।'' उन्होंने कहा कि दिल्ली में ऑक्सीजन की कमी है, बच्चन हर दिन केन्द्र में चल रहे काम के बारे में पूछते थे। मध्य दिल्ली के गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब में सोमवार दोपहर से 300 बिस्तर वाले गुरु तेग बहादुर कोविड देखभाल केन्द्र को खोला गया है। अन्य एक ट्वीट में सिरसा ने बताया कि 78 वर्षीय अभिनेता ने इस केन्द्र के लिए विदेश से ऑक्सीजन सिलेन्डर भी मंगवाए हैं। उन्होंने कहा, '' वह केवल बड़े पर्दे के ही नहीं असल जिंदगी में भी एक नायक हैं।'' बच्चन ने रविवार को प्रसारित किए गए 'वैक्स लाइव- द कंसर्ट टू रियुनाइट द वर्ल्ड' के दौरान वैश्विक समुदाय से वैश्विक महामारी की दूसरी लहर की मार झेल रहे भारत की मदद करने की अपील की थी। दिल्ली के स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, राष्ट्रीय राजधानी में रविवार को कोविड-19 के 13,336 नए मामले सामने आए और संक्रमण से 273 और लोगों की मौत हुई।

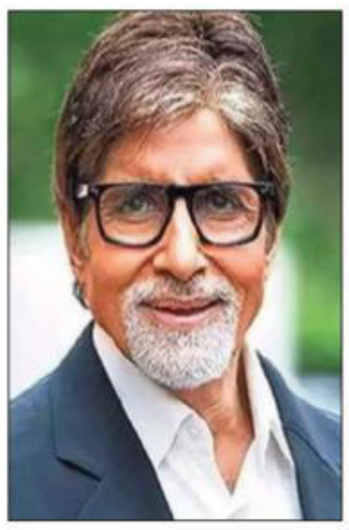

24 घंटे में इतने हजार लोगों ने मांगी सोनू सूद से मदद

एक्टर बोले- सब तक पहुंचने में लग जाएंगे 14 साल

देश में कोरोनावायरस का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है। महामारी के इस दौर में कई सेलेब्स मदद के लिए आगे आ रहे हैं। बॉलीवुड एक्टर सोनू सूद भी हरसंभव लोगों की मदद कर रहे हैं। सोनू सूद से हर दिन हजारों लोग सोशल मीडिया के जरिए मदद मांग रहे हैं। ऐसे में सोनू सूद के पास एक दिन में इतनी मदद की अपील आई कि उनका हर किसी तक पहुंच पाना बहुत मुश्किल है। सोनू अस्पतालों में बेड से लेकर ऑक्सीजन तक का इंतजाम कर रहे हैं। इसके अलावा वे किसी भी तरह की मदद मुहैया कराने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। सोनू सूद ने ट्वीट किया, 'कल (शनिवार) मुझे लगभग 41660 रिक्वेस्ट आईं। हम इन सभी तक मदद पहुंचाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, जो हम नहीं कर सकते। अगर मैं इन सभी तक पहुंचने की कोशिश करूंगा तो मुझे 14 साल लग जाएंगे जिसका मतलब है 2035।' बता दें कि बॉलीवुड से लगातार सेलेब्स की कोरोना पॉजिटिव होने की खबरें आ रही हैं। बीते कुछ हफ्तों में कई बड़े-बड़े सेलेब्स इस जानलेवा वायरस के चपेट में आ चुके हैं। सोनू सूद भी इस वायरस की चपेट में आ चुके हैं।

सुनी-सुनाई बातों पर भेजे जाने वाले मैसेज से रहें सावधान

फिल्म निर्माता और लेखक विक्रम भट्ट का कहना है कि हम सभी को ऐसे व्हाट्सएप ग्रुप्स और उन लाखों फॉरवर्ड मैसेज से सावधान रहना चाहिए, जो सुनी-सुनाई बातों के आधार पर कोविड से संबंधित उपचार और निवारक उपायों के बारे में बताते हैं। विक्रम ने कहा, यहां पर बहुत सारी गलत जानकारी होती है। इस गंभीर परिदृश्य में जो चीज मुझे खुश करती है, वह यह है कि जिस तरह से लोग सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों की मदद कर रहे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से अजनबी एक- दूसरे तक पहुंच रहे हैं। विक्रम भट्ट ने सोशल मीडिया के अन्य फायदे गिनवाते हुए कहा कि इसके माध्यम से ऑक्सीजन लंगर, फूड प्रोवाइडर (खाद्य प्रदाता), स्वयंसेवकों की पहुंच सुनिश्चित होती है और यही वास्तविक भारत है। विख्यात फिल्म प्रोड्यूसर ने कहा, ''हमने इसकी एक झलक देखी थी, जब जुलाई 2005 में मुंबई को एक जलप्रलय का सामना करना पड़ा था। मानवता और विज्ञान की यह भावना वायरस को हरा देगी।'' दरअसल, अभिनेत्री सनी लियोन के पति डैनियल वेबर द्वारा एक इंस्टाग्राम लाइव सीरीज होस्ट की गई थी, जिसमें भट्ट इस संकट की घड़ी में लोगों के लिए सकारात्मक रहने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए अतिथि के रूप में उपस्थित हुए थे। उन्होंने इस लाइव सीरीज के दौरान अपने विचार रखते हुए यह बातें कही। विक्रम की बेटी कृष्णा भी चैट में शामिल हुईं।

डिलीवरी के बाद डिप्रेशन में चली गई थीं समीरा रेड्डी

बॉलीवुड एक्ट्रेस समीरा रेड्डी सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती है। वह अक्सर अपनी लाइफ से जुड़ी बातें फैंस के साथ शेयर करती रहती हैं। हाल ही में मदर्स डे पर समीरा ने अपनी प्रेग्नेंसी, इस दौरान आए बदलाव, विचारों और लोग क्या कहेंगे वाली बातों सहित कई मुद्दों पर विचार प्रकट किए हैं। समीरा का कहना है कि जब प्रेग्नेंसी में उनका वजन 105 किलो हो गया था। ऐसे में जब अपने बेटे को गोद में लिया तो खुशी नहीं हुई। समीरा ने कहा, जब मैं प्रेग्नेंट थी, मैंने सोचा था कि मैं उन पेज 3 मॉम्स की फोटोग्राफर्स को पोज दूंगी एक परफेक्ट बंप के साथ। मेरे मातृत्व का विजन ग्लैमर वर्ल्ड से था। लेकिन 9 महीने बाद, मेरा वजन 105 किलोग्राम हो गया। उन्होंने कहा, जब मैंने मेरे सुंदर बेटे को गोद में लिया, मुझे खुशी महसूस नहीं हो रही थी। मैं बच्चे के जन्म के बाद होने वाले डिप्रेशन में चली गई। इसी बीच उनके पति अक्षय ने बच्चे के डायपर चेंज करने से लेकर सबकुछ किया। एक्ट्रेस कहती हैं, मैं यही सोचती थी कि दूसरी एक्ट्रेसेस कैसे एक महीने में ही काम कर लौट जाती हैं। मेरी सास कहती रहती थीं, तुम्हारा बेबी स्वस्थ है, तुम्हारा पति कितना सपोर्ट करता है... तुम अपसेट क्यों हो? मेरे पास कोई जवाब नहीं था। जब मैं अस्पताल से डिस्चार्ज हुई, मैं घर आई और जोर—जोर से रोई। ये भी ग्लानि थी कि मैं मेरे बेटे के लिए वहां नहीं थी। समीरा ने कहा, ये एक साल तक चला। तब तक मैं फिल्म इंडस्ट्री से कट चुकी थी। मेरा वजन उतना ही था 10 किलोग्राम और उस समय, मैं एलोपेसिया एरेटा (तेजी से बाल झड़ने का रोग) से डायग्नोस की गई। बालों के गुच्छे मेरे सिर से झड़ते थे। तब एक्ट्रेस को महसूस हुआ कि उनकी समस्या ज्यादा गहरी थी। उन्हें हकलाने, वजन ज्यादा होने, दो प्रतिभाशाली बहनों के साथ बड़ा होने और उसे इंडस्ट्री के प्रेशर से पार पानी थी जो आपकी लगातार स्क्रूटनी करती है। समीरा ने कहा, तब भी, एजेंसीज मुझसे पूछतीं कि क्या आप यम्मी मम्मी बनेंगी, या एक योगा मम्मी बनेगी या फिर वही 'सेक्सी सेम' बनेंगी। लेकिन मैंने तय किया कि मैं फॉलोअर्स बनाने के लिए झूठी जिंदगी नहीं जिउंगी।

टेनिस टूर्नामेंट: ज्वेरेव तीन साल बाद फिर बने चैंपियन, फाइनल में बेरेटिनी को दी मात

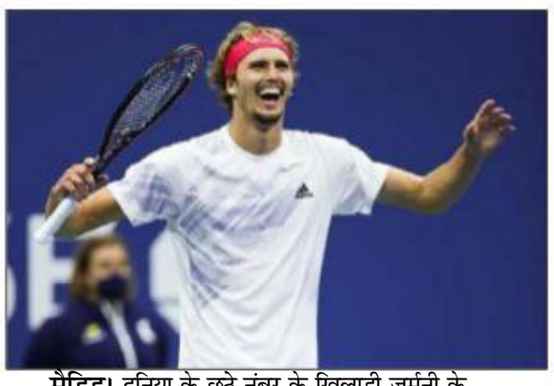

मैड्रिड। दुनिया के छठे नंबर के खिलाड़ी जर्मनी के अलेक्जेंडर ज्वेरेव ने तीन साल बाद फिर से मैड्रिड ओपन टेनिस टूर्नामेंट का खिताब जीत लिया।

ज्वेरेव ने फाइनल में नौवें नंबर के इटली के मैटियो बेरेटिनी के खिलाफ पहला सेट गंवाने के बाद जबरदस्त वापसी करते हुए 6-7, 6-4, 6-3 से जीत दर्ज कर इस सत्र की दूसरी ट्रॉफी जीती। ज्वेरेव ने अपने खिताबी सफर में शीर्ष दस में शुमार तीन खिलाड़ियों को मात दी। इनमें दुनिया के नंबर दो खिलाड़ी राफेल नडाल, नंबर चार डोमिनिक थिएम और नंबर दस बेरेटिनी शामिल रहे। इससे पहले ज्वेरेव ने मैक्सिको ओपन जीता था। चौबीस वर्षीय ज्वेरेव का यह मैड्रिड में दूसरा खिताब है, इससे पहले वह 2018 में यहां चैंपियन बने थे। ज्वेरेव ने तीन साल मास्टर्स 1000 ट्रॉफी जीती जोकि उनके कॅरिअर का चौथा खिताब है। वहीं मैड्रिड में यह उनकी 17 मैचों में 15वीं जीत है। उन्होंने यहां सिर्फ दो मैच हारे हैं। यह लगातार चौथा मास्टर्स 1000 फाइनल है जो 1995 या उसके बाद पैदा हुए खिलाड़ियों के बीच खेला गया।

पिछले चार मास्टर्स 1000 के फाइनल

टूर्नामेंट	विजेता/उम्र	उपविजेता/उम्र
मैड्रिड ओपन	ज्वेरेव/24	बेरेटिनी/25
मोंटे कार्लो (2021)	स्टेफानोस सितसिपास/22	आंद्रेई रूबलेब/23
मियामी ओपन (2021)		
पेरिस ओपन(2020)	हुर्बट हुर्काज/24	दानिल मेदवेदेव/24
यानिक सिनेर/19	ज्वेरेव/23	

दुखद: एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता फुटबॉलर फोर्टुनाटो फ्रैंको का निधन

मैड्रिड । भारत की 1962 एशियाई खेलों की स्वर्ण पदक विजेता फुटबॉल टीम के सदस्य रहे फोर्टुनाटो फ्रैंको का सोमवार को निधन हो गया। वह 84 साल के थे। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने उनके निधन की पुष्टि की लेकिन इसका कारण नहीं बताया। फ्रैंको के परिवार में पत्नी, बेटा और बेटी हैं। फ्रैंको ने भारत की तरफ से 26 मैच खेले। इनमें में साल 1962 का एशियाई कप भी शामिल है जिसमें भारत उप विजेता रहा था। वह मर्डेका कप में साल 1964 और साल 1965 में क्रमशः रजत और कांस्य पदक जीतने वाली टीम के भी सदस्य रहे थे।

उन्होंने हालांकि अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 1962 एशियाई खेलों के फाइनल में किया था जब भारत ने दक्षिण कोरिया को 2-1 से हराया था। गोवा के रहने वाले फ्रैंको घरेलू स्तर पर मुंबई के टाटा फुटबॉल क्लब की तरफ से खेला करते थे। एआईएफएफ अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल, महासचिव कुशल दास और भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया। एआईएफएफ से जारी बयान में पटेल ने कहा, 'यह सुनकर काफी दुख हुआ कि फ्रैंको नहीं रहे। वे भारतीय फुटबॉल की स्वर्णिम पीढ़ी के सदस्य थे जिन्होंने 1962 में भारत को स्वर्ण पदक जीताने में शानदार भूमिका निभाई थी।' दास ने अपने बयान में कहा, 'वह दिग्गज फुटबॉलर थे जो कई पीढ़ियों के लिए प्रेरणा रहे हैं। उनके परिवार के प्रति हमारी संवेदनाएं। हम उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं।'

सुशील कुमार मामला: डब्ल्यूएफआई ने कहा, भारतीय कुश्ती की छवि को नुकसान हुआ

नई दिल्ली । सुशील की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफलता ने खेल को नई बुलंदियों तक पहुंचाया और प्रेरणादायी विरासत तैयार की। बापरोला गांव का यह पहलवान इस खेल में अब तक भारत का एकमात्र विश्व चैंपियन (2010) है। वह एकमात्र भारतीय खिलाड़ी है जिसके नाम पर दो व्यक्तिगत ओलंपिक पदक दर्ज हैं। हालांकि, भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) अब चिंतित है कि वर्षों में सुशील अन्य पहलवानों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने प्रदर्शन से खेल की जो प्रतिष्ठा बनाई है उसे नुकसान पहुंचा है।

डब्ल्यूएफआई के सहायक सचिव विनोद तोमर ने कहा, हां, मुझे यह कहना चाहिए कि इससे भारतीय कुश्ती की छवि को बेहद नुकसान पहुंचा है। लेकिन पहलवान मैट से बाहर क्या करते हैं इससे हमारा कोई लेना देना नहीं है। हम मैट पर उनके प्रदर्शन को लेकर चिंतित हैं। उल्लेखनीय है कि पुलिस चार मई को हुए एक झड़प के सिलसिले में सुशील कुमार की भूमिका का पता लगा रही है। बता दें कि छत्रसाल स्टेडियम के बाहर हुई इस झड़प में 23 साल के सागर राणा की मौत हो गई थी। उल्लेखनीय है कि साल 2008 में हुए बीजिंग ओलंपिक में सुशील कुमार के कांस्य पदक जीतने के साथ भारत ने कुश्ती में ओलंपिक पदक के 56 साल के सूखे को खत्म किया था।

कोरोना हुआ तो टीम से बाहर: बीसीसीआई की खिलाड़ियों को दो टूक, कहा-

जो कोविड से बच पाएगा, वही इंग्लैंड दौरे पर जाएगा

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने इंग्लैंड दौरे पर जाने वाले खिलाड़ियों को सख्त निर्देश दिए हैं। बोर्ड ने कहा है कि इंग्लैंड रवाना होने से पहले अगर कोई खिलाड़ी पॉजिटिव आता है, तो उसको टीम से बाहर कर दिया जाएगा। टीम के फीजियो योगेश परमार ने प्लेयर्स को सख्त हिदायत देते हुए कहा है कि मुंबई में क्वारैंटाइन होने से पहले सभी खिलाड़ी सावधानी बरतें और अपने आप को आइसोलेट रखें। टीम इंडिया 19 मई से मुंबई के बायो-बबल में एंट्री कर सकती है। इसके बाद इंग्लैंड पहुंचकर भी विराट कोहली की टीम को 10 दिन क्वारैंटाइन रहना होगा।

होटल में एंट्री करते ही कोरोना जांच होगी

बायो-बबल में एंट्री के बाद इंडियन प्लेयर्स, सपोर्ट स्टाफ और उनके फैमिली मेंबर्स की पहले दिन ही कोरोना जांच होगी। इसके साथ ही BCCI खिलाड़ियों के लिए एक स्पेशल बायो-बबल तैयार करना चाहता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि टूर पर जा रहे 20 खिलाड़ी देश के अलग-अलग राज्यों से हैं और कोरोना को लेकर सभी राज्यों के हालात अलग-अलग हैं।

किसी खिलाड़ी के लिए अलग से चार्टर्ड फ्लाइट नहीं

BCCI के एक अधिकारी ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया कि बोर्ड खिलाड़ियों को हिदायत दे चुका है। खिलाड़ियों से ये भी कहा गया है कि मुंबई में कोरोना पॉजिटिव आने पर किसी भी खिलाड़ी के लिए अलग से चार्टर्ड फ्लाइट अरेंज नहीं की जाएगी। IPL 2021 में कोरोना के मामले सामने आने के बाद से बोर्ड पहले से ज्यादा सावधान हो चुका है।

इंग्लैंड रवाना होने से पहले 2 निगेटिव टेस्ट लाने होंगे

अधिकारी के मुताबिक, खिलाड़ियों के साथ उनके परिवार वालों की भी जांच की जाएगी। मुंबई से इंग्लैंड रवाना होने से पहले खिलाड़ियों को 2 निगेटिव टेस्ट लाने होंगे।

इससे ये पता करने की कोशिश करेंगे कि वे बबल में बिना इन्फेक्शन के आए हैं। बोर्ड ने खिलाड़ियों से प्राइवेट कार और हवाई जहाज से ट्रैवल करने के निर्देश दिए हैं।

बोर्ड ने इंग्लैंड टूर पर जाने वाले खिलाड़ियों से सिर्फ कोवीशील्ड वैक्सीन का पहला डोज लेने का ही निर्देश दिया है। बोर्ड वैक्सीन के दूसरे डोज के लिए इंग्लैंड से संपर्क में है। दरअसल, इंग्लैंड में एस्ट्रेजेनेका वैक्सीन उपलब्ध है, जो कि कोवीशील्ड का वर्जन है। बोर्ड चाहता है कि इंग्लैंड दौरे पर खिलाड़ियों को दूसरे डोज में एस्ट्रेजेनेका उपलब्ध कराया जाए।

विराट कोहली, अजिंक्य रहाणे, ईशांत शर्मा, चेतेश्वर पुजारा और उमेश यादव जैसे खिलाड़ी पहला डोज ले चुके हैं। बोर्ड ने यह भी कहा है कि अगर किसी के शहर में वैक्सीन उपलब्ध नहीं है तो वो उनसे कहा सकता है। बोर्ड उनके लिए वैक्सीन उपलब्ध कराएगा।

खेल जगत में कोरोना बना काल:इस हफ्ते 3 क्रिकेटर्स ने परिवार के सदस्यों को खोया

ओलिंपिक गोल्ड मेडलिस्ट एमके कौशिक भी नहीं रहे

नई दिल्ली। कोरोना की दूसरी लहर ने देश और दुनिया में हाहाकार मचा दिया है। खेल जगत भी इससे अछूता नहीं रहा। खिलाड़ियों के परिवार पर भी कोरोना काल बनकर टूटा है। अब तक कई क्रिकेटर और अन्य खिलाड़ी अपने परिवार और करीबियों को खो चुके हैं। इस एक हफ्ते में पीयूष चावला और चेतन सकारिया ने अपने-अपने पिता को खोया है। ओलिंपिक गोल्ड मेडलिस्ट एमके कौशिक भी नहीं रहे।

वहीं, महिला क्रिकेटर वेदा कृष्णमूर्ति ने भी अपनी बहन को खो दिया है। यदि पिछले एक साल की बात करें तो कोरोना से पूर्व क्रिकेटर चेतन चौहान (73) का भी अगस्त में निधन हुआ था। सचिन तेंदुलकर भी अपने बेस्ट फ्रेंड विजय शिरके को खो चुके हैं। 57 साल के शिरके ने 20 दिसंबर को अंतिम सांस ली थी।

कोरोना की दूसरी लहर ने देश और दुनिया में हाहाकार मचा दिया है। खेल जगत भी इससे अछूता नहीं रहा। खिलाड़ियों के परिवार पर भी कोरोना काल बनकर टूटा है। अब तक कई क्रिकेटर और अन्य खिलाड़ी अपने परिवार और करीबियों को खो चुके हैं। इस एक हफ्ते में पीयूष चावला और चेतन सकारिया ने अपने-अपने पिता को खोया है। ओलिंपिक गोल्ड मेडलिस्ट एमके कौशिक भी नहीं रहे।

वहीं, महिला क्रिकेटर वेदा कृष्णमूर्ति ने भी अपनी बहन को खो दिया है। यदि पिछले एक साल की बात करें तो कोरोना से पूर्व क्रिकेटर चेतन चौहान (73) का भी अगस्त में निधन हुआ था। सचिन तेंदुलकर भी अपने बेस्ट फ्रेंड विजय शिरके को खो चुके हैं। 57 साल के शिरके ने 20 दिसंबर को अंतिम सांस ली थी।

महिला क्रिकेटर वेदा के परिवार पर कोरोना की दोहरी मार पड़ी है। उनकी 45 साल की बहन वत्सला का कोरोना से बुधवार को निधन हो गया। इससे दो हफ्ते पहले ही कोरोना की वजह से वेदा की मां चेलुवम्बा देवी का निधन हुआ। मां के निधन की जानकारी उन्होंने 24 अप्रैल को सोशल मीडिया के जरिए दी थी।

अब तक 48 वनडे और 76 टी-20 खेल चुकीं वेदा

ऑलराउंडर वेदा ने अब तक 48 वनडे में 25.90 की औसत से 829 रन बनाए और 66 विकेट लिए हैं। उन्होंने 76 टी-20 इंटरनेशनल खेले, जिसमें 18.61 की औसत से 875 रन बनाए हैं। इस दौरान उन्होंने 12 विकेट भी चटकाए हैं। वेदा ने पिछला मैच मार्च 2020 में वुमन्स टी-20 वर्ल्ड कप का फाइनल खेला था। मेलबर्न में खेले गए फाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 85 रन से शिकस्त दी थी।

चीन का रॉकेट हिंद महासागर में गिरा: मालदीव के पास गिरे इस रॉकेट से दहशत में वॉर्नर, कहा- सुबह साढ़े 5 बजे जोरदार धमाके से नींद खुली

नई दिल्ली। चीन का एक अनियंत्रित रॉकेट लॉन्ग मार्च-क्का मलबा मालदीव के पास हिंद महासागर में गिरा। वायुमंडल में दाखिल होने के बाद इसका अधिकतर हिस्सा जलकर खाक हो गया था। इस हादसे से मालदीव में क्वारैंटाइन ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर डेविड वॉर्नर दहशत में आ गए थे। उन्होंने द ऑस्ट्रेलियन को दिए बयान में कहा कि सुबह 5:30 पर हमें एक जोरदार धमाका सुनाई दिया और हम डर गए। इससे हमारी नींद भी खुल गई।

रॉकेट क्रैश से खौफ में ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी

वॉर्नर ने कहा- एक्सपर्ट बताते हैं कि यह धमाका वायुमंडल में दरार पड़ने का था। इसकी वजह से ही आवाज सुनाई दी। इसका रॉकेट के गिरने से कोई लेना देना नहीं था। रविवार को कई लोगों ने कॉमेट की तरह किसी चीज को महासागर की तरफ बढ़ते देखा था। वॉर्नर के साथ 37 ऑस्ट्रेलियान प्लेयर्स, स्टाफ और अंपायर्स फिलहाल मालदीव में क्वारैंटाइन पीरियड बिता रहे हैं। दरअसल, चीनी रॉकेट लॉन्ग मार्च-क्के दक्षिणपूर्वी अमेरिका, मेक्सिको, मध्य अमेरिका, करेबियन, पेरू, इक्वाडोर कोलंबिया, वेनेजुएला, दक्षिण यूरोप, उत्तर या मध्य अफ्रीका, मध्य पूर्व, दक्षिण भारत या ऑस्ट्रेलिया में गिरने की संभावना जताई जा रही थी। पर इसका मलबा मालदीव के पास गिरा।

चीन पर लगे लापरवाही के आरोप

चीन का यह रॉकेट 100 फीट लंबा है। इसका वजन 21 टन है। लॉन्ग मार्च 5बी रॉकेट को 29 अप्रैल को चीन के हाइनान द्वीप से लॉन्च किया था। यह चीन के इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन के प्रमुख मॉड्यूल को पृथ्वी के निचली कक्षा की ओर ले जा रहा था। रॉकेट का अधिकतर हिस्सा वातावरण में घुसने के साथ ही जलकर राख हो गया। अनियंत्रित होकर पृथ्वी पर गिरे इस रॉकेट को लेकर चीन पर लापरवाही के आरोप भी लगे।

टेनिस: तीन माह बाद कोर्ट पर उतरेंगी सेरेना

लंदन। तेईस बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन सेरेना विलियम्स करीब तीन माह बाद कोर्ट पर वापसी के लिए तैयार है। वह सोमवार से शुरू हुए इटालियन ओपन से मैदान पर उतरेंगी।

पहले दौर में बाई पाने वाली 39 वर्षीय सेरेना का सामना नादिया पोडोरोस्का और लौरा सीगमुंड के बीच होने वाले मुकाबले की विजेता से होगा। सेरेना चार बार यह खिताब जीत चुकी हैं। आखिरी बार वह यहां 2016 में चैंपियन बनी थी। यहां एक और ट्रॉफी उन्हें क्रिस एवर्ट के सर्वाधिक पांच खिताब जीतने के रिकॉर्ड की बराबरी दिला देगी।

दिए थे संन्यास के संकेत

फरवरी में मेलबर्न में ऑस्ट्रेलियन ओपन के सेमीफाइनल में जापानी खिलाड़ी नाओमी ओसाका से मिली हार के बाद सेरेना के भावनात्मक इशारे को संन्यास लेने का संकेत समझा गया था। हालांकि यह दिग्गज अमेरिकी खिलाड़ी तब से मार्गरेट कोर्ट के रिकॉर्ड 24वें ग्रैंड स्लैम खिताब की बराबरी करने के लिए कड़ा अभ्यास कर रही है। इटली ओपन में शानदार प्रदर्शन कर सेरेना की निगाह फ्रेंच ओपन पर है। इसके लिए वह अपने कोच पैट्रिक मौरातोग्लोयू की देखरेख में क्ले कोर्ट पर अभ्यास कर रही हैं।

होगा रिकॉर्ड मैच

सेरेना का यह इटली में 54वां मैच होगा और वह यहां सर्वाधिक मैच खेलने वाली महिला खिलाड़ी बन जाएंगी। वह स्पेन की कोंचिता मार्टिनेज (53)को पीछे छोड़ देंगी। अभी यह रिकॉर्ड संयुक्त रूप से इन दोनों के नाम है। यहां सर्वाधिक 45 जीत का रिकॉर्ड भी सेरेना के नाम ही है।

बिजी शेडयूल की वजह से NOC मिलना मुश्किल; बटलर-स्टोक्स समेत 10 से ज्यादा प्लेयर्स नहीं खेलेंगे

नई दिल्ली। IPL का दूसरा फेज शुरू होने से पहले ही भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड और IPL गवर्निंग काउंसिल का बड़ा झटका लगा है। इंग्लैंड के डायरेक्टर ऑफ क्रिकेट एश्ले जाइल्स ने कहा है कि बिजी शेड्यूल की वजह से इंग्लिश प्लेयर्स 2021 सीजन के बाकी बचे 31 मैचों में हिस्सा नहीं लेंगे। इससे कोलकाता नाइट राइडर्स, राजस्थान रॉयल्स, सनराइजर्स हैदराबाद और चेन्नई सुपर किंग्स जैसी टीम को बड़ा झटका लगेगा। जाइल्स ने कहा कि बिजी शेड्यूल की वजह से किसी भी खिलाड़ी को नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकट मिलना मुश्किल है।

आने वाले 3-4 महीने इंग्लैंड का बिजी शेड्यूल

IPL के बचे हुए मैचों को सितंबर में पूरा करने को लेकर चर्चा चल रही है। जाइल्स ने ESPN क्रिकइन्फो को बताया कि IPL 2021 सीजन में खेलने के लिए 10 से ज्यादा खिलाड़ियों को न्यूजीलैंड के खिलाफ होने वाली टेस्ट सीरीज छोड़ने की अनुमति दी थी। पर अब ढुक्क के बचे हुए मैचों के लिए ऐसा संभव नहीं होगा। इंग्लैंड टीम को आने वाले 3-4 महीनों में कई देशों का दौरा करना है। जून में न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज के बाद इंग्लिश टीम श्रीलंका के खिलाफ वनडे सीरीज खेलेगी। 4 अगस्त से 14 सितंबर तक इंग्लैंड को भारत के खिलाफ 5 टेस्ट खेलने हैं।। इसके बाद एशेज और टी-20 वर्ल्ड कप है। ऐसे में टॉप स्टोक्स और जोफ्रा आर्चर शामिल हैं। आर्चर और स्टोक्स चोटिल थे। पर टूर्नामेंट पोस्टपोन होने की वजह से वे सितंबर में वापसी कर सकते थे।

वहीं, हैदराबाद को शानदार फॉर्म में चल रहे जॉनी बेयरस्टो के न खेलने से भी काफी नुकसान

खिलाड़ियों को ICC के बड़े टूर्नामेंट के लिए फिट रखना जरूरी है। हम चाहेंगे कि इन्हें चोटिल होने से बचाया जा सके।

कौन-कौन सी टीम को नुकसान होगा?

इंग्लिश प्लेयर्स के न खेलने से सबसे ज्यादा नुकसान राजस्थान को होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि टीम में 3 इंग्लिश प्लेयर्स हैं और तीनों टीम के लिए अहम हैं। इसमें जोस बटलर, बेन स्टोक्स और जोफ्रा आर्चर शामिल हैं। आर्चर और स्टोक्स चोटिल थे। पर टूर्नामेंट पोस्टपोन होने की वजह से वे सितंबर में वापसी कर सकते थे।

वहीं, हैदराबाद को शानदार फॉर्म में चल रहे जॉनी बेयरस्टो के न खेलने से भी काफी नुकसान होगा। चेन्नई की बैटिंग और बॉलिंग दोनों डिपार्टमेंट की जान रहे सैम करन के न होने से टीम को नुकसान उठाना होगा। उन्होंने पहले हाफ में अच्छा खेल दिखाया था। वहीं, KKR के कप्तान ओएन मोर्गन भी नहीं रहेंगे। ऐसे में टीम की कप्तानी कौन करेगा, ये देखने वाली बात होगी। इसके अलावा टॉम करन , डेविड मलान और जेसन रॉय के न रहने से भी इन टीमों को नुकसान होगा।

श्रीलंका दौरे के लिए अलग टीम:धवन-शॉ ओपनिंग कर सकते हैं, सूर्यकुमार-पांडे पर मिडल ऑर्डर की जिम्मेदारी; द्रविड़ बतौर कोच टीम के साथ दौरे पर जा सकते हैं

लंदन। भारतीय टीम लिमिटेड ओवर की सीरीज खेलने के लिए जुलाई में श्रीलंका दौरे पर जाएगी। विराट कोहली, रोहित शर्मा और जसप्रीत बुमराह जैसे दिग्गज खिलाड़ी टीम के हिस्सा नहीं होंगे। क्योंकि भारतीय सीनियर पुरुष टीम इंग्लैंड के साथ होने वाली पांच टेस्ट मैचों की सीरीज की तैयारी के लिए ICC वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल के बाद वहीं रूक जाएगी।

टेस्ट चैम्पियनशिप का फाइनल 18 से 22 जून के बीच इंग्लैंड के साउथैम्पटन में होना है। फाइनल में भारतीय टीम न्यूजीलैंड से भिड़ेगी। ऐसे में BCCI अध्यक्ष ने साफ कर दिया है कि श्रीलंका दौरे पर लिमिटेड ओवर के लिए अलग टीम जाएगी और इस टीम में इंग्लैंड दौरे पर गई टीम के सदस्य शामिल नहीं होंगे।

द्रविड़ और नेशनल क्रिकेट अकेडमी के सपोर्टिंग स्टाफ टीम के साथ जाएगा

टीम के साथ बतौर कोच राहुल द्रविड़ जा सकते हैं। अन्य सपोर्टिंग स्टाफ में नेशनल क्रिकेट अकेडमी के सदस्य जाएंगे।

रोहित की उपस्थिति में धवन और शॉ कर सकते हैं ओपनिंग

रोहित की गैरमौजूदगी में धवन के साथ पृथ्वी शॉ ओपनिंग कर सकते हैं। धवन और शॉ ने IPL-14 वें सीजन में दिल्ली कैपिटल्स को बेहतर शुरुआत दी। शॉ ने IPL-14 वें सीजन के 8 मैचों में 38.50 की औसत से 308 रन बनाए हैं, जिसमें तीन हाफ सेंचुरी भी शामिल हैं। वहीं शिखर धवन ने भी 54.80 की औसत से 380 रन बनाए हैं, जिनमें 3 अर्ध शतक भी शामिल है।

मनीष पांडे और सूर्यकुमार पर होगा मिडल ऑर्डर की जिम्मेदारी

मनीष पांडे और सूर्यकुमार यादव पर मिडल ऑर्डर की जिम्मेदारी होगी। पांडे ने IPLके 14 वें सीजन में 48.25 की औसत से 193 रन बनाए हैं।

वहीं सूर्यकुमार यादव ने इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज में अपनी प्रतिभा का परिचय दे चुके हैं। IPLमें इनका प्रदर्शन बेहतर रहा। उन्होंने 7 मैचों में 24.71 की औसत से 173 रन बनाए हैं। ऐसे में उम्मीद है कि यादव को श्रीलंका में लिमिटेड ओवर की सीरीज में मौका मिल सकता है।

देवदत्त पडिक्कल और चेतन सकारिया को IPLमें बेहतर प्रदर्शन का ईनाम मिल सकता है

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बल्लेबाज देवदत्त पडिक्कल और राजस्थान रॉयल्स के तेज गेंदबाज चेतन सकारिया को बेहतर प्रदर्शन का ईनाम मिल सकता है। इन दोनों को श्रीलंका दौरे के लिए शामिल किया जा सकता है। पडिक्कल ने IPLके 6 मैचों में 39 की औसत से 195 रन बनाए। उन्होंने एक शतक भी जमाया। चेतन सकारिया ने 7 मैचों में 8.22 की इकोनॉमी रेट से 7 विकेट लिए हैं।

तीन वनडे और इतने ही टी-20 खेलने हैं

श्रीलंका दौरे पर भारत को तीन वनडे और इतने ही टी-20 मैचों की सीरीज खेलनी है। सभी मैच कोलंबो में खेले जाएंगे। पहला वनडे 13 जुलाई को दूसरा 16 और तीसरा वनडे 19 जुलाई को है। वहीं 22 जुलाई से टी-20 के मैच खेले जाएंगे। 24 जुलाई को दूसरा टी-20 मैच होगा और 27 जुलाई को आखिरी मैच खेला जाएगा।